पौष माह, कृष्ण पक्ष 21 वर्ष, अंक 7 पृष्ठ 8 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज **शनिवार 08 जनवरी 2022** विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

जासूसी कांडः विपक्ष ने सरकार को घेरा

भारत सरकार ने 2017 में इजराइल से खरीदा था पेगासस स्पाईवेयर, 2 बिलियन डॉलर की डिफेंस डील का हिस्सा था: रिपोर्ट, पेगासस स्पाईवेयर पर चुप्पी साध कर अपना अपराध स्वीकार कर रही है केंद्र सरकार: वाम दल

नई दिल्ली

भारत सरकार ने 2017 में इजराइली कंपनी एनएसए ग्रुप से जासूसी सॉफ्टवेयर पेगासस खरीदा था। इस सॉफ्टवेयर को पांच साल पहले की गई 2 अरब डॉलर (करीब 15 हजार करोड़ रुपए) की डिफेंस डील में खरीदा गया था। इसी डिफेंस डील में भारत ने एक मिसाइल सिस्टम और कुछ हथियार भी खरीदे थे। इस बात का खुलासा एक अमेरिकी रिपोर्ट में हुआ है। हालांकि मोदी सरकार पेगासस जासूसी सॉफ्टवेयर के इस्तेमाल से लगातार इनकार करती रही है। न तो कभी भारत और न ही इजराइल ने ये बात मानी है कि उन्होंने पेगासस को लेकर डील की थी। सालभर की लंबी जांच के बाद बताया कि, अमेरिकी जांच एजेंसी फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन ने भी यह सॉफ्टवेयर खरीदा था। एफबीआई ने घरेलू निगरानी के लिए सालों तक इसकी टेस्टिंग भी की, लेकिन पिछले साल इसका इस्तेमाल नहीं करने का फैसला किया।

दुनियाभर में स्पाइवेयर का इस्तेमाल किया गयाः रिपोर्ट में बताया गया है कि कैसे दुनियाभर में इस स्पाइवेयर का इस्तेमाल किया गया। मेक्सिको सरकार ने पत्रकारों और विरोधियों के खिलाफ, तो सऊदी ने शाही परिवार के आलोचक रहे पत्रकार जमाल खशोगी और उनके सहयोगियों के खिलाफ इसका इस्तेमाल किया। इजराइली रक्षा मंत्रालय ने पोलैंड, हंगरी और भारत जैसे कई देशों में पेगासस के इस्तेमाल की मंजूरी दी थी।

डिफेंस डील के जरिए मोदी सरकार पेगासस लाईः जुलाई 2017 में नरेंद्र मोदी इजराइल जाने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री बने। उनका संदेश साफ था कि भारत अब फिलिस्तीन को लेकर अपने रुख में बदलाव कर रहा है और इजराइल से दोस्ती बढ़ा रहा है। उस समय इजराइल में बेंजामिन नेतन्याहू प्रधानमंत्री थे। इस दौरान दोनों देशों ने लगभग 15 हजार करोड़ रुपए की वेपन और इंटेलिजेंस गियर डील की। इस डील में मिसाइल सिस्टम के साथ-साथ पेगासस भी शामिल था। इसके कुछ महीनों बाद, नेतन्याहू ने भारत का दौरा किया और जून 2019 में, भारत ने संयुक्त राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक परिषद में इजराइल के समर्थन में वोट किया। ये वोट फिलिस्तीनी मानवाधिकार संगठन को ऑब्जर्वर का दर्जा देने के विरोध में था।

2019 में एफबीआई की बिल्डिंग में इन्स्टॉल किया पेगासस: जून 2019 में, तीन इजराइली कंप्यूटर इंजीनियर न्यू जर्सी में एफबीआई के ऑफिस में पहुंचे। एक रूम में उन्होंने दर्जनों कंप्यूटर सर्वर को अनपैक किया और रैक में जमाया। इसके बाद इंजीनियर्स ने तेल अवीव के हर्जलिया में ठरड ग्रुप के हेडक्वार्टर में अपने बॉस को कई फोन किए और टेस्टिंग शुरू की। एफबीआई ने एनएसए के प्रमुख जासूसी टूल पेगासस का एक वर्जन खरीदा था। लगभग एक दशक से, इजरायली फर्म दुनिया भर में कानून-प्रवर्तन और खुफिया एजेंसियों को सब्सक्रिप्शन के आधार पर अपना निगरानी सॉफ्टवेयर बेच रही थी। कंपनी का दावा था कि जो ये सॉफ्टवेयर कर सकता है उसे कोई और नहीं कर सकता। इसके जरिए किसी भी स्मार्टफोन के एन्क्रिप्टेड कम्युनिकेशन को क्रैक किया जा सकता है। अमेरिका ने कई सालों तक

टेस्टिंग के बाद पेगासस का उपयोग बंद करने का फैसला किया।

जुलाई 2021 में हुआ था भंडाफोड़

मीडिया समूहों के एक ग्लोबल ग्रुप ने जुलाई 2021 में यह खुलासा किया था कि दुनिया भर की कई सरकारों ने विरोधियों और पत्रकारों की जासूसी करने के लिए स्पाइवेयर का इस्तेमाल किया था। भारत में जिन लोगों जासूसी की गई थी उनमें कांग्रेस नेता राहुल गांधी, राजनीतिक रणनीतिकार प्रशांत किशोर, तत्कालीन चुनाव आयुक्त अशोक लवासा के साथ 40 से ज्यादा पत्रकारों के नाम शामिल थे।

पेगासस क्या है?

पेगासस एक स्पाइवेयर है। स्पाइवेयर यानी जासूसी या निगरानी के लिए इस्तेमाल होने वाला सॉफ्टवेयर। इसके जरिए किसी फोन को हैक किया जा सकता है। हैक करने के बाद उस फोन का कैमरा, माइक, मैसेजेस और कॉल्स समेत तमाम जानकारी हैकर के पास चली जाती है। इस स्पाइवेयर को इजराइली कंपनी ठरड ग्रुप ने बनाया है।

'सुप्रीम कोर्ट ने पेगासस मामले पर बनाई थी कमेटी'

रिपोर्ट में दावा किया था कि भारत सरकार ने 2017 से 2019 के दौरान करीब 300 भारतीयों की जासूसी की। सरकार ने पेगासस स्पायवेयर की मदद से पत्रकार, वकील, सामाजिक कार्यकर्ता, विपक्ष के नेता और बिजनेसमैन के फोन हैक किए थे।

२पेगासस, इजराइल की साइबर सिक्योरिटी कंपनी ठरड का स्पायवेयर है। इसका खुलासा द गार्जियन और वाशिंगटन पोस्ट जैसे 16 मीडिया ऑर्गनाइजेशन की एक संयुक्त रिपोर्ट में भी किया गया था। इसके रिपोर्ट के बाद सरकार के खिलाफ कई लोगों ने कोर्ट में याचिका लगाई थी। याचिका दायर होने के बाद 17 अगस्त को कोर्ट ने केंद्र को इस मामले में नोटिस जारी किया था। कोर्ट के नोटिस देने के बाद केंद्र ने कहा कि वो सारी जानकारी एक एक्सपर्ट कमेटी के सामने रखने को तैयार है। राष्ट्रीय सुरक्षा को देखते हुए वो इसे कोर्ट के सामने पब्लिक नहीं कर सकता है। अक्टूबर में सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस एनवी रमन्ना

न्यूयॉर्क टाइम्स को केंद्रीय मंत्री ने बताया 'सुपारी मीडिया'

नई दिल्ली- केंद्रीय मंत्री जनरल वीके सिंह ने शनिवार को 'दि न्यूयॉर्क टाइम्स' को 'सुपारी मीडिया' की संज्ञा दे डाली। उन्होंने यह बात इसकी एक रिपोर्ट को लेकर कही जिसमें दावा किया गया है कि भारत सरकार ने साल 2017 में इस्राइल के साथ एक सौदे के तहत पेगासस स्पाईवेयर खरीदा था। अमेरिका के दैनिक समाचार पत्र दि न्यूयॉर्क टाइम्स (एनवाईटी) की इस रिपोर्ट के अनुसार भारत और इस्राइल के बीच परिष्कृत हथियारों और खुफिया उपकरणों के लिए साल 2017 में हुए लगभग दो अरब डॉलर के सौदे के केंद्र में इस्राइली स्पाईवेयर पेगासस और एक मिसाइल प्रणाली थी। 'जाने-माने 'सुपारी मीडिया' पर भरोसा नहीं कर सकते'- इस रिपोर्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए सड़क परिवहन एवं राजमार्ग एवं नागरिक उड्डयन के लिए राज्य मंत्री जनरल वीके सिंह ने ट्विटर पर लिखा, 'क्या आप एनवाईटी पर भरोसा कर सकते हैं? वो जाने-माने 'सुपारी मीडिया' हैं।

मोदी सरकार ने किया देशद्रोहः राहुल गांधी

नई दिल्ली

जासूसी के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले इजराइली स्पाइवेयर पेगासस पर खुलासे से मोदी सरकार एक बार फिर सवालों में घेरे में है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि मोदी सरकार ने 2017 में एक डिफेंस डील में मिसाइल सिस्टम के साथ इसे खरीदा था। ये डील 2 बिलियन डॉलर की थी। सरकार पर निशाना साधते हुए कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा, 'मोदी सरकार ने हमारे लोकतंत्र की प्राथमिक संस्थाओं, राज नेताओं व जनता की जासूसी करने के लिए पेगासस खरीदा था। फोन टैप करके सत्ता पक्ष, विपक्ष, सेना, न्यायपालिका सब को निशाना बनाया है। ये देशद्रोह है। मोदी सरकार ने देशद्रोह किया है।' राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, 'मोदी सरकार ने भारत के दुश्मनों की तरह काम क्यों किया और भारतीय नागरिकों के खिलाफ पेगासस का इस्तेमाल किया?'

के नेतृत्व वाली पीठ ने जासूसी के आरोपों की जांच के लिए तीन सदस्यों की कमेटी बनाई थी। कमेटी में अध्यक्ष जस्टिस आरवी रवींद्रन के साथ पूर्व आईपीएस अफसर आलोक जोशी और डॉ. संदीप ओबेरॉय शामिल रहे।

देवबंद में शाह ने किया डोर-टू-डोर कैंपेन पहले गृहमंत्री जो फतवों के शहर आए थे

मुजफ्फरनगर/सहारनपुर

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह शनिवार को वेस्ट यूपी के दौरे के दौरान देवबंद पहुंचे। शाह पहले गृहमंत्री हैं, जो देवबंद पहुंचे। लेकिन यहां महज 17 मिनट रहकर वे रवाना हो गए। दोपहर 2.32 बजे शाह यहां पहुंचे और 2.49 बजे रवाना हो गए। शाह के समर्थन में देवबंद की सड़कों पर भारी भीड़ उमड़ी। शाह डोर-टू-डोर प्रचार करने निकले तो थे, लेकिन भारी भीड़ के कारण उनका प्रचार अभियान बीच में ही रोक दिया गया। वहां से शाह सीधे

सहारनपुर के लिए रवाना हो गए। बता दें कि देवबंद में इस्लामी मरकज की शीर्ष संस्था दारुल उलूम है। इससे पहले गृहमंत्री अमित शाह मुजफ्फरनगर पहुंचे। कार्यकर्ताओं से संवाद में किसान नेता चौधरी चरण सिंह और चौधरी महेंद्र सिंह को याद किया। फिर अमित शाह ने 2013 में हुए मुजफ्फरनगर दंगे का जिक्र किया। कहा, 'मैंने यहां दंगों की वेदना को जानता हूं। आरोप लगाने वाले पीड़ित बन गए और पीड़ित आरोपी बन गए। आज भी दंगों की पीड़ा नहीं भूला हूं। सवाल पूछा- क्या आप लोग दंगों को भूल गए हैं? जवाब मिला- नहीं..नहीं..। फिर शाह ने कहा कि यदि उनकी सरकार आई तो फिर माफियाओं का राज होगा।'

योगी ने चुन चुनकर माफियाओं को साफ कियाः शाह ने कहा, 'यूपी से हमने वादा किया था कि हम यूपी को माफियाओं से मुक्त करेंगे। सलामत बनाएंगे। माता-बहनों से छेड़खानी नहीं होगी। योगी आदित्यनाथ ने पूरे यूपी से चुन-चुनकर माफियाओं को साफ किया। अखिलेश आते थे तो गुंडे माफियाओं की बात करते थे। मायावती आती थी तो जाति की बात करती थीं। अखिलेश को ललकारा कि मैं आंकड़े लेकर आया हूं। अखिलेश कहते हैं कि कानून-व्यवस्था खराब है। मैं कहता हूं कि योगी सरकार में पुरानी सरकार से 70 फीसदी अपराध कम हुए हैं।'

प्रदेश से भाजपा का राजनीतिक पलायन तयः अखिलेश

गाजियाबाद

उत्तर प्रदेश की जनता मन बना चुकी है, यहां से कोई सरप्राइज नहीं आने वाला है। असली सरप्राइज गुजरात से आएगा, यूपी के बाद चुनाव वहां हैं, गाजियाबाद में सपा-रालोद गठबंधन की संयुक्त पत्रकार वार्ता के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के तेवर भाजपा पर तल्ख दिखे। उन्होंने कहा कि प्रदेश से भाजपा का राजनीतिक पलायन तय है। रालोद प्रमुख जयंत चौधरी ने प्रदेश के विकास में पश्चिम यूपी का बड़ा योगदान बताया। पत्रकार वार्ता के

दौरान दोनों नेताओं ने लाल पोटली लेकर अन्न संकल्प लिया। डोर टू डोर प्रचार करने वालों को जनता लाल सिलिंडर दिखाए। अखिलेश यादव ने किसान आंदोलन पर भाजपा सरकार को घेरते हुए कहा कि कृषि बिल लागू करने और हटाने तक भाजपा किसानों को इसके फायदे या हटाने की वजह समझ नहीं पाई।

सोनिया गांधी ने नियुक्त किए ऑब्जर्वर

चंडीगढ़: पंजाब कांग्रेस में मची आपसी खींचतान से चिंतित सोनिया गांधी ने ऑब्जर्वर नियुक्त किए हैं। इनके सहारे सोनिया सीधे चुनाव की तैयारियों पर नजर रखेंगी। इसके बाद पंजाब चुनाव के लिए कांग्रेस हाईकमान सिर्फ प्रदेश के नेताओं पर निर्भर नहीं रहेगा।

4 नेताओं की हुई नियुक्तिः मालवा, माझा और दोआबा में ऑब्जर्वर लगा दिए गए हैं। ये यहां के नेताओं की गतिविधियों पर नजर रख उसकी रिपोर्ट कांग्रेस हाईकमान को भेजेंगे। इस संबंध में कांग्रेस की तरफ से 4 नेताओं की नियुक्ति कर दी गई है।

हर गतिविधि पर रहेगी नजरः कांग्रेस की तरफ से इससे पहले जिला कमेटियों के बराबर ऑब्जर्वर लगाए जा चुके हैं। जो जिला स्तर पर कांग्रेसियों की कारगुजारी पर नजर रख रही हैं। यह ऑब्जर्वर लगातार जिले में कांग्रेसियों को पार्टी के हक में लामबंद कर रहे हैं ताकि चुनाव में जीत हासिल हो सके।

गुजरात में विवादित पोस्ट पर युवक की हत्या

अहमदाबाद के मौलवी समेत तीन गिरफ्तार, शॉर्प शूटरों को मुहैया करवाई थी पिस्टल और 5 कारतूस

अहमदाबाद/बोटाद

धंधुका शहर में हिंदू युवक की हत्या से फैला तनाव अब गुजरात के अन्य शहरों तक पहुंचता जा रहा है। विरोध में धंधुका, बोटाद, राणपुर में तीन दिनों से बंद है। कई हिंदू संगठनों ने अहमदाबाद जिले की बावला तहसील में भी बंद का ऐलान किया। वहीं, राधनपुर में विरोध प्रदर्शन में शामिल हई हजारों लोगों की भीड़ बेकाबू हो गई तो मजबूरन पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा। सोशल मीडिया पर एक विवादित पोस्ट के चलते नाराज कट्टरपंथियों ने 25 जनवरी को

धंधुका के किशन भारवाड की दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या कर दी थी।

शब्बीर ने मौलवी से कहा था- उसको सबक सिखाना है, मुझे हथियार दोः पुलिस ने धुंधका के रहने वाले शब्बीर उर्फ साबा दादा चोपड़ा (25) और इम्तियाज उर्फ इम्तु महेबूब पठाण (27) को गिरफ्तार किया। इनसे पूछताछ के बाद अहमदाबाद के अल्पसंख्यक बहुल जमालपुर इलाके के मौलाना मोहम्मद अयूब यूसुफभाई जावरावाला को अरेस्ट किया, जो मौलवी है। पुलिस ने बताया कि शब्बीर ने ही मौलवी से कहा था कि उसको (किशन) को सबक सिखाना है, आप मेरे लिए हथियार का इंतजाम करवा दो।

हिंदू युवक ने 6 जनवरी को की थी सोशल मीडिया पर पोस्टः पुलिस के अनुसार गोली बारी में मारे गए किशनभाई बोणिया (भरवाड) ने 6 जनवरी को सोशल मीडिया पर कोई विवादित पोस्ट की थी। इसको लेकर धंधुका मुस्लिम समाज द्वारा स्थानीय थाने में शिकायत दी गई थी।

भारत ने दी अफगानिस्तान को 3 टन जीवन रक्षक दवाएं

नई दिल्लीः भारत ने मानवीय सहायता के तौर पर अफगानिस्तान को 3 टन आवश्यक जीवन रक्षक दवाओं से युक्त चिकित्सा सहायता की आपूर्ति की है। यह भारत की ओर से भेजी गई ऐसी चौथी खेप है। इसे काबुल स्थित इंदिरा गांधी अस्पताल को सौंप दिया गया है। विदेश मंत्रालय के अनुसार भारत अफगानिस्तान के लोगों के साथ अपने विशेष संबंधों को जारी रखने और मानवीय सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस प्रयास में हम पहले ही चिकित्सा सहायता के तीन शिपमेंट की आपूर्ति कर चुके हैं। इनमें अफगानिस्तान को कोविड वैक्सीन की 5 लाख खुराक और आवश्यक जीवन रक्षक दवाएं शामिल हैं। इन्हें डब्ल्यूएचओ और इंडिया गांधी चिल्ड्रेन हॉस्पिटल, काबुल को सौंप दिया गया। मंत्रालय का कहना है कि आने वाले हफ्तों में अफगानिस्तान के लोगों के लिए मानवीय सहायता के तौर पर और अधिक सामग्री की आपूर्ति की जाएगी जिसमें दवाएं और खाद्यान्न शामिल हैं।

झारखंड में 40 हजार कोरोना वैक्सीन गायब!

धनबाद

झारखंड के धनबाद में कोरोना वैक्सीन के 4 हजार वॉयल का कोविन पोर्टल पर हिसाब नहीं मिल रहा है। यानी कोवीशील्ड और कोवैक्सिन के 40 हजार डोज किसे लगे इसकी कोई जानकारी ही नहीं हैं। गायब वैक्सीन पर उस वक्त अफसरों के होश उड़ गए, जब राज्य सरकार ने वैक्सिनेटेड लोगों का डेटा मांगा। इसके बाद 40 हजार डोज की खपत दिखाने के लिए जाली एंट्री शुरू कराई गई और मरे हुए लोगों को लाभार्थी बना दिया। पता चला कि केंद्र सरकार के कोविन पोर्टल पर जाली एंट्री न पकड़ी जा सके, इसके लिए बाकायदा वर्क प्लेस सदर को वैक्सीनेशन सेंटर बनाया गया। कई डेटा ऑपरेटरों को फर्जी एंट्री का जिम्मा सौंपा गया। एंट्री के लिए कथित लाभार्थियों के

अलग-अलग पहचान पत्र का इस्तेमाल किया जा रहा है और फर्जी मोबाइल नंबर डाले जा रहे हैं। वन टाइम पासवर्ड का ऑप्शन वैकल्पिक (नॉट रिक्वायर्ड) रखा जा रहा है। रजिस्ट्रेशन के तुरंत बाद ही फर्जी लाभार्थियों का वैक्सीनेशन सर्टिफिकेट कोविन ऐप पर जारी हो रहा है।

पड़ताल में सामने आ गई गड़बड़ियांः स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों को बताया कि परिजन को बाहर जाने के लिए सर्टिफिकेट चाहिए। इस पर कर्मचारियों ने बिना पूछताछ के उस पहचान पत्र से एंट्री कर दी और सर्टिफिकेट दे दिया।

हैरानी की बात यह रही कि जिनके पहचान पत्र से सर्टिफिकेट बने, उनकी पहले ही मौत हो चुकी है। 2 घंटे बाद मृतकों का वैक्सीनेशन सर्टिफिकेट कोविन ऐप पर जारी दिखा दिया गया। कुछ को पहली डोज दिखाकर सेकंड डोज की डेट दी गई। वहीं कई को सेकंड डोज दिखाकर पहली डोज 4 महीने पहले लेने की एंट्री की गई।

कोरोनाः 24 घंटे में 2.35 लाख नए केस

नई दिल्ली

देश में शुक्रवार को 2 लाख 35 हजार 532 नए कोरोना संक्रमित मिले। इस दौरान 3.35 लाख लोग ठीक हुए, जबकि 871 लोगों की मौत हुई। इधर, कर्नाटक सरकार ने राज्य भर में कोरोना से जुड़ी पाबंदियों में ढील देने का ऐलान किया है। राज्य में नाइट कर्फ्यू 31 जनवरी से हटा लिया जाएगा। वहीं, राजधानी बेंगलुरु के सभी स्कूलों को कोविड गाइडलाइन का सख्ती से पालन करते हुए सोमवार से ऑफलाइन कक्षाएं शुरू करने की इजाजत होगी। साथ ही सिनेमा हॉल को छोड़कर होटल, बार और

पब में 50% ऑक्यूपेंसी की अनुमति दी गई है। इधर, त्रिपुरा की सरकार ने भी राज्य में प्री प्रायमरी से लेकर 12वीं तक के स्कूल और मदरसों को भी 31 जनवरी से खोलने का ऐलान किया है। इस दौरान कोरोना नियमों का सख्ती से पालन करना होगा।

खबर संक्षेप

सरायममरेज की बोलेरों सिविल लाइंस से गायब, हफ्ते भर बाद सुराग नहीं

प्रतापपुर। सरायममरेज सिंधौरा निवासी एक व्यक्ति की सिविल लाइन के आर डी पैलेस से गायब बोलेरों को खोजने में पुलिस अभी तक नाकामयाब रही है संबंधित प्रकरण को लेकर इस मामले में पुलिस द्वारा केस भी दर्ज किया गया है।सरायममरेज के सिंधौरा गांव निवासी बृजभूषण शुक्ला पुत्र उमा शंकर शुक्ला ने विगत 22 जनवरी को सिविल लाइन थाना क्षेत्र के आरडी पैलेस के समीप अपनी गाड़ी खड़ी की थी।इस दौरान बारात कार्यक्रम में भोजन करने लगे मुफीद मौका देख शातिरों ने उसकी बोलेरों पार कर दी।वापस आने पर तय स्थान पर वाहन न देख वह हतप्रभ रह गए।उपरोक्त प्रकरण को लेकर संबंधित थाने केस दर्ज कराया गया है।

रामलीला मैदान पर निर्माण कार्य कराए जाने पर ग्रामीणों ने काटा जमकर हंगामा

अखंड भारत संदेश

यूपीएसआईडीसी के अधिकारियों को सौंपा ज्ञापन, तत्काल कार्य को नहीं रोका गया तो करेंगे आंदोलन, उक्त भूमि पर बीते सन् 1928 से जारी है रामलीला का मंचन

निर्माण कार्य कराये जाने पर प्रदर्शन करते आक्रोशित ग्रामीण

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र के गणेश गंज डेरी मोड़ के समीप रामलीला मैदान पर निर्माण कार्य कराए जाने से स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश व्याप्त है। शनिवार दोपहर लगभग एक बजे सैकड़ों की संख्या में स्थानीय लोगों ने उत्तर प्रदेश औद्योगिक विकास प्राधिकरण कार्यालय पर पहुंच कर क्षेत्रीय मैनेजर प्रदीप सत्यार्थी को ज्ञापन सौंपा और निर्माण कार्य तत्काल बंद कराने की मांग की। ग्रामीणों का कहना है कि 1928 से अनवरत यहां पर रामलीला का कार्यक्रम चलता है। जिससे आसपास के कई गांव के लोगों की आस्था जुड़ी हुई है। उन्होंने रामलीला कराने के बाबत प्रशासन स्तर से लिए गए आदेशों की प्रतियां भी दिखाई। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि उनकी मांगों पर अमल नहीं किया जाएगा तो वह सड़क पर उतर कर धरना प्रदर्शन करने के लिए बाध्य हो जाएंगे। बता दें कि जिस भूमि को यूपीएसआईडीसी के आला अफसरों के द्वारा एक प्राइवेट कंपनी के संचालक को दिया गया है। उसी भूमि पर वर्षों से रामलीला मंचन का कार्यक्रम का आयोजन होता चला आ रहा है। इतना ही नहीं औद्योगिक क्षेत्र नैनी इलाके का सबसे पुराना रामलीला उक्त भूमि पर ही प्रस्तुति होती चली आ रही है। आसपास के लगभग दो दर्जन से अधिक गांवों के अलावा हजारों लोगों का आस्था का प्रतीक भी है।

शौचालय के निर्माण में महिला के साथ मारपीट, घायल

सहसों। शासन द्वारा आवंटित सरकारी शौचालय का निर्माण करा रही लाभार्थी महिला के साथ मारपीट कर महिला को घायल कर दिए। सरायइनायत थाना क्षेत्र के बभनकुइयां गांव निवासिनी गुड्डी देवी पत्नी धर्मेन्द्र कुमार का आरोप है कि वह अपने दरवाजे पर सरकारी शौंचालय का निर्माण करा रही थी। इसी बीच गांव के ही रहने वाले विपक्षियों ने वहां पहुंचकर उसका निर्माण कार्य रोकने लगे। उसने इसका विरोध किया तो विपक्षियों ने महिला के साथ जबरन मारपीट कर घायल कर दिया। भुक्तभोगी महिला ने विपक्षगंण के चार लोगों को नामजद करते हुए संबंधित थाने में तहरीर देकर उचित कार्यवाही की मांग की है। भुक्तभोगी महिला ने शुक्रवार को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एवं पुलिस महानिदेशक लखनऊ को पत्र भेजकर वि?पक्षियों के खिलाफ न्याय की गुहार लगाते हुए कार्यवाही की मांग की है।

न्यूज झरोखा

ठंड से गांव के लोग हुए बेहाल, कुछ स्थानों पर प्रशासन ने जलवाए अलावा

मेजा रोड। क्षेत्र में पिछले कई दिनों से पड़ रही कड़ाके की ठंड से लोग कराह उठे ठंड का प्रकोप इतना जबरदस्त रहा कि ठंड के चलते लोग अपने घरों से निकलना मुनासिब नहीं समझ रहे थे वही लोग बाहर निकल रहे थे जिन्हें ने बहुत जरूरी काम था नहीं तो घरों में बैठकर अलाव के सामने अपना समय व्यतीत करते रहे। वही देखा जाए तो तहसील प्रशासन से लोग अलाव जलाने के लिए बार-बार गुजारिश करते रहे लेकिन तहसील प्रशासन के कानों तक जूं नहीं रेंगी वही तीन 4 दिन से धूप खिल रही थी लोगों को राहत पहुंचा रही जिसके चलते ठंड में काफी गिरावट भी दर्ज की गई। शायद महीनों बाद तहसील प्रशासन को लोगों की चिंता हुई और वह प्रमुख चौराहों पर अलाव जलाने की व्यवस्था में जुट गया उसी क्रम में शुक्रवार शाम तहसीलदार मेजा की अगुवाई में मेजारोड बाजार के पटेल नगर चौराहे पर अलाव जलवाए वहीं कुछ लोगों ने तहसील प्रशासन के इस अलाव पर चुटकियां लेते हुए कहा कि क्या अभी तक प्रशासन खुद अलाव जलाकर बैठा रहा था अब इनकी नींद टूटी है। फिलहाल प्रशासन ने ठंड के जाते आखिरी पड़ाव पर अलाव जलाकर लोगों को मरहम लगाने का काम कर रहा।

करछना 260 विधानसभा सीट के लिए भाजपा के ईजी जगदीश सिंह यादव प्रबल दावेदार

करछना। विधानसभा 260 करछना भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी के प्रबल दावेदारी में चल रहे इंजीनियर जगदीश सिंह यादव जो कि 40 वर्षों से संघ के स्वयंसेवक हैं प्रथम वर्ष प्रशिक्षित हैं मंडल कार्यवाह का दायित्व निभा चुके हैं एवं 15 वर्षों से भारतीय जनता पार्टी समाज एवं संघ की निरंतर सेवा कर रहे हैं थोड़ा जन-जन में विश्वास पैदा किए हुए हैं पूरे यमुनापार जिले के साथ-साथ करछना विधानसभा के जन जन के दिलों में बसे हुए हैं । उनको रोकने के लिए विपक्षी भी पूरी तरह से लगे हुए हैं भैया उनको भाजपा से टिकट ना मिल पाए उनके अलावा किसी भी डमी प्रत्याशी को मिल जाए ताकि सपा का उम्मीदवार दोबारा चुनाव जीत जाए लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने भी ठान लिया है कि हमको इस बार करछना विधानसभा को और से जीतना है इसलिए जगदीश सिंह यादव के नाम पर बहुत गहन मंथन हो रहा है और उन्हीं की प्रबल संभावना है विधानसभा से प्रत्याशी बनाया जाएगा तभी भारतीय जनता पार्टी का सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास का नारा जनता के बीच अच्छा संदेश जाएगा।

बीमा कंपनियों ने सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया

जारी। प्रयागराज मे संयुक्त संघर्ष समिति के बैनर तले साधारण बीमा कंपनियों के सभी कर्मचारियो का नेशनल इंश्योरेंस कंपनी मंडलीय कार्यालय सिविल लाइन्स, प्रयागराज मे उपस्थिति होकर विरोध प्रदर्शन किया । बीमा कंपनियों के कर्मचारियों ने बताया कि सरकार के खिलाफ आर पार की लडाई लड़ने के मूड मे है । इन लोगो ने बताया कि हमारी प्रमुख मांगें इस प्रकार रही 1972 में संशोधन विधेयक को लोकसभा से पारित कराने पर रोक ,, बीमा कंपनियों के निजीकरण का विरोध ,सभी को पेंशन स्कीम 1995 का लाभ दिया जाय ,अगस्त 2017 से लम्बित वेतन पुनरीक्षण हेतु शीघ्र वार्ता शुरू की जाय जैसी मांगो को लेकर जॉइंट फोरम एसोसिएशन के बैनर तले प्रयागराज मे विशाल धरना प्रदर्शन हुआ, जिसमे प्रमुख मांगो पर अपना विचार रखते हुए सत्येन्द्र कुमार सिंह शाखा प्रबंधक ओरिएण्टल इंश्योरेंस नैनी,प्रयागराज एवं नॉर्दर्न जोन प्रेसिडेंट, जी.आई.ओ.ए.आई.ए - इंटक ने कहा की इस सरकार का इस मुद्दे पर जोरदार विरोध किया जाएगा। इस बैठक में बहुत संख्या में लोग भाग लिया जिसमे प्रमुख रुप से जितेन्द्र कुमार,सुमित कुमार , मनीष कोहली अश्वनी, आदि लोग मौजूद रहे।

वीर अमर शहीद गिरीश कुमार शुक्ल स्मारक क्रिकेट टूनार्मेंट का समापन आज

करछना। करछना क्षेत्र के भडेवरा बाजार स्थित लाल बहादुर शास्त्री इंटर कॉलेज के खेल मैदान पर पखवाड़े भर से चल रहे वीर अमर शहीद गिरीश कुमार शुक्ल स्मारक क्रिकेट टूनार्मेंट का रोमांचक फाइनल मैच व समापन रविवार को होगा । यह जानकारी प्रतियोगिता के आयोजक आशुतोष ओझा व संयोजक शिवम मिश्रा ने संयुक्त रूप से दी है। उन्होंने बताया कि समापन अवसर पर विजेता व उपविजेता टीम के प्रतिभागी खिलाड़ियों को बतौर मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा यमुनापार किसान मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष आशीष मिश्रा मुन्ना व विशिष्ट अतिथि के रूप में मां सेवा संस्थान रोकड़ी के अध्यक्ष विनायक पंडित की मौजूदगी में पुरस्कार वितरित किया जाएगा।

जहरीला चारा खाने से बकरियों की मौत

करछना। क्षेत्र के पनासा के मत्तू का पूरा मजरे से शुक्रवार को बकरियों को लेकर पास के गांव में बच्चे बकरियां चरा रहे थे।अचानक बकरियां बेहोश होकर गिरने लगी।बकरियों को चरा रहे बच्चे इसकी जानकारी घर के लोगों को दी। मत्तू का पूरा मजरा निवासी भुक्तभोगी तुलसीराम पाल डाक्टर लेकर मौके पर जहां डाक्टरों ने इलाज बताया लेकिन कुछ बकरियों को आराम मिला।लेकिन 6 बकरियां और दो बकरे की मौत मौके पर ही हो गई।तुलसीराम ने शनिवार सुबह इसकी जानकारी बसही के पशु चिकित्साधिकारी डॉ.विकास को देते हुए पोस्टमार्टम की गुहार लगाई।आशंका है कि किसी ने जहरीला पदार्थ दे दिया होगा जिससे अचानक बकरे और बकरियों की मौत हो गई।

पास्को एक्ट का वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

करछना। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रयागराज अजय कुमार द्वारा मादक पदार्थों के तस्करी पर रोक लगाने हेतु एवं समाज में शांति व्यवस्था कायम रखने हेतु चलाए जा रहे अभियान के तहत पुलिस अधीक्षक यमुनापार सौरभ दीक्षित के निर्देशन में प्रभारी निरीक्षक टीकाराम वर्मा के नेतृत्व में उप निरीक्षक कमलेश सिंह यादव व पुलिस टीम द्वारा मुकदमा अपराध पास्को एक्ट का वांछित अभियुक्त सिंटू कुमार पुत्र डेवा प्रसाद निवासी बासघाटी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

शरारती तत्वों नें पुआल मे लगाई आग, हजारो का नुकसान

करछना। क्षेत्र के सोनाई देवरी गाव निवासी हजारी प्रसाद पटेल व जितेन्द्र के पुआल मे शुक्रवार रात अचानक आग लग गई जब तक लोग आग पर काबू पाते तब तक हजारो का पुआल जलकर राख हो चुका था।भुक्तभोगी के मुताबिक लगभग 3हजार बोझ था और आशंका है कि किसी शरारतीतत्व द्वारा जानबूझकर आग लगाई गई होगी।आगजनी की इस घटना से पशुओ के लिए चारे का संकट खडा हो गया है।

फ्लैग मार्च कर शातिपूर्ण चुनाव की अपील

करछना। आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर शनिवार शाम को सीओ करछना राजेश यादव के नेतृत्व मे पुलिस बल ने करछना समेत कई प्रमुख बाजारो और तिराहे चौराहो पर पैदल भ्रमण करते हुए लोगो से शातिपूर्ण चुनाव कराने मे सहयोग की अपील की वही चुनाव आचार सहिता को लेकर भी कडाई से पालन करने पर भी मातहतो को जरूरी दिशा निर्देश दिए।साथ ही सभी से निर्भीक होकर मतदान करने का आह्वान किया।इस मौके पर प्रभारी निरीक्षक टीकाराम वर्मा सहित हल्का एसआई और पुलिस बल मौजूद रहा।

विद्यालय खोलने के लिए छाओं ने किया विरोध प्रदर्शन

सहसों। विकासखंड सहसों क्षेत्र के पन्ने उर्फ पारनडीह सम्राट चौराहा पर कक्षा आठ से लेकर इंटर कालेज के छात्रों ने सरकार की नई शिक्षा नीतियों को लेकर शांतिपूर्वक विरोध प्रदर्शन किया। रोशन कुमार ने कहा कि सरकार ने महामारी के बहाने विद्यालय को बंद करके शिक्षा के साथ खिलवाड़ कर रही है। छात्रों का कहना है कि करीब दो साल होने को हैं लगभग विद्यालय में बहुत कम ही शिक्षण कार्य हुआ जिससे विद्यार्थियों में पढ़ाई के असर को लेकर काफी निराशा है । जब से विद्यालय बन्द हैं। इस दौरान ऑनलाइन माध्यम की शिक्षा के कारण बहुत सारे छात्र - छात्राएं पढ़ाई से वंचित हो रहे हैं। विद्यार्थियों ने कहा कि विद्यार्थियों के भविष्य को देखते हुए शीघ्र विद्यालय खोलने पर सरकार विचार करे। जिससे बच्चों का भविष्य खराब न हो। प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों में एस एफ आई आशीष गौड़, आजाद यादव, अखिलेश यादव, निखिल साहू , विशाल सिंह, कौशल कुमार, अंतिम सरोज, शिक्षक अर्जुन सम्राट तथा एस एफ आई के आदि सदस्य शामिल रहे।

मारुति की टक्कर से 12 वर्षीय मासूम बच्चे की दर्दनाक मौत

कोरांव लेडियारी मार्ग पास करते समय हुआ हादसा

अखंड भारत संदेश

हादसे के बाद मृतक बच्चे घर रोते बिलखते परिजन व लोग

रत्योरा। कोरांव थाना क्षेत्र के रत्योरा बाजार के पास कोरांव लेड़ियारी मुख्यमार्ग पास करते समय एक अनियंत्रित मारुति की जोरदार टक्कर से 12 वर्षीय मासूम बच्चे की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक राजीव सिंह चौहान पुत्र चंद्रशेखर सिंह चौहान उम्र लगभग 12 वर्ष रत्योरा निवासी घर के पास सड़क पार कर रहा था। इसी दौरान एक तेज रफ्तार अनियंत्रित कार ने जोरदार टक्कर मार दी। जिससे 12 वर्षीय मासूम राजीव सिंह की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद कार चालक कार लेकर फरार हो गया। परिजनों ने मृत हुए बच्चे का दाह संस्कार कर दिया। हादसा दोपहर बाद एक बजे के आसपास का बताया जा रहा है। मृतक राजीव सिंह कक्षा तीन का छात्र था ।मृतक दो भाई और एक बहन में सबसे छोटा था। हादसे को लेकर परिवारी जनों का रो रो कर बुरा हाल है।

लोक गायक के निधन पर कलाकारों ने दी श्रद्धांजलि

फूलपुर। जनपद के अस्सी के दशक में फूलपुर क्षेत्र में बिरहा गायकी में अपनी अलग पहचान बनाने वाले फूलपुर फरीदाबाद निवासी बसंत लाल यादव 85 का हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। निधन की सूचना मिलते ही स्थानीय कलाकारों में शोक की लहर दौड़ गई। भारतीय लोक कला महासंघ के जिला अध्यक्ष गुलाब चंद्र मौर्य,प्रदेश अध्यक्ष कमलेश चंद्र यादव व राष्ट्रीय अध्यक्ष अतुल यदुवंशी ने गहरा शोक प्रकट किया। इस मौके पर दीपचंद, ननकू राम, गुरुदीन, रामचंद्र तूफानी, राम अभिलाष विश्वकर्मा, राजकुमार, लालचंद, मेवालाल, इंद्रजीत, तुलसीराम यादव, राजनाथ, अशोक कुमार सहित सैकड़ों गायक कलाकार उपस्थित रहे।

मास्क वितरण करते कर्मचारी

हलीना चैरिटेबल सोसायटी ने किया मास्क वितरण, दी कोरोना से बचाव की जानकारी

नैनी। नैनी के ग्राम पचखरा में सेंट जूड्स स्कूल एण्ड कॉलेज, चिल्ला मार्ग, जसरा प्रांगण में हेलिना चैरेटिबल एण्ड डेवलपमेन्ट सोसाईटी, नैनी, प्रयागराज द्वारा हर वर्ष की भाँति प्रोग्राम कोआर्डिनेटर राजेश अरोड़ा के नेतृत्व में कोरोना से बचाव की जानकारी देने के साथ-साथ निशुल्क मास्क का वितरण किया गया। गणतंत्र दिवस के अवसर पर मिष्ठान वितरण भी किया गया। कार्यक्रम के संयोजक ने उपस्थित ग्रामीणों को कोविड-19 के बढ़ते प्रभाव से बचने के तरीकों के बारे में बताया कि मास्क पहने तथा सामाजिक दूरी बनाये रखें एवं हाथों को साबुन से धोते रहें एवं ठंड से अपने एवं अपने बच्चों को बचायें। सर्दी जुकाम या बुखार होने पर तुरन्त डॉक्टर से सलाह लें। पौष्टिक खाना खायें एवं साफ-साफाई पर विशेष ध्यान रखें। इस मौके पर डा0 परवीन चरन, ग्राम प्रधान श्री लल्लू सिंह , बी0डी0सी0 सदस्य, ग्राम पंचायत सदस्य पन्ना लाल गुप्ता, राजेश गुप्ता, हरी ओम, भूरे लाल आदि ग्रामीण उपस्थित थे।

शनिवार को कैंडिल मार्च निकालकर दोषियों को सजा की मांग करते आक्रोशित लोग

बेटी हम शर्मिंदा हैं तेरे कातिल जिंदा है

अखंड भारत संदेश

जंघई। सरायममरेज थानांतर्गत नेदुला गांव की बेटी जो कि प्रयागराज में रहकर शिक्षा ग्रहण कर रही थी विगत दिनों उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म करके दर्दनाक हत्या कर दी गई थी। हत्यारों के प्रति आम जनमानस में आक्रोश व्याप्त है जिसके क्रम में शनिवार को पिलखिनी प्रधान बच्चन मिश्रा द्वारा जंघई बाईपास से चौका तक सैकड़ों लोगों के साथ कैंडिल मार्च निकाला गया जिसमें आक्रोशित लोगों ने कातिलों को कठोर सजा एवं परिवार को मुआवजा देने की मांग किया।इस अवसर पर ब्लाक प्रमुख प्रतापपुर शैलेश यादव, कांग्रेस नेता संजय तिवारी, मधुसूदन पांडेय, कमलेश पांडेय, अंकुर पांडेय, संजय पांडेय, अनिल पांडेय, विजय मिश्रा आनंद मिश्रा, रोहित ब्राह्मण, कृष्ण कुमार तिवारी, आदर्श पाठक, अंकित मिश्रा, आशीष मिश्रा, विवेक मिश्रा, अंबुज ठाकुर, अरविंद दुबे, सोनू पांडेय, आनंद पांडेय, सत्यम तिवारी सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

विधायक बनकर क्षेत्र का करूंगा चौहमुखी विकास : रामदेव निडर

अखंड भारत संदेश

सपा प्रत्याशी के प्रथम आगमन पर हुआ जोरदार स्वागत

क्षेत्र में भ्रमण करते सपा नेता

कोरांव। समाजवादी पार्टी के घोषित प्रत्याशी रामदेव निडर के प्रथम नगर आगमन पर सपाइयों ने जोरदार स्वागत किया और बैठक कर चुनाव जीतने की रणनीति तैयार किया इस मौके पर सपाइयों के अलावा अपना दल कृष्णा गुट जनवादी पार्टी समेत अन्य गठबंधन के कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक को संबोधित करते हुए सपा प्रत्याशी ने कहा कि अगर क्षेत्र की जनता ने मुझ पर भरोसा जताया तो क्षेत्र का चहुंमुखी विकास करूंगा और लोगों के मान और सम्मान के लिए सड़क से लेकर सदन तक संघर्ष करने का कार्य करूंगा सपा नेता ने कहा कि भाजपा के कार्यकाल में बिजली पानी शिक्षा और चिकित्सा की व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है और नौजवान रोजगार मांग रहे हैं तो भाजपा सरकार के राज में बदले में लाठियां दे रहे हैं अगर इतने पर भी देश और प्रदेश के लोग जागरूक नहीं हुए तो वह दिन दूर नहीं जब देश पूरी तरह पूंजीपतियों का गुलाम हो जाएगा। बैठक में उपस्थित सोमदत्त सिंह पटेल विधानसभा प्रभारी एवं जिला पंचायत सदस्य राजेश पांडे चर्चित किसान नेता राम जी प्रजापति राष्ट्रीय उपाध्यक्ष समाजवादी पार्टी बाबा साहब वाहिनी किताब अली प्रदेश सचिव अल्पसंख्यक सभा आदि ने संयुक्त रूप से कहा कि प्रदेश में जब तक समाजवादी सरकार नहीं बनेगी तब तक प्रदेश का विकास नहीं होगा और किसानों नौजवानों की आवाज को प्रशासन अपनी दमनकारी नीतियों से दबाता ही रहेगा।

इस मौके पर मुख्य रूप से ओमप्रकाश कुशवाहा मेहताब खान नगर अध्यक्ष समाजवादी पार्टी दिनेश पटेल ब्लॉक अध्यक्ष समाजवादी पार्टी मंगला कोल रामानुज यादव कृष्णा कोल अनीता शुक्ला अंजली कोल विपुल दुबे विनय तिवारी राजाराम पटेल प्रकाश पटेल मासूक अली विजय केसरी बंसराज यादव अखिलेश यादव आशीष मिश्रा विधानसभा उपाध्यक्ष यादवेंद्र यादव इसराइल अली नौशाद अंसारी सफात अली चंद्रशेखर कोल अवध नारायण पटेल अनुपा आदिवासी बृज लाल प्रजापति रामधनी गौड़ शिवप्रसाद सितारे हिंद आदि लोग उपस्थित रहे।

आग लगने से जला गरीब का आशियाना, गृहस्थी खाक

फूलपुर। आधी रात को अज्ञात कारणों से गरीब के आशियाने में लगी आग से जहां गृहस्थी जलकर खाक कर हो गई। वही छप्पर के बने घर में रखे पशुओं के लिए भूसा भी जलकर नष्ट हो गया । ग्रामीणों ने आग की लपटें देख पानी से किसी तरह आग पर काबू पाया तब तक सारी गृहस्थी जलकर खाक हो चुकी थी। फूलपुर कोतवाली क्षेत्र के इफको पुलिस चौकी अंतर्गत चक अब्दुल करीम उर्फ पूरे भुलई गांव निवासी फूलचंद यादव के कच्चे छप्परनुमा घर में आग लगने से गृहस्थी खाक हो गई। भुक्तभोगी ने बताया कि उसके पास मात्र एक ही कमरा है,जिसमें वह बच्चों के साथ सो गया वही बाहर छप्पर में उसकी मां जय राजी देवी सो रही थी। बगल घास फूस के बने घर में पशुओं के चारा सहित पूरी गृहस्थी रखकर अपना जीवन यापन करता था। शनिवार की भोर लगी अज्ञात कारणों से आग ने उसकी सारी गृहस्थी जलकर खाक हो गई।

कृष्ण सुदामा की मित्रता से लेनी चाहिए सीख : आचार्य ओम नारायण तिवारी

अखंड भारत संदेश

भक्तों को कथा का रसपान कराते ब्यास आचार्य ओम नारायण तिवारी

फूलपुर। फूलपुर के कोडापुर गांव में चल रही संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा के विश्राम दिवस पर भगवान श्री कृष्ण और सुदामा की मित्रता सुनकर उपस्थित श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए तथा भगवान श्री कृष्ण के जयकारे लगाने लगे। कथा व्यास आचार्य ओम नारायण तिवारी ने श्रीमद् भागवत कथा का रसपान कराते हुए कहा भगवान श्री कृष्ण और सुदामा की मित्रता पूरे संसार में समाज के हर व्यक्ति के लिए अनुकरणीय है। कथा व्यास ने कहा कि सुदामा को भगवान श्री कृष्ण के घर पहुंचने पर द्वारपालो द्वारा रोक दिया गया। सुदामा के अनुनय करने पर इसकी सूचना भगवान श्रीकृष्ण तक पहुंचाई गई। सूचना प्राप्त होते ही भगवान श्रीकृष्ण नंगे पांव दौड़ते हुए अपने पुराने परम मित्र सुदामा के पास पहुंचते हैं और आह्लादित होकर मिलते हैं। कथा व्यास ने सजीव वर्णन करते हुए कहा ऐसा मिलन जीव और परमात्मा का मिलन था ।भगवान श्री कृष्ण सुदामा की दीन दशा को देखकर आंखों से अश्रु धारा निकल पड़ी। उन्होंने अपने आंसुओं की धारा से ही सुदामा के पाव पखारे,आदर किया और बिना मांगे ही सब कुछ दे दिया। जो आज की सामाजिक परिवेश में सभी के लिए अनुकरणीय है। कथा व्यास ने कहा समाज के हर व्यक्ति को श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण अवश्य करना चाहिए। इसके श्रवण मात्र से ही मनुष्य के पाप धुल जाते हैं। सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है तथा मन मस्तिष्क भक्ति मय हो जाता है। जो मनुष्य के अंतिम समय में मोक्ष की प्राप्ति का साधन बनता है। श्रीमद् भागवत कथा सामाजिक परिवेश के साथ भक्ति साधना की ओर ले जाने के लिए प्रेरित करता है।कथा विश्राम पर मुख्य यजमान महेश कुमार दुबे दिनेश कुमार दुबे तथा उमेश कुमार दुबे ने व्यासपीठ की आरती उतारी तत्पश्चात प्रसाद का वितरण हुआ।

खबर संक्षेप

असिस्टेंट प्रोफेसर के 23 पदों पर भर्ती के लिए इंटरव्यू सात से

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) ने चिकित्सा शिक्षा विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर के 23 पदों पर सीधी भर्ती के लिए इंटरव्यू की तिथि घोषित कर दी है। इनमें असिस्टेंट प्रोफेसर फामाकौलॉजी के 17 और असिस्टेंट प्रोफेसर बायोकेमिस्ट्री के छह पद शामिल हैं। इसके अलावा कई अन्य सीधी भर्तियों के लिए भी इंटरव्यू के कार्यक्रम जारी किए गए हैं।चिकित्सा शिक्षा विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर फामाकौलॉजी के 17 पदों पर भर्ती के लिए इंटरव्यू सात एवं आठ फरवरी को उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग में आयोजित किए जाएंगे, जिसकी विस्तृत सूचना आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। चिकित्सा शिक्षा विभाग में ही असिस्टेंट प्रोफेसर बायोकेमेस्ट्री के छह पदों पर सीधी भर्ती के लिए साक्षात्कार सात फरवरी को होगा।चिकित्सा शिक्षा (आयुर्वेद) विभाग के तहत प्रवक्ता रोग निदान के दो पदों पर भर्ती के लिए आठ फरवरी को इंटरव्यू आयोजित किया जाएगा, जिसके लिए अभ्यर्थियों को सुबह दस बजे आयोग में बुलाया गया है।

अन्तराज्यीय गैंग के 3 सदस्य चढ़े पुलिस के हत्थे

अखंड भारत संदेश

अनएक्टिवेटेड सिम का इस्तेमाल करके लोगों का खजाना खाली कर देते थे, इन सभी का अपना-अपना काम बंटा हुआ था, आरोपियों में एक वोडाफोन में कार्यरत था तो दूसरा आरोपी पेटीएम में काम कर चुका था

पुलिस के गिरफ्त में शातिर अपराधी

प्रयागराज। पुलिस ने अन्तराज्यीय गैंग के ऐसे गिरोह के सदस्यों को दबोचा जो अनएक्टिवेटेड सिम का इस्तेमाल करके लोगों का खजाना खाली कर देते थे। इन सभी का अपना--अपना काम बंटा हुआ था। आरोपियों में एक वोडाफोन में कार्यरत था तो दूसरा आरोपी पेटीएम में काम कर चुका था ' एसएसपी अजय कुमार ने बताया कि मुखबिर से सूचना मिलने पर साइबर सेल व कैण्ट पुलिस ने धर दबोचा। इनके पास से भारी संख्या में सिम कार्ड मिले हैं, जिससे इनके सदस्य लोगों के अकाउंट में सेंध लगाते थे।

इकबाल अहमद जो वोडाफोन कंपनी में काम करता था, इसके द्वारा अपने डिस्ट्रीब्यूटर से अनएक्टिवेटेड सिम कार्ड 5 रुपये प्रति सिम की दर से प्राप्त करता है और इनको फर्जी केवाईसी जिसमें कूटरचित तैयार किए गए आधारकार्डों का इस्तेमाल करके उसे एक्टिवेट करके अपने दूसरे सहयोगी कलीम अहमद को सौ से डेढ़ सौ रुपये प्रति सिम की दर से बेचता है।

कलीश अहमद अपने साथी कलीम निवासी लखीमपुर खीरी जिसकी मोबाइल की दुकान है, उसके सहयोग से इन एक्टिवेटेड सिम में फर्जी केवाईसी के द्वारा पेटीएम एक्टिवेट करता है और इन पेटीएम एक्टिवेटेड सिम को अपने तीसरे साथी शेलेश यादव को 300--350 रुपये में बेच देता था। तीसरा आरोपी शैलेश यादव जो कि पेटीएम में नौकरी कर चुका है वह इन पेटीएम एक्टिवेटेड सिमों को 700--750 रुपये प्रति सिम की दर से विभिन्न राज्यों जैसे पश्चिम बंगाल, बिहार, गुजरात, झारखंड आदि में मौजूद अपने गैंग साइबर अपराध करने वाले अपने साथियों को कोरियर के माध्यम से सप्लाई कर देता है।उक्त फर्जी सिम का प्रयोग साइबर अपराधियों द्वारा साइबर फ्राड करके उनके खाते से गाढ़ी कमाई का धन अपने फर्जी नाम पते से खुलवाये गए खातों व पेटीएम में ट्रांसफर करके उनके खातों से गाढ़ी कमायी का धन अपने खाते में ट्रांसफर कर लेते थे। इनके पास से 5 हजार से अधिक सिम कार्ड सप्लाई करने की पुष्टि हुई है। किए गए गिरफ्तार अपराधियों में इकबाल अहमद पुत्र असगर अली निवासी ककर पिट ?टा जनपद लखीमपुर खीरी,कलीश अहमद पुत्र सोहराब अली सीतापुर, शैलेश यादव पुत्र शाहिल यादव थाना गुडम्बा लखनऊ।

कोरांव में युवक की हत्या सिर कटी लाश बरामद

नामजद मुलजिम गिरफतार, एक नाबालिग भी हिरासत में

अखंड भारत संदेश

कोरांव। थाना पुलिस कोरांव अंतर्गत ग्राम कोस्फरा में दो दिन पूर्व गायब एक बीस वर्षीय युवक अनिल धयकार पुत्र अमरबहादुर की गर्दन काटी गई लाश तालाब के किनारे पुआल में छिपाई हुई मिलने से हड़कंप मच गया है।

बता दें ग्राम कोस्फ्रा कला में अनिल नमक युवक की हत्या कर दी गई है। उसे दो दिन से लापता होने पर परिजन खोज रहे थे। ग्राम वासियों द्वारा प्राप्त जानकारी अनुसार मृतक युवक का इसी साल विवाह भी होने वाला था। घटना के आसपास के लोगों की बातों पर यकीन कि या जाए तो उसकी हत्या ग्राम के ही स्वजातीय बाबू लाल उर्फ राजन पुत्र रामनाथ धइकार के विरुद्ध परिजनों ने केस दर्ज करने की तहरीर दी गई है। उसके साथ एक नाबालिग बालक को भी पुलिस ने उठाया बताया जा रहा है।

चर्चा है कि युवक की हत्या आशनाई में की गई है। आरोपी की पत्नी से मृतक के अवैध संबंध की चर्चा आम थी। जिस कारण हत्या हुई। पुलिस ने लाश को अपने कब्जे में ले लिया है। समाचार लिखे जाने तक शव को पुलिस ने कब्जे में ले कर पोमा के लिए भेज रही थी। गांव में मृतक परिजनों का रो रो कर बुरा हाल था। और कुछ यह भी चर्चा कर रहे थे कि युवक की हरकतों से क्षुब्ध हो कर नामजद आरोपी कई बार उक्त युवक को चेतावनियां दे चुका था। आरोपी के साथ सदैव साथ दिखने वाला एक बालक करीब तेरह वर्षीय अमन धईकार को भी पुलिस ने पूंछ तांछ के लिए ले गई है।

मतदान सबसे बड़ा दान : डॉ. आभा त्रिपाठी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। लोकतंत्र में मतदान है सबसे बड़ा दान मतदान से बड़ा कोई दान नहीं है उत्तर प्रदेश के आगामी विधानसभा चुनाव 2022 में महिलाएं बढ़-चढ़कर करें मतदान तभी अपनी मनचाही सरकार मनचाहा प्रति जनप्रतिनिधि का चुनाव कर सकते हैं मतदान न करने से महापर्व के तौर पर लोकतंत्र के चुनाव में अपनी सहभागिता सुनिश्चित नहीं कर पाएंगे रह जाएंगी वंचित क्योंकि आज महिलाएं अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रही हैं क्योंकि महिलाओं के साथ आजादी के लगभग 74 साल बीत जाने के बावजूद भी भेदभाव की मानसिकता से काम किया जा रहा है अभी समय है अपने परिवार में अपने अगल-बगल अपने गांव में अपने मोहल्ले में नैतिक जिम्मेदारी से मतदान सूची में अपना और अपने परिवार लोगों का नाम अंकित कराएं और जन-जन को जागरूक करके महा पर्व मैं मतदान करके एक शिक्षित समाजसेवी राष्ट्रहित में सरकार बनाएं उक्त बातें एक वार्ता के दौरान डॉ आभा त्रिपाठी असिस्टेंट प्रोफेसर रसायन विज्ञान उन्होंने कहा कि प्रदेश की महिलाएं अपने सुरक्षा व स्वाभिमान की रक्षा चाहते हैं तो मतदान करके एक ऐसे सरकार की स्थापना कराएं जो महिलाओं के समाज के लिए सुरक्षा और सम्मान के लिए कटिबद्ध हो अब हम लोगों की नैतिक जिम्मेदारी है कि समाज में आज जिन महिलाओं के साथ जाति जुल्म अत्याचार बलात्कार हत्या गैंगरेप जैसी घटनाएं हो रही हैं का डटकर मुकाबला करने की जरूरत है घरों से बाहर निकले और अपने हक के लिए संघर्ष कर रहे संघर्ष के बिना समाज में बराबरी की हिस्सेदारी नहीं मिल सकती है आज किसी भी क्षेत्र में महिलाएं पुरुषों से पीछे नहीं है बल्कि परिवार से लेकर समाज की रचना करने वह नेतृत्व करने तक अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रही हैं किसी भी देश व प्रदेश की खुशहाली तब होती है जब महिलाओं का सम्मान स्वाभिमान सुरक्षित है आज महिलाएं ने आप को असुरक्षित महसूस कर रही हैं क्योंकि महिलाओं के साथ आजादी के लगभग 74 साल बीत जाने के बावजूद भी भेदभाव की मानसिकता से काम किया जा रहा है जो गलत है महिलाएं भी देश की आजादी में अपने प्राणों का बलिदान दिया तब जाकर देश को आजादी मिली महिलाओं को भी राजनीति में पुरुषों के बराबर हिस्सेदारी मिलनी चाहिए क्योंकि संख्या के आधार पर योग्यता के आधार पर महिलाएं पुरुषों से पीछे नहीं है हमें राजनीति में भी बराबरी का हक चाहिए महिलाओं के साथ हो रहे बलात्कार गैंगरेप की घटनाओं में सरकारों को चाहिए कि दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए तथा 4 या 6 माह के अंदर मुकदमों का निस्तारण कर दंडित किया जाए तभी महिलाओं का सम्मान सुरक्षित रहेगा।

नहीं हो पाई कांग्रेस नेता हार्दिक पटेल की सभा पुलिस ने रोका

प्रयागराज। प्रशासन ने सरदार पटेल संस्थान परिसर में शनिवार को घोषित कांग्रेस की सभा नहीं होने दी। आयोजन स्थल पर पहुंचे हार्दिक पटेल, वी. श्रीनिवासन समेत अन्य नेताओं को पुलिस ने गेट पर ही रोक दिया। इससे नाराज कार्यकताओं की पुलिस से झड़प भी हुई। हार्दिक ने सरकार की शह पर कार्यक्रम की अनुमति नहीं देने का आरोप लगाया।हार्दिक पटेल का कहना था कि प्रशासन से आयोजन की अनुमति मांगी गई थी, लेकिन फोर्स न होने के आधार पर कार्यक्रम पर रोक लगा दी गई। नाराजगी जताते हुए हार्दिक ने कहा कि वह मोदी और अमित शाह का विरोध करते हुए गुजरात से यहाँ आए हैं, इस तरह की कार्रवाई से वह पीछे नहीं हटेंगे।युवाओं के मुद्दे पर संघर्ष जारी रहेगा। हार्दिक ने भर्ती विधान घोषणा का विमोचन किया। इसके बाद वह छोटा बघाड़ा भी गए लेकिन, पुलिस ने बीच में ही रोक दिया, इसके बाद हार्दिक पार्टी कार्यालय पहुंचे और युवाओं से वार्ता की।

पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित वैज्ञानिक डॉ. अजय सोनकर का किया गया भव्य स्वागत

अखंड भारत संदेश

नैनी। पद्मश्री पुरुस्कार से सम्मानित होकर नैनी प्रयागराज एवं संपूर्ण देश का नाम रोशन करने वाले वैज्ञानिक डॉ.अजय सोनकर का भारतीय जनता पार्टी के जनप्रतिनिधियों एवं संगठन के कार्य कताओं के द्वारा सम्मानित कर शुभकामनाएं प्रेषित की गई। विज्ञान और अभियांत्रिकी के क्षेत्र में पद्मश्री पुरस्कार के लिए चयनित प्रयागराज के वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार सोनकर की शोध यात्रा आसान नहीं थी। प्रयागराज में छोटे-छोटे शोध के बाद डॉ. सोनकर अंडमान निकोबार द्वीप समूह गए। वहीं प्रयोगशाला स्थापित की। डॉ. सोनकर स्थाई तौर पर वर्ष 2003 से वहां शोध करने लगे। 2004 में आई सूनामी ने डॉ. सोनकर की प्रयोगशाला को तबाह कर दिया। सूनामी के पहले डॉ. सोनकर काली मोती बनाकर दुनियाभर में मशहूर हो चुके थे। डॉ. सोनकर ने बताया कि इस तबाही के बाद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। प्रयोगशाला को फिर से खड़ा कर दिया।

नैनी की लैब में शोध कर रहे थे, तभी मिली पद्मश्री पुरस्कार की सूचना

वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार सोनकर का कर्मक्षेत्र अंडमान निकोबार द्वीप समूह है, लेकिन पद्मश्री मिलने की सूचना उनको नैनी स्थित प्रयोगशाला में मिली। डॉ. अजय मंगलवार शाम अपनी प्रयोगशाला में बैठे थे कि अंडमान निकोबार प्रशासन की ओर से उनको पद्मश्री के लिए चुने जाने की सूचना दी। डॉ. सोनकर ने बताया कि पहले तो विश्वास नहीं हुआ, लेकिन जब रात में सूची भेजी गई तो भरोसा हुआ।

अंगवस्त्र भेंट कर किया गया स्वागत

प्रयागराज की सांसद डॉ रीता बहुगुणा जोशी, कैबिनेट मंत्री नंदगोपाल गुप्ता नंदी, भाजपा महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी ,मंडल अध्यक्ष दिलीप केसरवानी, महामंत्री पं: रामजी मिश्र एवं अन्य कार्यकर्तगानों ने डॉ: अजय सोनकर को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

रिटायर शिक्षक की बाथरूम में मिली लाश, हड़कंप

प्रयागराज। नीमसराय कॉलोनी में रहने वाले एक बुजुर्ग की मौत हो गई और किसी को पता भी नहीं चला। शुक्रवार रात मोहल्ले वालों की सूचना पर पहुंची धूमनगंज पुलिस ने छानबीन की और शव को निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस को शक है कि बीमारी से उनकी जान चली गई। नीमसराय कॉलोनी में 70 वर्षीय कुंजीलाल सोनकर अकेले रहते थे। शिक्षक पद से रिटायर होने के बाद भी वह अकेले ही खाना बनाते और घर का सारा काम कर रहे थे। उन्होंने शादी नहीं की थी। उनकी बहनों की कौशांबी में शादी हुई है। कुंजीलाल सोनकर रोज आसपास के लोगों से मिलते थे और पड़ोसी ही उनकी देखरेख करते रहे। गुरुवार के बाद से वह घर से नहीं निकले। शुक्रवार शाम को मोहल्ले वालों को कुछ शक हुआ। उन्होंने पुलिस को सूचना दी। किचन की खिड़की तोड़कर पुलिस घुसी तो बाथरूम में उनका शव पड़ा दिखा। शरीर पर कोई चोट के निशान नहीं मिले। पुलिस की सूचना पर कौशांबी से उनके रिश्तेदार भी पहुंच गए। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

अधिवक्ता पर हमला करने वाले तीन लोगों पर मुकदमा

प्रयागराज। सिविल लाइंस में एक अधिवक्ता पर रॉड से हमला करने वाले तीन आरोपियों के खिलाफ सिविल लाइन्स पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट के अधिवक्ता अमित प्रताप सिंह ने पुलिस को बताया कि उन्होंने जनहित याचिका दाखिल की है। इसके कारण कई लोग उसके दुश्मन बन गए हैं। साजिश के तहत उन्हें फंसाने और मारने की कोशिश की जा रही है। 27 जनवरी को इलाहाबाद हाईकोर्ट के लिए निकल रहे थे। रास्ते में प्रधान डाकघर के पास सत्य प्रकाश, अनूप और विनोद ने घेर लिया। रॉड से मार कर उनका एक हाथ तोड़ दिया। शोर मचाने पर वहां लोगों की भीड़ जुटने लगी तो हमलावर भाग निकले। आरोपियों में कोई कुशीनगर तो कोई पश्चिमी उत्तर प्रदेश का रहने वाला है। सिविल लाइंस पुलिस मुकदमा दर्ज करके जांच कर रही है।

उमा प्रियंका ने किया समलैंगिक विवाह

नाराज परिजन दोनों को लेकर पहुंचे थाने

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। मऊआइमा थाना क्षेत्र की एक छात्रा ने अपनी भाभी की छोटी बहन से शादी कर ली। जब वह अपने जीवन साथी को लेने के लिए उसके घर पहुंची तो बवाल हो गया परिजन दोनों को पकड़कर थाने ले गए, लेकिन पुलिस ने यह कहते हुए मामले से पल्ला झाड़ लिया कि दोनों बालिग हैं। कुछ भी कर सकती हैं। परिजनों ने दोनों की थाने के गेट पर हल्का दरोगा के सामने पिटाई भी की, लेकिन पुलिस मूकदर्शक बनी रही। मऊआइमा थाना क्षेत्र के खमपुर निवासी उमा साहू (22) पुत्री जोखूलाल साहू अपने भाभी की बहन बहरिया के राजेपुर गजेहड़ी गांव निवासी प्रियंका साहू (19) पुत्री दीपचंद साहू से मंदिर में समलैंगिक विवाह कर लिया। उमा साहू ने बताया कि उनके दोनों के बीच करीब एक साल से प्रेम प्रसंग चल रहा है। उन्होंने मंदिर में एक दूसरे को जीवनसाथी चुन लिया है।

परिजनों ने थाने में की दोनों की पिटाई

शनिवार को उमा साहू प्रियंका को लेने उसके घर पहुंची और बताया कि दोनों पति.पत्नी के रूप में एक दूसरे से शादी कर लिया है। अब प्रियंका को वह अपने घर ले जाएगी। यह सुनते ही प्रियंका के परिजन भड़क गए और दोनों को मारा पीटा, लेकिन इसके बावजूद प्रियंका और उमा दोनों एक साथ रहने पर अड़ी रहीं तो परिजन दोनों के लेकर बहरिया थाने पहुंचे और सारी स्थिति से अवगत कराया।बहरिया प्रभारी निरीक्षक रवि प्रकाश ने बात सुनने के बाद यह कहते हुए मामले से पल्ला झाड़ लिया कि दोनों वयस्क हैं और कुछ भी कर सकती हैं। इसमें पुलिस कुछ नहीं करेगी, अगर वह उसके साथ जाना चाहती है तो जा सकती है, लेकिन प्रियंका के परिजन नहीं माने और थानें में ही दोनों को पीटने लगे। मौके पर हल्का दरोगा संजय कुमार यादव और कुछ पुलिसकर्मी मौजूद थे, लेकिन मूकदर्शक बनकर देखते रहे।

आज एसडीएम के यहां गुहार लगाएगी उमा

उमा ने बताया कि वह सोमवार को एसडीएम के सामने जाएगी और प्रियंका को घर ले जाने के लिए आवेदन पत्र प्रस्तुत करेगी। समलैंगिक विवाह की चर्चा पूरे क्षेत्र में चल रही है। उमा गुप्ता बीएससी फाइनल की छात्रा है और प्रियंका साहू भी बीएससी फाइनल की छात्रा हैं। दोनों ने बताया कि उन्होंने खूब सोच समझकर यह निर्णय लिया है। बताया जाता है कि प्रियंका की शादी एक वर्ष पहले हो चुकी थी, लेकिन उमा के साथ उसकी ऐसी नजदीकियां बढ़ीं कि अपने पति को भी तलाक दे दिया और दोनों जीवन साथी बनकर रहने का निर्णय लिया।प्रियंका के परिजनों का कहना है कि यह नासमझी में लिया गया फैसला है। जो आगे चलकर टिकने वाला नहीं है, इसलिए अभी से ही दोनों को अलग कर देना होगा। इधर परिजन इस समलैंगिक विवाह से संतुष्ट नहीं हैं। उधर दोनों साथ रहने और मरने की कसम खा रही हैं। दो लड़कियों का आपस में विवाह करने का मामला थाने पर आया था। दोनों बालिग हैं, इसमें पुलिस कुछ नहीं कर सकती। चाहे तो वह समलैंगिक विवाह कर सकती हैं। इसके लिए उनको एसडीएम के पास जाकर अपना प्रमाण पत्र बनवाने को कहा गया है।

- रवि प्रकाश, प्रभारी निरीक्षक, बहरिया।

प्रेमिका ने ही दोस्तों से कराया था राहुल जायसवाल का कत्ल

गला दबाकर की गई थी हत्या, मुट्ठीगंज की एक युवती का भी नाम आया सामने

प्रयागराज। मुट्ठीगंज में ठेकेदार राहुल जायसवाल (20) के कत्ल मामले का सनसनीखेज खुलासा हुआ है। पुलिस ने उसकी प्रेमिका व हत्या में नामजद दोस्त को गिरफ्तार कर लिया है। अफसरों का दावा है कि प्रेमिका ने ही धोखे से ठेकेदार को बुलाया और फिर दोस्तों की मदद से उसका कत्ल करवा दिया। दोनों को जेल भेज दिया गया है जबकि नामजद तीन अन्य आरोपियों की तलाश की जा रही है।सालिकगंज मंडी निवासी राहुल यादव का शव 24 जनवरी की सुबह थरवई में मनसैता नदी के पास मिला था। पोस्टमार्टम में खुलासा हुआ कि गला दबाकर उसकी हत्या की गई है। बड़े भाई रजत ने हिमांशु पंडा, कल्लू पंडा, गोलू पंडा व सलमान पर केस दर्ज कराया। पुलिस के मुताबिक, जांच पड़ताल के दौरान आरोपियों की सीडीआर खंगाली गई तो मुट्ठीगंज निवासी एक युवती का भी नाम सामने आया। पुलिस उसके घर पहुंची तो वह परिवार समेत गायब मिली। जिसके बाद से उसकी तलाश की जा रही थी। दो दिन पहले उसे व मामले में नामजद गोलू को हिरासत में ले लिया गया। सख्ती से पूछताछ में दोनों ने जो खुलासा किया, उसे सुनकर सभी स्तब्ध रह गए।

युवती से ठेकेदार के थे पुराने ताल्लुकात

पुलिस के मुताबिक, पकड़ी गई युवती ने बताया कि मृतक से उसके पुराने संबंध थे, लेकिन वह उसे तरह-तरह से परेशान करता था। यही नहीं कई बार रुपये भी छीन लिया करता था। मामले में नामजद आरोपियों सलमान, कल्लू और हिमांशु से मृतका का करीब 20 दिन पहले विवाद हुआ था। इस बात की जानकारी मिलने केबाद उसने एक अन्य नामजद आरोपी गोलू के साथ मिलकर मृतक को रास्ते से हटाने की साजिश रची।उसने धोखे से मिलने के लिए राहुल को बुलाया और पीछे से उसके दोस्तों को भी बुला लिया। इसके बाद दोस्त बहाने से राहुल को गाड़ी से थरवई ले गए जहां गला दबाकर हत्या करने के बाद शव फेंककर भाग आए। मुट्ठीगंज थानाध्यक्ष राजेश मौर्य का कहना है कि गोलू युवती को लेकर राहुल से खुन्नस रखता था और इसीलिए वह हत्या में शामिल हुआ। दोनों को जेल भेज दिया गया है।

माघ मेले में लगी धर्म संसद, कई मुद्दों पर हुआ मंथन

अखंड भारत संदेश

माघमेले में धर्मसंसद में मंच पर बैठे साधु संत

प्रयागराज। यूपी विधानसभा चुनाव के बीच शनिवार को माघ मेला संगम तट के महावीर मार्ग पर संत सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस संत सम्मेलन में शिरकत करने के लिए देश और प्रदेश के अलग-अलग स्थानों से साधु-संतों का जमावड़ा लगा है। संत सम्मेलन में जुटे संतों का कहना है इस्लामिक जिहाद के खिलाफ हिंदू समाज को एकजुट करना होना। साथ ही संत समाज का कहना है कि हिंदुओं को सुरक्षित रखने के लिए योगी को लाना जरूरी है।

हिंदुओं की जनसंख्या घटना चिंता का विषय

धर्म संसद की अध्यक्षता कर रहे स्वामी प्रबोधनंद और संचालन समिति के सदस्य स्वामी सागर सिंधुराज ने कहा कि जिस प्रकार हिंदुओं की संख्या तेजी से घट रही है, वह चिंता का विषय है। धर्म संसद में ये प्रमुख मुद्दा है। जिस पर हम संत समाज के लोग मंथन कर रहे हैं। स्वामी सागर सिंधु ने कहा कि हमारा किसी जाति-धर्म विशेष से विरोध नहीं है। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट के सदस्य जगद्गुरु स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती हैं।

कोतवाल ने की चौकीदारों के साथ बैठक, दिए जरुरी सुझाव

अखंड भारत संदेश

चौकीदारों को सुझाव देते कोतवाल

मेजा रोड। मेजा कोतवाली मे शनिवार को चौकीदारों के साथ बैठक कर कोतवाल ने उन्हें उनके दायित्वों के बारे में बताया। साथ ही चुनाव के संबंध में चुनाव आयोग द्वारा जारी दिशानिर्देश के सभी बिंदुओं के बारे में जानकारी दी। कोतवाल मेजा तुषारदत्त त्यागी ने चौकीदारों से कहा कि संदिग्ध व्यक्ति के बारे में सूचना थाने पर भेजें। चुनाव में चौकीदारों की महत्वपूर्ण भूमिका को बताते हुए क्षेत्र के बाहर से आकर निवास करने वाले लोगों पर नजर बनाए रखें। संदिग्ध व्यक्तियों को देखते ही पुलिस को तत्काल सूचित करें। उन्होंने कहा कि चौकीदार ग्रामीण स्तर पर पुलिस का एक अंग हैं। ऐसे में आप सब अपने दायित्वों की जिम्मेदारी को कर्तव्य पूर्ण निर्वाहन करते रहें। समय-समय पर उचित जानकारी थाने पर व उपलब्ध कराते रहें। इस मौके पर चौकीदार चैतुराम, दुर्गा प्रसाद, हंसराज, होरी लाल, छब्बू लाल, महेंद्र नाथ, रामचरन, मानिक चंद्र व मेजा कोतवाली के दरोगा व सिपाही मौजूद रहे।

कोविड प्रोटोकाल व आचार संहिता का कड़ाई से अनुपालन अनिवार्य : जिला निर्वाचन अधिकारी

उम्मीदवार के साथ दो अन्य व्यक्ति ही नामांकन कक्ष में करेगें प्रवेश

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डा0 नितिन बंसल ने जनपद के समस्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों, निर्वाचन लड़ने वाले उम्मीदवारों को सूचित करते हुये कहा कि भारत निर्वाचन आयोग नई दिल्ली ने जनपद की समस्त सातों विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों यथा 244-रामपुरखास, 245-बाबागंज (अ0जा0), 246-कुण्डा, 247-विश्वनाथगंज, 248-प्रतापगढ़, 249-पट्टी एवं 250-रानीगंज में पांचवे चरण में मतदान कराये जाने हेतु कार्यक्रम घोषित किया गया है। उन्होने बताया है कि निर्वाचन की अधिसूचना 01 फरवरी, नाम निर्देशन हेतु अन्तिम दिनांक 08 फरवरी, नाम निर्देशनों की जांच 09 फरवरी, नाम वापसी 11 फरवरी, मतदान 27 फरवरी, मतगणना 10 मार्च होगी तथा 12 मार्च के पूर्व निर्वाचन पूर्ण कर लिया जायेगा।

निर्वाचन की समस्त प्रक्रियाएं एक फरवरी से सम्पादितः जिला निर्वाचन अधिकारी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डा0 नितिन बंसल ने बताया है कि विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 हेतु नामांकन पत्रों की प्राप्ति, जांच, वापसी एवं प्रतीक आवंटन सम्बन्धी समस्त प्रक्रिया जनपद प्रतापगढ़ में अवस्थित क्षेत्रीय ग्राम्य विकास संस्थान अफीम कोठी में 01 फरवरी 2022 से सम्पादित किये जायेगें। उन्होंने बताया कि क्षेत्रीय ग्राम्य विकास संस्थान अफीम कोठी में विधानसभा क्षेत्र 244-रामपुरखास हेतु कक्ष संख्या-01, 245-बाबागंज (अ0जा0) हेतु कक्ष संख्या-02, 246-कुण्डा हेतु कक्ष संख्या-03, 247-विश्वनाथगंज हेतु कक्ष संख्या-04, 248-प्रतापगढ़ हेतु कक्ष संख्या-05, 249-पट्टी हेतु कक्ष संख्या-06 तथा 250 रानीगंज हेतु कक्ष संख्या-07 में नामांकन पत्रों की प्राप्ति, जांच, वापसी एवं प्रतीक आवंटन सम्बन्धी समस्त प्रक्रियायें सम्पन्न होगी।

घोषित कार्यक्रम के अनुसार नामांकन स्थल क्षेत्रीय ग्राम्य विकास संस्थान अफीम कोठी में विधानसभा क्षेत्र रामपुरखास हेतु कक्ष संख्या 01, बाबागंज (अ0जा0) हेतु कक्ष संख्या 02, कुण्डा हेतु कक्ष संख्या 03, विश्वनाथगंज हेतु कक्ष संख्या 04, प्रतापगढ़ हेतु कक्ष संख्या 05, पट्टी हेतु कक्ष संख्या 06 तथा रानीगंज हेतु कक्ष संख्या 07 निर्धारित है जिसमें नामांकन पत्रों की प्राप्ति, जांच, वापसी एवं प्रतीक आवंटन सम्बन्धी समस्त प्रक्रिया सम्पन्न होगी। उन्होने बताया है कि आवंटित कक्ष में पांचवे चरण के लिये दिनांक 01 फरवरी से 08 फरवरी तक पूर्वान्ह 11 बजे से अपरान्ह 3 बजे के मध्य रिटर्निंग आफिसर द्वारा नामांकन प्राप्त किये जायेगें। निर्धारित कक्ष में दिनांक 09 फरवरी को जांच, दिनांक 11 फरवरी को वापसी तथा 11 फरवरी को ही चुनाव चिन्ह रिटर्निंग आफिसर द्वारा दिये जायेगें। आयोग के निदेर्शानुसार उम्मीदवारों के साथ आने वाले वाहनों एवं काफिले को 100 मीटर की परिधि के भीतर आने की अनुमति नहीं होगी। नामांकन कक्ष में आयोग के निदेर्शानुसार उम्मीदवार के साथ 02 अन्य व्यक्ति (उम्मीदवार सहित कुल 03 कोविड प्रोटोकॉल के दृष्टिगत) ही नामांकन कक्ष में प्रवेश कर सकते है। आदेश के अनुपालन में उम्मीदवार के साथ नियत व्यक्तियों को ही रिटर्निंग आफिसर के कक्ष में प्रवेश कराया जायेगा। समस्त उम्मीदवारों को कोविड प्रोटोकाल व आदर्श आचार संहिता का कड़ाई से अनुपालन किया जाना अनिवार्य होगा।

लखनऊ से बनेगा दिव्यांगजनों का रियायती टिकट कार्ड

वर्ष 2021 में 1600 दिव्यांग हो चुके हैं लाभान्वित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। ट्रेनों में रियायती टिकट पर यात्रा की सुविधा का लाभ लेने वाले दिव्यांग यात्रियों को मंडलीय कार्यालय लखनऊ जाना पड़ेगा। तभी उसका टिकट कार्ड जारी होगा। आरक्षण काउंटर पर दिव्यांग सर्टिफिकेट महज दिखा देने मात्र से टिकट नहीं बनने वाला है। इसके लिए राजधानी का चक्कर लगाना पड़ेगा। मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय से निर्गत दिव्यांग सर्टिफिकेट की जांच कराने के बाद विभाग संतुष्ट होता है तभी कार्ड जारी होगा।

रेल द्वारा किसी भी दिव्यांगजन को यात्रा में रियायती टिकट का लाभ लेना हो तो उसे सबसे पहले सीएमओ ऑफिस से दिव्यांगता का प्रमाण-पत्र जारी करवाना होता है। यात्रा में दी जाने वाली रेल रियायत की सुविधा का फार्म उत्तर रेलवे लखनऊ मण्डल के मंडलीय कार्यालय के रियायती टिकट अनुभाग से प्राप्त किया जा सकता है। इस निर्धारित प्रोफार्मे को मण्डल कार्यालय के रियायती टिकट अनुभाग के द्वारा सत्यापित कराना अनिवार्य है। इस फार्म को पूर्णरूप से भर कर सीएमओ कार्यालय में जमा करने पर रियायती रेल प्रमाण पत्र जारी किया जाता है। रियायती टिकट रेल प्रमाण पत्र प्राप्त करने के उपरांत आवेदक को रेलवे द्वारा दिव्यांग फोटो आई० डी० बनवाने के लिए मण्डल कार्यालय के रियायती टिकट अनुभाग में आना होता है। बता दें कि वर्ष 2021 में अप्रैल से दिसम्बर तक इस सुविधा के तहत लगभग 1600 दिव्यांग जन लाभान्वित हुए हैं।

बीबी ने शौहर के खिलाफ दी थाने में तहरीर

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पति और पत्नी के बीच में वैवाहिक संबंध ठीक ना होने और दोनों के बीच में तलाक हो जाने के बाद समझौते की रकम ना देने पर बीवी ने अपने शौहर के खिलाफ कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के सदहा गांव की रहने वाली अफसरी पुत्री जमालुद्दीन ने बताया कि 8 साल पहले उसकी शादी सुल्तानपुर जनपद के लंहुआ में हुई थी पति के साथ संबंध ठीक ना होने के कारण दोनों के बीच में तलाक हो गया आपसी सुलह समझौते में शौहर पक्ष ने बीबी को 80000 रुपये देने की बात कही लेकिन अभी तक पैसा ना देने पर पीड़ित बीवी ने अपने शौहर के खिलाफ पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की है।

फसलों की सुरक्षा के लिए लगाई गुहार

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी तहसील में आवारा मवेशियों द्वारा किसानों की फसलों को बेहिसाब नुकसान पहुंचाने से आजिज आकर एक अधिवक्ता ने उप जिलाधिकारी पट्टी को प्रार्थना पत्र देकर किसानों की फसल बर्बाद होने से रोकने के लिए गुहार लगाई है। पूरे बाबू गांव के रहने वाले वरुण कुमार पांडे पेशे से अधिवक्ता है उन्होंने उप जिलाधिकारी पट्टी को प्रार्थना पत्र देकर बताया कि पूरे बाबू गांव और गांव के पीछे सहसपुर में छुट्टा मवेशी किसानों की फसल को खाकर नष्ट करते जा रहे हैं जिससे किसानों को भारी भरकम नुकसान होना रहा है इस संबंध में कई बार प्रार्थना पत्र देने के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं हुई तो शनिवार को अधिवक्ता ने अपने साथियों के साथ उप जिलाधिकारी पट्टी को प्रार्थना पत्र देकर कार्यवाही की मांग की।

पत्रकार को मातृशोक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पत्रकार गिरीश त्रिपाठी की माता का गत दिवस निधन हो गया। वह कुछ दिनों से बीमार चल रही थीं जिन्हें नगर के एक नर्सिंग होम में भर्ती किया गया था जिन्होंने गत दिवस अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। पत्रकार की माता के निधन पर प्रमुख पत्रकारों ने निधन पर शोक व्यक्त किया है। शोक व्यक्त करने वालों में शैलेन्द्र मिश्र, हरिकेश मिश्र, राजन शुक्ला, रमेश त्रिपाठी आदि रहे।

अखबार वितरक साइकिल से गिरकर हुआ घायल

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के परसई कंधई का पुरवा निवासी ब्रजेन्द्र तिवारी पुत्र नारायन दीन तिवारी उर्फ दद्दू शुक्रवार की सुबह क्षेत्र में साइकिल से अखबार बाट रहा था कि अचानक कंधई का पुरवा पुलिया के पास खड़ंजे पर साइकिल से गिर पड़ा जिससे सिर फटने से खून का फव्वारा निकल पड़ा जिससे हड़कम्प मच गया किसी को समझ मे नही आ रहा था कि आखिर ये सब कैसे हो गया आनन फानन में स्थानीय लोग व परिजन घायल ब्रजेन्द्र को लेकर स्थानीय नर्सिंग होम ले गए जहां उपचार चल रहा है। घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय पत्रकार व अखबार वितरक कुशल क्षेम पूछने पहुंचे।

तिरंगे को सलामी देकर मनाया गया गणतंत्र दिवस

परियावां, प्रतापगढ़। 73वां गणतंत्र दिवस के पर्व पर सीएचसी कालाकांकर में चिकित्साप्रभारी डॉ मनोज कुमार वर्मा ने अपने समस्त स्टाफ के संग अस्पताल परिसर में ध्वजारोहण किया इसी क्रम में शत्रुघ्न प्रसाद मौर्य जूनियर हाई स्कूल धनऊ का पुरवा में प्रबंधक कुँवर बहादुर मौर्य व ग्राम प्रधान अनिल मौर्य,कृषि विज्ञान केंद्र ऐटू में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ ए0 के0 श्रीवास्तव, प्राथमिक विद्यालय नटोही व बीआरसी केन्द्र रामनगर कालाकांकर में प्रधानाचार्य एवं प्राथमिक शिक्षक संघ अध्यक्ष कालाकांकर सुशील कुमार त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय एवं मीडिल स्कूल मुरस्सापुर व सोनामऊ में ग्राम प्रधान पति एवं समाज सेवी सुरेश कुमार यादव, जनता इंटर मीडिएट कालेज आलापुर कालाकांकर में प्रधानाचार्य अरुण कुमार सिंह,प्राइमरी स्कूल गौरी में डॉ सतपाल वर्मा बीडीसी एवं प्रधान प्रतिनिधि, बिजली पावर हाउस कालाकांकर में समस्त कर्मचारियों ने एक साथ खड़े होकर ध्वजारोहण करते हुए तिरंगे को सलामी दिया।

रानीगंज में सीट बंटवारे को लेकर मची खींचतान

विधायक व पूर्व मंत्री टिकट के लिये दिल्ली में डटे, सपा प्रत्याशी में भी फेर-बदल की चर्चा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के पूर्व मंत्री प्रो0 शिवाकांत ओझा के समाजवादी पार्टी से भारतीय जनता पार्टी में आने पर रानीगंज विधान सभा क्षेत्र जहां भाजपा के लिये हाट सीट बन गई है, वहीं समाजवादी पार्टी में भी विनोद दुबे को रानीगंज क्षेत्र का प्रत्याशी बनाये जाने को लेकर लखनऊ में घमासान मचा हुआ है।

भाजपा में शामिल हुए प्रो0 शिवाकांत ओझा दिल्ली में डटे हुए हैं। क्षेत्र के विधायक धीरज ओझा भी कल ही दिल्ली चले गये। धीरज ओझा अपने टिकट को लेकर मुखर हैं। उनका कहना है कि प्रो0 शिवाकांत ओझा को उन्होंने ही 2017 में हराया था। क्षेत्र की जनता प्रधानमंत्री मोदी व मुख्यमंत्री के कार्यों से अविभूत है। ऐसे में ऐन मौके पर सपा से भाजपा में आने वाले लोगों को महत्व देने से भाजपा कैडर व जनता को चोट लगेगी। जबकि प्रो0 शिवाकांत ओझा ने भाजपा में शामिल होने पर कहा था कि भाजपा उनका पुराना घर है, वह उसमें लौट आए हैं। रानीगंज से टिकट के लिये मचा घमासान रविवार तक कोई समाधान निकलने के आसार हैं। भाजपा सोच समझकर ही रविवार तक इस पर कोई निर्णय लेगी। उधर समाजवादी पार्टी में घोषित प्रत्याशी विनोद दुबे को प्रो0 ओझा ने माफिया तथा हत्यारोपी बताया था। पता चला कि विनोद दुबे का टिकट कटवाने के लिये एक पूर्व विधायक व कई अल्पसंख्यक नेता लखनऊ में डटे हुए हैं। चर्चा है कि सपा यहां भी टिकट में फेर-बदल कर सकती है।

धीरज ओझा।

प्रो0 शिवाकांत ओझा।

रानीगंज क्षेत्र अनुप्रिया पटेल के खाते में जाने की चर्चा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रानीगंज क्षेत्र से टिकट के लिये भाजपा के दावेदारों को उस समय झटका लगा, जब रानीगंज सीट भी भाजपा के सहयोगी दल अनुप्रिया पटेल के अपना दस (एस) को सौंप दी गई। इससे जहां भाजपा टिकट को लेकर अपना सिर दर्द नहीं ली, लेकिन भाजपा की यह सीट सहयोगी दल को देने से भाजपा कार्यकताओं में भी निराशा है। खासकर विगत पांच वर्षों में भाजपा के शासन काल में क्षेत्र में विकास के कई कार्य हुए।

कोरोना से बचाव के लिये नपा ने किया एंटी लार्वा का छिड़काव

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कोरोना सहित संक्रामक रोगों के प्रभाव को रोकने के लिये नगर पालिका शहर के मोहल्लों में एंटी लार्वा का छिड़काव तथा सार्वजनिक स्थानों पर सेनेटाइजेशन का कार्य कर रही है। यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह व अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह द्वारा बनाई गई कार्य योजना के तहत शहर के वार्डों में रोस्टर के अनुसार एंटी लार्वा का छिड़काव किया जा रहा है। शनिवार को नगर के दहिलामऊ दक्षिणी तथा उत्तरी, करनपुर वार्ड व अस्पताल वार्ड की नालियों में सफाई कर्मी सुबह से ही एंटी लार्वा का छिड़काव कर रहे थे। एक दिन में चार-पांच वार्ड में एंटी लार्वा का छिड़काव क्रम से किया जाएगा। इसके अलावा जिला कचहरी, रेलवे स्टेशन व रोडवेज बस स्टेशन में सेनेटाइजेशन का कार्य किया गया।

सार्वजनिक स्थलों पर किया जा रहा है सेनेटाइजेशन

चूहों ने बंद कराई शहर की बिजली, पानी के लिए तरसे लोग

रूपापुर उपकेन्द्र पर चूहों के उत्पात से उड़ा फीडर, रात बारह बजे फटा फीडर दिन में 12 के बाद आई बिजली

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। चूहों की फौज के हमले से रूपापुर उपकेन्द्र का फीडर ही उड़ गया। जिससे आधे शहर की बिजली 12 घंटे के लिए गुल हो गई। आधी रात के वक़्त उनके द्वारा मचाये गये उत्पात से लोगों को घंटों तक पानी की बूंद भी नसीब हुई। शनिवार सुबह लोगों को काफी दिक्कतें आई। दिन में 12 बजे के बाद बाबागंज उपकेंद्र से बिजली की बहाली कराई गई। तब जाकर शहरियों को पानी मिला।

यह सब सुनने में अजीब लग रहा होगा। लोगों को विश्वास नहीं होगा। लेकिन घटना सोलह आने सच है। बताया जाता है कि रात 12 बजे के करीब रूपापुर उपकेंद्र में धमाका हुआ। कर्मचारी कुछ समझ पाते। उन्होंने देखा कि फीडर फट गया है उसमें से आग निकल रही है। हालांकि आग को किसी तरह बुझाया गया। फीडर फटते ही उपकेंद्र से जुड़े आधे शहर की बिजली गुल हो गई। ठंड का मौसम होने की वजह से लोगों को इसका पता सुबह चला जब पानी की किल्लत होने लगे। कर्मचारियों से सूचना पाकर अधिकारी भी उपकेंद्र पहुंचे। फीडर बनाने वाले से बात हुई तो पता चला कि वह जिले से बाहर गया हुआ है। उसके बाद इधर की आपूर्ति बाबागंज उपकेंद्र से चालू करने की कवायद शुरू हुई। इसी बीच मेल लाइन बंद हो गई। पता चला कि उसमें भी फाल्ट आ गया है। होते हवाते 12 बजे करीब बिजली मिल पाई। एसडीओ नगर अजीत यादव ने बताया कि चूहें फीडर में घुस गये।

फीडर को ठीक करते बिजली कर्मचारी

विधानसभा के साथ विधान परिषद की सीटों पर चुनाव का ऐलान भाजपा की हताशाः प्रमोद

सीडब्ल्यूसी मेंबर ने बढ़ते रोजगार संकट पर उठाए सवाल

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य प्रमोद तिवारी ने प्रदेश मे विधानसभा के सामान्य निर्वाचन जारी रहने के बीच विधान परिषद की छत्तीस सीटों पर भी चुनाव के ऐलान को आश्चर्यजनक एवं अनौचित्यपूर्ण ठहराया है।

श्री तिवारी ने कहा कि उत्तर प्रदेश के इतिहास मे शायद यह पहली बार हो रहा है कि जब विधानसभा के सामान्य निर्वाचन हो रहे हों तो उस समय विधान परिषद के छत्तीस सीटों के चुनाव की तिथियों की घोषणा की जा रही हों। वरिष्ठ कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी ने कहा कि सरकार की इस मंशा से साबित हो गया है कि आगामी तीन मार्च व सात मार्च को विधान परिषद

कैम्प कार्यालय पर प्रेस वार्ता करते सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी।

के स्थानीय निकाय का चुनाव होना यह दशार्ता है कि भाजपा की समझ मे अब अच्छी तरह आ चुका है कि आगामी दस मार्च 2022 को उसका सियासी पतन होना निश्चित है। शनिवार को नगर स्थित कैम्प कार्यालय पर पत्रकार वार्ता मे प्रमोद तिवारी ने कहा कि उनके संसदीय अनुभव का तकाजा है कि शायद कभी विधानसभा के सामान्य निर्वाचन के साथ विधान परिषद के चुनाव साथ साथ हुए हों। वार्ता के दौरान प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी, मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, प्रमुख अमित सिंह, डा. प्रवीन सागर शुक्ल, सांगीपुर प्रमुख अशोक सिंह बब्लू भी मौजूद रहे।

डीसीएम पर लदे पन्द्रह मवेशी को पुलिस ने किया बरामद

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने तीन आरोपियो के खिलाफ पशु क्रूरता एवं गोहत्या निवारण अधिनियम के तहत केस दर्ज किया है। इनमें से पुलिस ने एक आरोपी को हिरासत मे लिये जाने मे सफलता ली है। वहीं पुलिस कार्यवाही मे डीसीएम ट्रक पर लदे पन्द्रह मवेशियों को भी बरामद कर लिया गया है। कोतवाली के दरोगा जयकिशुन यादव मुखबिरी सूचना पर फोर्स के साथ दबिश देकर मवेशियों को लादकर भाग रही ट्रक को गिरफ्त मे ले लिया।

प्लेटफार्म पर रिक्शा, टेम्पो ड्राइवरों का प्रवेश बंद

कुलियों के हिस्से की सवारी उठा ले जाते हैं ड्राइवर

कार्यवाई के लिए एसएस ने सीटीआई, जीआरपी और आरपीएफ को भेजा पत्र

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रेलवे प्लेटफार्म पर कुलियों के हक पर डाका डाल रहे सवारी वाहन के ड्राइवरों को अब अंदर प्रवेश नहीं मिलेगा। अगर वे घुसने का प्रयास करेंगे तो मुख्य टिकट निरीक्षक की अगुवाई वाली जीआरपी और आरपीएफ की टीम इनसे निपटेंगे। नहीं मानें तो जेल भेजने से भी गुरेज नही किया जायेगा। स्टेशन अधीक्षक ने शनिवार को इस आशय का पत्र भेज कर संबंधित को कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। एसएस की चिट्ठी से उन पुलिस वालों को जाड़े में पसीना आ गया है। जिनके संरक्षण में सरहंग किस्म के ड्राइवर बिना रोक टोक प्लेटफार्म पर दाखिल हो रहें हैं। ट्रेन से उतरने वाले यात्रियों का सामान उठाकर बाहर ले जाने का कार्य रेलवे ने पंजीकृत कुलियों को दे रखा है। दर्जन भर कुली इस कार्य में लगे भी है। बोझ उठाने के बदले में यात्रियों से मिलने वाली मजदूरी से अपना और अपने परिवार का पेट पालते हैं। ट्राली बैग जब से चला है कुलियों की जरूरत ही नहीं पड़ती है। जिनको जरूरत पड़ती है। उनके सामान पर कुली से पहले प्लेटफार्म पर दाखिल टेंपो, जीप, बुलेरो और ईरिक्शा चालक झपट्टा मारकर उठा ले जाते हैं। जिससे कुलियों का आर्थिक नुकसान हो रहा है।

रेलवे स्टेशन पर सामान ले जाते कुली।

जिलाधिकारी कार्यालय पर न्याय की गुहार करती महिलाएं।

पुश्तैनी मार्ग के विवाद को लेकर महिलाओं को पीटा, तोड़फोड़

डीएम व एसपी से मिलकर लगाई न्याय की गुहार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। गांव के पुश्तैनी रास्ते के विवाद को लेकर दबंगों ने महिलाओं को पीटा तथा फायरिंग कर घर में तोड़फोड़ की। महिलाओं ने किसी तरह भागकर जान बचाई। इस दौरान पुलिस को सूचना दी गई जिस पर पुलिस से कोई कार्यवाही न होने पर महिलाओं ने जिलाधिकारी कार्यालय व एसपी कार्यालय को प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई है।

रानीगंज थाना क्षेत्र के खरहर गांव निवासिनी मीरा देवी, रीता देवी व पिंकी के घर पर गांव के पुश्तैनी रास्ते के विवाद को लेकर गांव के ही कुछ दबंगों ने हमला बोल दिया। इस दौरान दबंगों ने महिलाओं को जमकर पीटा तथा हवाई फायरिंग करते हुए घर में रखी गृहस्थी में तोड़फोड़ की। दबंगों की मारपीट से किसी तरह महिलाओं ने भागकर अपनी जान बचाई। इस बात की जानकारी रानीगंज पुलिस को दी गई लेकिन कोई कार्यवाही न होने पर महिलाओं ने जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर दबंगों के खिलाफ कार्यवाही की मांग की। महिलाओं ने कहा कि दबंगों के विरुद्ध कार्यवाही कर सार्वजनिक मार्ग को पुनः संचालित किया जाए। पीड़ित महिलाओं के साथ गांव की अन्य महिलाओं ने भी लिखित हस्ताक्षर किये हैं।

खबर संक्षेप

पति की मौत से दुःखी पत्नी ने भी जहर खाया गम्भीर अस्पताल में भर्ती

भरवारी कौशाम्बी। कोखराज थाना अंतर्गत पुलिस चौकी भरवारी के पीछे एक युवती ने पति की मौत से दुःखी हो कर जहर खाकर जान देने की कोशिश की है खबर लगते ही मौके पर पहुची पुलिस ने तत्काल तड़प रही युवती को इलाज के लिए अस्पताल भेजवाया है जहा पर उसका उपचार किया जा रहा है जहाँ पर उसकी हालत खतरे से बाहर है। ज्ञातब्य हो कि उक्त युवती के पति रामजी की तीन दिन पहले मौत हो गई है पति की मौत से दुःखी पत्नी इस सदमे को बर्दाश्त नही कर सकी जिसके चलते पत्नी परवीन ने आज अपने किराये के मकान में जहर खाकर जान देने की कोशिश की परंतु मौके पर पुलिस पहुच गई जिसको अस्पताल भेजवा दिया जहा पर चिकित्सों ने बताया कि युवती की हालत खतरे से बाहर है उसका उपचार चल रहा है।

अपहृत बालक को 11 घंटे में पुलिस ने किया बरामद

अखंड भारत संदेश

फिरौती के लिए बालक का किया गया था अपहरण

अपहरणकर्ता के बारे में जानकारी देते पुलिस अधीक्षक

कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के भेलखा गांव से 28 जनवरी की शाम 6:30 बजे एक बालक का अपहरण हो गया था मामले की सूचना पुलिस को मिली पुलिस ने मामले में मुकदमा दर्ज कर अपराधियों की खोजबीन शुरू कर दी पुलिस ने 29 जनवरी को सुबह 5:30 बजे बालक के अपहरण करने के आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से बालक को बरामद कर लिया है पुलिस ने लिखा पढ़ी कर आरोपी को जेल भेज दिया है बालक को बरामद करने वाली पुलिस टीम को पुलिस अधीक्षक ने दस हजार रुपए के इनाम से प्रोत्साहित किया है।

घटनाक्रम में बताया जाता है कि मंझनपुर कोतवाली के भेलखा गांव निवासी ध्यान सिंह यादव का 2 वर्ष का पुत्र आरुष यादव को 28 जनवरी की शाम 6:30 बजे करारी थाना क्षेत्र के गौहनी गांव निवासी आशीष यादव पुत्र फूल सिंह यादव अपने भाई अजीत यादव व दोस्त के साथ मिलकर बालक को उठा ले गए थे मामले में मुकदमा दर्ज होने के बाद एसपी के निर्देश पर मंझनपुर पुलिस टीम सक्रिय हुई और मंझनपुर कोतवाल के नेतृत्व में टेढ़ी मोड़ पुलिया के पास से अभियुक्त अशोक यादव को गिरफ्तार करते हुए उसके कब्जे से बालक आरुष यादव को सकुशल पुलिस ने बरामद कर लिया है आरोपी के कब्जे से पुलिस ने बच्चों को खिलाने वाली टॉफी और घटना में प्रयोग एक मोबाइल भी बरामद किया है गिरफ्तारी करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक मंझनपुर विनोद कुमार सिंह उप निरीक्षक प्रमेश यादव उप निरीक्षक कृष्ण कुमार यादव उपनिरीक्षक अभिषेक गुप्ता कांस्टेबल आकाश दुबे और कांस्टेबल बृजेश यादव शामिल है।

नगर पालिका के सफाई कर्मी बेलगाम गंदगी में जी रहे मोहल्ले वासी!

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। भरवारी नगर पालिका क्षेत्र में सफाई व्यवस्था धड़ाम हो गई है जगह जगह पर कूड़े के अंबार लगे हैं गंदगी से ग्रामीण जूझ रहे हैं नालियां चोक हैं और बजबजा रही हैं नाली से उठ रही दुर्गंध से आम जनता परेशान हैं बार-बार शिकायत किए जाने के बाद नगर पालिका के अधिकारी सफाई कर्मियों की नकेल नहीं कर पा रहे जिससे सफाई कर्मचारी बेलगाम है नगर पालिका क्षेत्र के बालक मऊ मोहल्ले के कई लोगों ने बताया कि कुछ लोगों के घर के आसपास सफाई करने के बाद सफाई कर्मी फरार हो जाता है जिससे मोहल्ले के दो तिहाई से अधिक आबादी क्षेत्र में गंदगी व्याप्त है जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हैं गली सड़क और पटरियों में गंदगी भरी पड़ी है नालियां चोक हो चुकी है और बजबजा रही है ग्रामीणों ने कहा कि एक तरफ विभिन्न महामारी की आशंका से सरकार आम जनमानस को सचेत कर रही है है करोड़ों का बजट खर्च कर सरकार लगातार आम जनता को गंदगी से सावधान कर रही है और साफ सफाई पर आम जनता को जागरूक कर रही है लेकिन बालक मऊ की गंदगी साफ करने के लिए नगर पालिका भरवारी के सफाई कर्मियों के पास समय नहीं है लोगों ने आला अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए बालक मऊ में सफाई व्यवस्था सुचारू कराने की मांग की है।

लाल बहादुर को प्रत्याशी घोषित किए जाने पर समर्थकों में जश्न

लाल बहादुर को विधायक प्रत्याशी बनाए जाने पर जश्न मनाते ब्लाक प्रमुख व उनके समर्थक

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। भारतीय जनता पार्टी से मंझनपुर विधानसभा के विधायक लालबहादुर को दूसरी बार मंझनपुर विधानसभा से विधायक प्रत्याशी घोषित किए जाने पर पार्टी समर्थकों में जश्न का माहौल है मंझनपुर ब्लॉक प्रमुख आवास में ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि हुबलाल दिवाकर की अध्यक्षता में ब्लॉक प्रमुख के आवास में एक बैठक कर लालबहादुर विधायक को दूसरी बार मंझनपुर से विधायक प्रत्याशी बनाए जाने पर खुशी का इजहार कर मिठाईयां बांटी गई हैं और विधायक लाल बहादुर को भारी बहुमत से जीत दर्ज कराने का समर्थकों ने संकल्प लिया है वक्ताओं ने कहा कि उत्तर प्रदेश का विकास योगी के नेतृत्व में ही संभव है और उन्होंने कहा कि योगी के हाथों को मजबूत करने के लिए मंझनपुर से विधायक लालबहादुर को भारी बहुमत से जीत दर्ज कराना होगा तभी उत्तर प्रदेश का पूर्ण विकास हो सकता है इस दौरान बादल सिंह यादव जिला मंत्री मुमताज अशोक चौधरी सुभाष यादव अंकित यादव अनिल सरोज रमेश मौर्य सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

विधानसभा मतदेय स्थलों का संशोधित विवरण

कौशाम्बी। उप जिला निवार्चन अधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय द्वारा बताया गया कि जनपद में सम्मिलित 252-मंझनपुर एवं 253-चायल विधानसभा निवार्चन क्षेत्र के सहायक मतदेय स्थलों के प्रस्ताव को भारत निवार्चन आयोग द्वारा अनुमोदित कर दिया गया है। विधानसभा वार संशोधित मतदेय स्थलों का विवरण 252-मंझनपुर 69अ-प्रा0वि0 गुवारा तैयबपुर पश्चिमी भाग अतिरिक्त कक्ष 129अ तियरा जमालपुर अतिरिक्त कक्ष 293अ हकीमपुर अतिरिक्त कक्ष 294अ भटवरिया अतिरिक्त कक्ष 447अ गुरौली अतिरिक्त कक्ष 253-चायल 308अ-बनवारी लाल गौतम बालिका इंटर कॉलेज सराय अकिल में चतुर्थ अतिरिक्त कक्ष बनाया गया है।

गांजा के साथ गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त नबीउल्ला पुत्र पीर मोहम्मद निवासी महमूदपुर मनौरी थाना पूरामुफ्ती जनपद प्रयागराज को गिरफ्तार कर कब्जे 600 ग्राम नाजायज गांजा बरामद होने पर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

बूथ अध्यक्षों के साथ बैठक करते भाजपा नेता

बूथ अध्यक्ष, पन्ना प्रमुख शक्ति संचालक, पालकों की हुई मीटिंग

मेरा बूथ सबसे मजबूत : देशराज मौर्य

अझुवा कौशाम्बी। सिराथू विधान सभा का चुनाव परिणाम को विशेष मजबूत करने के लिए प्रवासी जय शंकर,मनोज कुशवाहा ने कनवार के पुरवा मेडीपुर वीरेंद्र पाल के घर के पास में बूथ अध्यक्ष,पन्ना प्रमुख,पालक के साथ मीटिंग कर मेरा बूथ सबसे मजबूत कैसे हो इस पर गहन मंथन किया है वक्ताओं ने कहा कि हमें प्रत्येक गांव को सिराथू विधान सभा ही मानना होगा,हमे योगी सरकार की लाभकारी कल्याणकारी योजनाओं को बखान कर लाभ लेने व पाने वालों को जागृत करना होगा एक पन्ना प्रमुख 60 मतदाताओं को कवर करेगा बूथ अध्यक्षो ने संकल्प लिया कि हम सिराथू विधान सभा से प्रत्यासी बने सिराथू के लाल उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य को विशाल मतों से विजयी बनाएंगे इस अवसर पर आलोक मिश्र,वीरेंद्र पाल अमृतलाल मौर्य देशराज मौर्य,आनंद केसरवानी,संजय मौर्य दिलीप मौर्य दीपक सोनकर सहित तमाम बूथ अध्यक्ष पन्ना प्रमुख मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

अवैध शराब के साथ नौ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। अलग अलग थानों द्वारा नौ अभियुक्तो को गिरफ्तार कर 105 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर सभी अभियुक्तो का चालान न्यायालय कर दिया है जानकारी के मुताबिक थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा पांच अभियुक्त शनी कुमार पुत्र मैकू निवासी फरीदपुर थाना कोखराज को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब व सुआ पुत्र स्व० प्रकास निवासी शोभना थाना कोखराज को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब व संजय सिंह पुत्र रामदास निवासी लोहरा थाना कोखराज को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब व सुरेश पुत्र महादेव निवासी बदनपुर थाना कोखराज को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब व फूलचन्द्र पुत्र स्व० छेदीलाल निवासी शिवपुर मजरा अहिरारा थाना कोखराज को गिरफ्तार कर कब्जे से 15 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है। इसी प्रकार थाना सराय अकिल पुलिस बल द्वारा अभियुक्त मिश्रीलाल पुत्र माता बदल निवासी मोहम्मदाबाद थाना सराय अकिल को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब व रंजीत सिंह पुत्र कुलजीत सिंह निवासी कनैली थाना सराय अकिल को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है। इसी प्रकार थाना कडाधाम पुलिस बल द्वारा अभियुक्ता रामकली पुत्र शिवबली निवासी सौरई बुजुर्ग थाना कड़ाधाम को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है। इसी प्रकार थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त बिन्देशरी सरोज पुत्र चोखेलाल सरोज निवासी रक्सौली थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर कब्जे से 20 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है

आठ सौ रुपए के साथ 6 जुआरी गिरफ्तार

भरवारी कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के भरवारी पुलिस चौकी इंचार्ज सरवन कुमार सिंह ने पुलिस टीम के साथ जुए की फड़ पर छापा मार दिया है पुलिस टीम के छापा मारते ही जुए की फड़ पर भगदड़ मच गई और जुवारी भागने लगे चौकी इंचार्ज व पुलिस टीम ने दौड़ाकर छह जुवारियो को पकड़ लिया है और कुछ जुआरी पुलिस को देखने के बाद भाग जाने में सफल रहे हैं पकड़े गए जुआरियों के पास से आठ सौ रुपए नगद और ताश की गड्डी पुलिस ने बरामद की है। पकड़े गए जुआरियों में राहुल पुत्र रमेश केशरवानी नया बाजार मनोज कुमार पुत्र बुद्धिलाल चमरूपुर दशा राम पुत्र स्व शुकरु बैरिहा निब्बू लाल पुत्र द्वारिका प्रसाद बैरिहा संदीप कुमार पुत्र दशरथ लाल काजी पुर जितेंद्र कुमार पुत्र रामराज काजीपुर शामिल बताए जाते हैं जिनके विरुद्ध पुलिस ने लिखा पढ़ी कर चालान कर दिया है।

कोरोना संक्रमण के दृष्टिगत की गई कार्यवाही

कौशाम्बी। जनपद मे लाकडाउन के दृष्टिगत सरकार द्वारा निर्गत निदेर्शों के अनुपालन के क्रम में पुलिस अधीक्षक के निदेर्शानुसार जनपद स्तर पर विभिन्न थानों द्वारा अनावश्यक रूप से बाहर घूमने मास्क न लगाने एवं सोशल डिस्टेसिंग का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया, जिनमें 218 वाहनों का ई चालान किया गया एव 07 वाहनों का चालान कर 4000 रुपए सम्मन शुल्क वसूला गया साथ ही बिना मास्क लगाये घूमने एवं सरकार द्वारा जारी गाइड लाइन का उल्लघन करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करते हुये 03 व्यक्तियों से 300 रुपये जुमार्ना वसूला गया।

भाजपा की जीत का कारण बन सकते हैं सपा के एक बड़े नेता

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। आगामी विधानसभा चुनाव 2022 में भारतीय जनता पार्टी के जीत का कारण समाजवादी पार्टी के एक नेता बन सकते हैं अपने और पराए में भेद रखने वाले यह नेता लखनऊ तक की राजनीति करते हैं और इन दिनों समाजवादी पार्टी में महत्वपूर्ण नेता माने जाते हैं लेकिन नेताजी के अंदर अपने पराए का भरपूर भेद है इसके चलते पार्टी में भितरघात की स्थिति उत्पन्न हो गई है और लखनऊ की राजनीति करने वाले समाजवादी पार्टी के इस नेता के गलत नीतियों का खामियाजा जहां समाजवादी पार्टी को भुगतना पड़ेगा वही इसका सीधा लाभ भाजपा पार्टी के प्रत्याशी उठाएगे उक्त नेता जी अपने पराए के मोह में जिस तरह से बौरा गए हैं कि वह कौशाम्बी में पूरी समाजवादी पार्टी के बंटाधार का कारण बनते जा रहे हैं बड़े नेता जी की स्वार्थी चाल के चलते समाजवादी राजनीतिक दलों की खटिया खड़ी होती दिख रही है और बहुजन समाज पार्टी की वह पहले ही खटिया खड़ी कर चुके हैं समाजवादी में बड़े नेता के भितरघात के चलते पार्टी कई धड़ में बट चुकी है सपा के उक्त बड़े नेता के आदूरदर्शिता के चलते भाजपा का जनाधार बढ़ता दिख रहा है लेकिन बड़े नेता जी के अपने पराए के भेद से हो रहे पार्टी के नुकसान को अभी तक सपा मुखिया ने गंभीरता से नहीं लिया है।

पूर्व ब्लाक प्रमुख ने भाजपा से दिया त्यागपत्र

कौशाम्बी। भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व ब्लाक प्रमुख चायल इंजीनियर सोनू कुमार ने भारतीय जनता पार्टी की नीतियों से त्रस्त होकर पार्टी से त्यागपत्र दे दिया है उन्होंने पहले से कहा था कि यदि मंझनपुर विधानसभा से अगर किसी पासी विरादरी के ब्यक्ति को भाजपा विधानसभा का टिकट नहीं दिया तो मै भाजपा से इस्तीफा दे दूंगा जैसे ही भारतीय जनता पार्टी ने मंझनपुर विधानसभा से विधायक लाल बहादुर को फिर विधानसभा प्रत्याशी घोषित किया है इंजीनियर सोनू कुमार पूर्व ब्लॉक प्रमुख चायल ने भाजपा से इस्तीफा देने की घोषणा कर दी है जिससे पार्टी में खलबली मच गई है।

जुआ खेलते चार हुए गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना पश्चिम शरीरा पुलिस द्वारा चार अभियुक्तों भरत सिंह पुत्र गुलाब नरेन्द्र सिंह उर्फ ढोकिया पुत्र राम प्रसाद राजेन्द्र उर्फ सुगन मिश्रा पुत्र राज बहादुर मिश्रा निवासी चादिराई थान पश्चिम शरीरा व ठेकेदार क्योटरहा को सार्वजनिक स्थान पर हार जीत की बाजी लगाकर जुआ खेलते हुये गिरफ्तार कर इनके कब्जे से 52 अदद तास के पत्ते व 800 रुपए मालफड तथा जमातलासी के दौरान 400 रुपए बरामद कर कार्यवाही की गई।

ट्रेन हादसे में युवती की मौत

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के सैयद सरावा रेलवे स्टेशन के समीप 25 वर्षीय युवती ट्रेन से कट गई है सिराथू जीआरपी चौकी इंचार्ज मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में ले लिया लड़की की शिनाख्त नहीं हो पाई पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम भेज दिया है।

अखिल भारतीय ब्राह्मण एकता परिषद बनेगा गरीब वंचितों की आवाज

अखंड भारत संदेश

एक ही आवाज जो ब्राम्हण की बात करेगा वह यूपी में राज करेगा

गरीब ब्राह्मणों को कम्बल व मास्क वितरित करते

विजियाचौराहा। विधानसभा मंझनपुर के ऐतिहासिक स्थल कौशाम्बी में 73 वें गणतंत्र दिवस के अवसर में अखिल भारतीय ब्राह्मण एकता परिषद ने कौशाम्बी ब्लाक के विजिया चौराहा में अखिल भारतीय ब्राम्हण एकता परिषद के बैनर तले बैठक आहूत की गई जिसमें सर्वप्रथम ध्वजारोहण किया गया उसके बाद गरीब ब्राम्हणो को कम्बल व मास्क वितरण किया गया ब्राह्मण समाज के गणमान्य लोग मौजूद रहे सभी ने संगठित होने के लिए अपनी अपनी बाते रखी इस कार्यक्रम के आयोजन सौरभ त्रिपाठी ने किया सभी लोगो की एक ही आवाज जो ब्राम्हण की बात करेगा वह उत्तर प्रदेश में राज करेगा नारा देते हुए कार्यक्रम को आगे बढ़ाया उसके बाद इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दीप नारायण त्रिपाठी (जिला अध्यक्ष प्रधान संघ) ने ब्राह्मणों को एकसाथ होने का आवाहन किया योगेंद्र त्रिपाठी परिषद के उपाध्यक्ष ने कहा कि सभी दलों को समान्यवर्ग की याद नही आती जबकि ब्राह्मण और सामान्य वर्ग ही सभी दलों को आगे बढ़ाया लेकिन आज सामान्य वर्ग को उपेक्षित करते है ऐसे लोगो की आवाज अखिल भारतीय ब्राह्मण एकता परिषद जनपद ही नही प्रदेश में आवाज बनकर उभरेगा वहीं सभी लोगो से सुभम द्विवेदी ने कोरोना प्रोटोकाल का पालन करने का आवाहन किया कार्यक्रम को सम्पन्न किया कार्यक्रम में अजय मिश्रा, अशोक मिश्रा, अंकित त्रिपाठी, श्रवण मिश्रा ,शशी कांत त्रिपाठी, भोला प्रधान, जय प्रकाश त्रिपाठी, अरविंद मिश्रा, सोनू प्रधान, सौरभ त्रिपाठी सहित विभिन्न गणमान्य लोग सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

गजब! तो फिर पशु बाड़े में पशुओं के साथ पढ़ेगे गरीब छात्र

अखंड भारत संदेश

लाखों रुपए खर्च कर योगी सरकार द्वारा प्राथमिक विद्यालय के सुंदरीकरण को पलीता लगा रहे पशुपालन विभाग के अधिकारी

सरकारी विद्यालय में पशुओं के साथ छात्रों की शिक्षा ग्रहण की योजना बनाने वाले पशुपालन विभाग के अधिकारियों के कारनामों पर जनप्रतिनिधियों ने साधी चुप्पी

कोखराज कौशाम्बी। शिक्षा विभाग और पशु विभाग के अधिकारियों के कारनामों से ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त है सरकारी विद्यालय को गौ संरक्षण केंद्र बना दिया गया है अब सवाल उठता है कि अधिकारियों के इस दूरदर्शिता का खामियाजा छात्रों को भुगतना पड़ेगा पशुओं के बीच क्या सरकारी स्कूलों में छात्रों को शिक्षा दी जाएगी यह प्रशासनिक व्यवस्था पर बड़ा सवाल है सिराथू क्षेत्र के ग्राम ककोढा प्राथमिक विद्यालय द्वितीय में गौ संरक्षण केंद्र बना दिया गया है इलाके के आवारा पशु पकड़ने के बाद सैकड़ों गाय बछड़ों को शिक्षा के मंदिर में ला कर बन्द कर दिया गया पशुपालन विभाग के अधिकारियों का यह कारनामा गलत हैं जहां बच्चों को शिक्षा दी जानी चाहिए वहां कुछ गन्दी मानसिकता के लोगों ने छुट्टा जानवरों को उस शिक्षा के मंदिर में बंद कर शिक्षा के मन्दिर को कलंकित करने का कार्य किया हैं जिससे इस तरह के कृत्य से ग्रामीणों में नाराजगी हैं ग्रामीणों की माने तो जिस विद्यालय में इन जानवरों को रखा गया था उस विद्यालय की दीवारों को पशुओं ने तोड़ डाला और उसके अंदर बच्चों के लिए बैठने के लिए लगे टाइल्स व इण्टर लॉकिंग को भी तोड़ डाला इसको लेकर ग्रामीणों में गुस्से का माहौल बना हुआ है क्या इस तरह के कृत्य करने वालो पर जिलाधिकारी कार्यवाही करेंगे या उसी तरह से गन्दे व टूटे फूटे शिक्षा के मंदिर में छोटे छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए भेजा जाएगा। अब सवाल उठता है कि एक तरफ योगी सरकार परिषदीय विद्यालयों के सौंदर्यीकरण को लेकर लाखों रुपए का बजट खर्च कर रही है और दूसरी तरफ पशुपालन विभाग के अधिकारियों द्वारा सुंदर स्वच्छ सरकारी विद्यालय को तहस-नहस किया जा रहा है जो इन अधिकारियों की मानसिकता पर बड़ा सवाल है दूसरी तरफ सवाल उठता है कि क्या सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले गरीब परिवार के छात्रों के प्रति पशुपालन विभाग के अधिकारियों की इतनी घिनौनी हरकत उजागर होगी जिसमें स्कूली छात्रों को पशुओं के बीच रहने पर विवश किया जा रहा है पशुपालन विभाग के अधिकारियों के इस कारनामे पर अभी तक आला अधिकारियों ने भी जुबान नहीं खोली है इतना ही नहीं जनप्रतिनिधियों ने भी छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने वाले पशुपालन विभाग के अधिकारियों के कारनामों को संज्ञान लेकर उन पर कठोर कार्यवाही नहीं की है जिससे व्यवस्था में सुधार होता नहीं दिख रहा।

एक्सईएन के चहेते ठेकेदार डिप्टी सीएम पर लगा रहे हैं आरोप!

अखंड भारत संदेश

लोक निर्माण विभाग के तीनों खंड में सवा सौ करोड़ से अधिक के बजट की मंजूरी दिए जाने के बाद भी गड्ढे नुमा सड़क का होना विभाग के बड़े भ्रष्टाचार की खोल रहा है पोल

मूरतगंज जील्ला पर खराब सड़क का दृश्य

कौशांबी। लोक निर्माण विभाग के तीन खंड का चार्ज एक अधिशासी अभियंता को शासन में सौंप दिया है विभाग में सवा सौ करोड़ से अधिक के बजट से सड़क निर्माण सड़क मरम्मत सड़क चौड़ीकरण नाली निर्माण का कार्य कराया गया है लेकिन उसके बाद भी जिले की जनता गड्ढा युक्त सड़कों पर आवागमन करने को मजबूर है गड्ढे युक्त सड़कों पर चलने से आए दिन लोग चोटिल हो रहे हैं विभाग द्वारा बीते वर्ष जिन सड़कों का निर्माण कराया गया वह कुछ दिन बाद ही गड्ढे में तब्दील हो गई हैं घटिया क्वालिटी के निर्माण के चलते सड़कों का बनना और उनका उखाड़ना विभाग की व्यवस्था में शामिल हो चुका है लोक निर्माण विभाग के तीनों खंड में सवा सौ करोड़ से अधिक के बजट की मंजूरी दिए जाने के बाद भी गड्ढे नुमा सड़क का होना विभाग के बड़े भ्रष्टाचार की पोल खोल रहा है अधिकारी मस्त है और उनके अधीनस्थ मौज करने में लगे हैं जिससे पूरे विभाग के सरकारी बजट पर मानक के अनुसार कार्य करने के बजाय ठेकेदारों ने लोक निर्माण विभाग के बजट को लूट लिया है जिसका खामियाजा आम जनता को भुगतना पड़ रहा है। लोक निर्माण विभाग के तीनों खंड प्रांतीय खंड निर्माण खंड और पीएमजीएसवाई में सवा सौ करोड़ बजट के स्वीकृत हो होने के बाद भी गड्ढा युक्त सड़कों पर जब चर्चा उठाई गई तो विभाग में अधिकारी के खासम खास समझे जाने वाले ठेकेदार को यह बात खराब लगी और विभाग के भ्रष्टाचार की चर्चा से बौखलाए एक ठेकेदार ने अधिशासी अभियंता का पक्ष लेते हुए प्रदेश के डिप्टी सीएम पर गम्भीर आरोप लगाना शुरू कर दिया ठेकेदार का कहना है कि डिप्टी सीएम के चलते लोक निर्माण विभाग की पूरी व्यवस्था चौपट है और जनता सड़को के बीच गड्ढे नुमा सड़कों पर चल रही है तो इसके लिए डिप्टी सीएम जिम्मेदार है खुलेआम ठेकेदार ने डिप्टी सीएम पर गम्भीर आरोप लगाए हैं शासन स्तर से यदि कौशांबी लोक निर्माण विभाग के तीनों खंड में सवा सौ करोड़ से कराए गए विकास कार्यों की सूक्ष्म जांच कराई गई तो विभाग के ठेकेदार और अधिकारियों की गठजोड़ उजागर होगी और कमीशन खोरी के चलते घटिया सड़के बनाने के आरोप में विभाग के अधिशासी अभियंता सहायक अभियंता अवर अभियंता पर गाज गिरना तय है योगीराज में लोक निर्माण विभाग के भ्रष्टाचार की जांच हो पाएगी इस बात का इंतजार जिले की आम जनता कर रही है।

दुर्दशा ग्रस्त सड़कों से जनता परेशान...

कौशाम्बी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के करारी सड़क के तियरा मोड़ से मीरा पुर जाने वाली सड़क गड्ढों में तब्दील होने से आए दिन हादसे होते हैं चायल तहसील के नासिर पुर हरायपुर की सड़क की दुर्दशा से आम जनता परेशान है और मूरतगंज के बेरूवा स्थित सेंट फ्रांसिस स्कूल की सड़क को आधा निर्माण कर खजाने से 68 लाख रुपए अधिकारियों के संरक्षण में ठेकेदार ने निकाल लिया गया है इसी तरह नारा सेवकू पुर की सड़क की दुर्दशा से आम जनता परेशान है मंझनपुर नगर पालिका क्षेत्र के कस्बे से रोडवेज बस स्टॉप जाने वाली सड़क सहित विभिन्न सड़कें अस्तित्व विहीन हो गई हैं लेकिन जिले में सवा सौ करोड़ रुपए सड़क निर्माण में खर्च हो चुका है लेकिन सड़क निर्माण में खर्च हुई रकम का हिसाब लेने वाला योगी सरकार में कोई नहीं है जैसे अधिकारी और ठेकेदार बेलगाम है और जनता त्राहि-त्राहि कर रही है।

संपादक की कलम से

बैकफुट पर कांग्रेस

उत्तर प्रदेश में चुनाव से कई महीने पहले ही कांग्रेस एक्टिव हो गई थी। हाथरस और लखीमपुर खीरी की घटनाओं में प्रियंका गांधी की लीडरशिप में कांग्रेस काफी एक्टिव दिखी थी और माना जा रहा था कि इस बार कांग्रेस अच्छा प्रदर्शन कर सकती है। बेटियों के प्रति रुझान रहा हो या जनहित के मुद्दों पर आक्रामक रवैया इन सबसे लग रहा था कि इस बार कांग्रेस सत्ता तो नहीं लेकिन पुराने परिणामों को पीछे छोड़ देगी। मगर 2022 की शुरूआत कांग्रेस के लिए कुछ खास नहीं रही। पिछले साल तक एक्टिव मोड में दिख रही कांग्रेस चुनावी साल में फिर पुरानी स्थिति में चली गई है। नए साल की शुरूआत ही उसके लिए खराब रही है। जनवरी महीने में अब तक करीब 10 बड़े चेहरे कांग्रेस का साथ छोड़ चुके हैं। इनमें से एक बड़ा नाम आरपीएन सिंह का भी है, जिन्होंने बीते मंगलवार को कांग्रेस छोड़कर भाजपा का दामन थाम लिया। एक तरफ पार्टी यूपी में अपनी जगह बनाने के लिए जद्दोजहद कर रही है तो वहीं इन नेताओं के एग्जिट ने उसे करारा झटका दिया है। कांग्रेस ने 2017 के विधानसभा चुनाव में 7 सीटों पर जीत हासिल की थी। लेकिन फिलहाल अराधना मिश्रा मोना और अजय कुमार लल्लू ही बचे हैं बाकि 5 अन्य विधायकों ने पार्टी छोड़ दी है। इस साल की शुरूआत से अब तक करीब 10 बड़े चेहरे कांग्रेस छोड़ चुके हैं। इनमें से कुछ लोगों के पास अहम जिम्मेदारी थी। जैसे आरपीएन सिंह झारखंड के प्रभारी महासचिव थे। इसके अलावा इमरान मसूद यूपी के प्रदेश उपाध्यक्ष और राष्ट्रीय सचिव थे। पार्टी छोड? वाले नेताओं में सुप्रिया एरोन और हैदर अली खान भी बड़े चेहरे रहे हैं। प्रियंका गांधी ने इस चुनाव में खुद को चेहरे के तौर पर भी पेश किया है, लेकिन यह भी नेताओं रोकने के लिए काफी नहीं रहा है। इमरान मसूद ने पार्टी छोड़ते समय लीडरशिप के बारे में कुछ नहीं कहा, लेकिन यह जरूर कह गए कि वह फिलहाल भाजपा से लड? में सक्षम नहीं है। सहारनपुर में कांग्रेस के बड़े चेहरे रहे इमरान मसूद के एग्जिट से कांग्रेस ने एक तरह से जिले में अपनी साख खो दी है। इमरान मसूद के बाद बरेली की पूर्व मेयर सुप्रिया एरोन ने भी पार्टी छोड़ दी और सपा में शामिल हो गईं।

भारतीय लोकतंत्र के लिए महापर्व बर्ष है, सन 2022

-विनोद तकिया वाला-

विश्व के बड़े लोकतंत्र भारत में चुनाव को महापर्व के रूप में मनाया जाता है।भारतीय संविधान अपने नागरिकों को मौलिक अधिकारों के अन्तर्गत मतदान का अधिकार प्रदान किया गया है।भारतीय नागरिक अपने इस अधिकार का प्रयोग कर जनप्रतिनिधि को गुप्त मतदान कर संसद व विधान सभा में चुन कर पाँच वर्ष के लिए भेजती है।सन 2022 के इस चुनावी कैलेंडर साल में7राज्यों की विधानसभाओं और राज्य सभा की 73 सीटों के लिए चुनाव सम्पन्न होने वाले है।

फिलहाल चुनाव आयोग ने पाँच राज्यो के विधान सभा चुनावों के तारीखों की घोषणा करते ही उत्तर प्रदेश,उत्तराखंड, पंजाब,गोवा और मणिपुर विधानसभा के चुनावी प्रक्रिया चल रही है।सभी प्रमुख राजनीति दलों ने अपनी कमर कस ली तथा अपनी जीत के लिए शाम,दण्ड व भेद का इतेमाल करने में कोई कसर नही छोड रही है।वहीं इसी साल के अंत में हिमाचल प्रदेश और गुजरात के विधान सभाओं के चुनाव कराए जाएंगे।आप को बता दे जिन 7 राज्यों में विधान सभा के चुनाव होने वाले है इनमें से 6 राज्यों में अभी बीजेपी की सरकारें हैं।पाँच राज्यो उत्तर प्रदेश ,उत्तराखंड और पंजाब राज्यों के विधान सभा चुनावों के परिणाम यह बताएंगे कि केन्द्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व मे भाजपा सरकार द्वारा लाये गये तीन कृषि कानूनों के खिलाफ हुए किसान आंदोलन का असर कैसा रहा। हालाकि किसान आन्दोलन के व्यापक विरोध के चलते तीनो नये कृषि कानुन को केन्द्र सरकार द्वारा वापस ले ली गई है ,

वही इसी वर्ष राज्य सभा की 73 सीटों पर द्विवार्षिक चुनाव अप्रैल से जुलाई के बीच कराए जाएंगे। 245 सदस्यों वाली राज्य सभा की करीब1तिहाई सीटों के बराबर है।इस वर्ष राज्य सभा के दिग्गज व अनुभवी सदस्य आनंद शर्मा ,ए के एंटनी,सुब्रमण्यम स्वामी (अप्रैल),सुरेश प्रभु,एम जे अकबर,निर्मला सीतारमण और जयराम रमेश (जून),पी चिदंबरम, पीयूष गोयल,प्रफुल्ल पटेल, संजय राउत,कपिल सिब्बल, अंबिका सोनी और मुख्तार अब्बास नकवी(जुलाई)में इनका कार्य काल समाप्त हो रहे है।पाँच राज्यों के विधान सभा के चुनाव नतीजे तय करेंगे कि राज्य सभा में बी जे पी या कांग्रेश कौन ताकतवर होगा।

जिन राज्यों में विधान सभा के चुनाव हो रहे हैं,वहाँ के विभिन्न संगठनो व अन्य श्रोतों से कराये गये सर्वे के अनुमान के मुताबिक कांग्रेस और विपक्षी दलों को इस बार बीजेपी के सामने मुश्किलें खडा कर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा सकती है।ऐसें में इन पांच राज्यों के विधान सभा के परिणाम संसद के ऊपरी सदन राज्य सभा की तस्वीर तय करेगी।राजनीतिज्ञ पंडितो के अनुसार ऐसे मे बीजेपी के लिए अपनी पसंद के राष्ट्रपति उम्मीदवार चुनने व राज्यसभा में भी अपनी पार्टी का दबदबा बनाए रखने के लिए इन पांच राज्यों में पुराना प्रदर्शन दोहराने के लिए ऐन ,केन व प्रेकेरण दबाव बना रही है।तो वहीं विपक्ष राजनीति दलो के द्वारा इन पाँच राज्यो के विधान सभा के चुनाव के परिणाम को अपने पक्ष में कर बीजेपी को सबक सिखाते हुए कमजोर करने के लिए अपनी पुरी ताकत लगा रही है।वही केन्द्र की भाजपा सरकार केन्द्र सरकार के पुरी कैबनेट 'भाजपा शासित मुख्य मंत्री 'सांसदो सहित तमाम पार्टी को प्रचार युद्ध झोक दी है। पार्टी अपनी रणनीति कारो व अंध समर्थको को चुनावी रणभूमि में जाति समीकरण ' हिन्दु धर्म के नाम पर वोटो का ध्रवीकरण ' इतिहास से छेड़छाड़ करने में लगी है।इसी क्रम मे लोक तंत्र के महापर्व 73 वें गणतंत्र दिवस समारोह के कुछ दिन पूर्व घटी घटना पुख्ता सबुत है। इस साल के अन्तिम महिने दिसम्बर में प्रधान मंत्री के गृह राज्य गुजरात जहाँ भाजपा सन 1995 से सता में है।185 सीटो वाली विधान सभा तथा हिमाचल प्रदेश के 68 सीटो वाली विधान सभा के चुनाव होने वाली है।दोनो राज्यो में भाजपा की सरकार है।

वही केन्द्र की सता के कर्शी पर आसीन बीजेपी के लिए अगामी वर्ष 2024 लोक सभा आम चुनाव से पहले यह संदेश देने की कोशिश कर रही है कि भाजपा ही भारत का भाग्य विधाता है।प्रत्येक राष्ट्र प्रेमी का शुभ चितंक है।गृह मंत्री स्वयं घर घर जाग कर मतदाताओं से अपील करने को मजबुर है कि आप अपने बोट विधायक 'मंत्री या मुख्य मंत्री का चुनाव नही कर रहे ब्लकि भारत का भविष्य बनाने व उसे सुरक्षित करने के लिए हमारी पार्टी को बोट दे रहे है,लेकिन यहाँ तो सच्चाई कुछ और ही है।सन 2019 में आम चुनाव में बड़ी जीत मिलने के बाद भी बीजेपी अलग-अलग मोर्चों पर संकट का समाना करना पड़ रही है।चाहे गुड गवर्नेंस का मसला हो या राजनीति सियासत की पिच, बीजेपी के लिए उतार-चढ़ाव भरे संकेत रहे हैं। ऐसे में2024 के आगामी लोक सभा के चुनाव से पहले 2022 के 7 राज्यो के विधान सभा के चुनाव को सेमी फाईनल के रूप में बीजेपी दिखाना चाहेगी कि अब भी भारत की राजनीति में वह सबसे बडे.रणनीतिकार व सर्वोच्च ' शक्तिशाली भाजपा ही है और नरेंद्र मोदी की अगुवाई में पार्टी 2024 से पहले स्वाभाविक अडवांटेज के रूप में अपनी शुरूआत करेगी।

लेकिन वस्तुत स्थिति कुछ और ही है।भारतीय लोकतंत्र की जनता इतनी भोली भाली नही है जितनी की केन्द्र की सता के सिंधासन पर आसीन अंहकारी भाजपा के स्वंभू चाणक्य व रणनीति कार समझ रही है तभी तो वह दिन के उजाले दिवा स्वपन्न देख रही है।

28-29 जनवरी 1528: चंदेरी में बाबर का विध्वंस

-रमेश शर्मा-

भारतीय इतिहास के कुछ पन्ने रक्तरंजित हैं। घटनाओं का ऐसा विवरण है जो रौंगटे खड़े कर देता है। आक्रांताओं के अहंकार ने लाशों के ढेर लगाये और अहट्टास किया। इतिहास के पन्नों में ऐसा ही एक विवरण मध्य प्रदेश में चंदेरी का मिलता है। यह वही चंदेरी है जो आज साड़ियों की शिल्पकला के लिये प्रसिद्ध है। उन दिनों यह वस्त्र कला निर्माण और व्यवसाय का बड़ा केन्द्र था। चंदेरी का यह विध्वंस मुगल हमलावर बाबर ने किया था। बाबर ने चंदेरी में केवल विध्वंस ही नहीं किया था बल्कि जिन सैनिकों और नागरिकों को जान बख्शने का आश्वासन देकर समर्पण कराया था, उन सब बंदियों के शीश काटकर पहाड़ बनाया और उसपर अपनी जीत का झंडा फहराया था। निर्दोष स्त्री-पुरुषों को पकड़ कर गुलाम बनाया, अत्याचार किये और इनमें से कुछ को खुरासान की गुलाम मंडियों में बेचने के लिये भेजा था। इसी विध्वंस के बीच महारानी मणिमाला सहित 1500 क्षत्राणियों ने चंदेरी में जौहर किया। क्षत्राणियों के जौहर की स्मृतियाँ स्मारक के रूप में आज भी मौजूद है। इस स्मारक पर पहुँचते ही सिहरन पैदा होती है। यह युद्ध वर्ष 1528 के जनवरी के अंतिम सप्ताह में हुआ था। गद्दार द्वारा चंदेरी दरवाजा खोलने की तिथि 28 और 29 जनवरी की रात है। रातभर वीरों का खून बहा, स्त्रियों की चिताएं जलीं इसलिये कुछ इतिहासकारों ने विध्वंस की तिथि 28 जनवरी मानी तो कुछ ने 29 जनवरी। चंदेरी मध्य प्रदेश के ग्वालियर संभाग और अशोकनगर जिले के अंतर्गत ऐतिहासिक नगर है। उन दिनों चंदेरी पर प्रतिहार वंशीय शासक मेदनी राय का शासन था। तब चंदेरी अंतरराष्ट्रीय रेशम के व्यापार का बड़ा केन्द्र था। मेदिनी राय न केवल चित्तौड़ के शासक राणा साँगा की कमान में बाबर से युद्ध करने के लिये खानवा के मैदान में अपनी सेना लेकर गये थे बल्कि राणा साँगा उन्हें अपना पुत्र भी मानते थे। दुर्योग से खानवा के युद्ध में राणाजी की पराजय हुई। इस युद्ध में राणाजी की हार के दो कारण रहे, एक तो गद्दारी और दूसरा बाबर ने अपने तोपखाने के आगे गायों को बाँध कर खड़ा कर दिया था। गायों को सामने देखकर राणा का तोपखाना रुक गया। बाबर का तोपखाना चालू हो गया और युद्ध का नक्शा ही बदल गया। राणाजी के घायल होकर निकल जाने के बाद बाबर ने जीत का जश्न मनाया और उन सभी राजपूत राजाओं के दमन का सिलसिला शुरू किया जो राणा साँगा की कमान में बाबर से युद्ध करने खानवा पहुँचे थे। इनमें मेदिनी राय का नाम प्रमुख था। खानवा युद्ध के बाद मेदिनी राय चंदेरी लौट आये और राणाजी के स्वस्थ होने की प्रतीक्षा करने लगे। चंदेरी अभियान के लिये बाबर 9 दिसम्बर 1527 को सीकरी से रवाना हुआ। इसकी खबर मेदिनी राय को लग लग गयी थी। उन्होंने सहायता के लिये मालवा के अन्य राजाओं को संदेश भेजे और आवश्यक सामग्री एकत्र कर स्वयं को किले में सुरक्षित कर लिया। चंदेरी का यह किला पहाड़ी पर बना है। यह देश के अति सुरक्षित किलों में एक माना जाता है। बाबर और उसकी फौज रास्ते भर लूट, हत्या और बलात्कार करती 20 जनवरी 1528 को चंदेरी पहुँची। बाबर ने रामनगर तालाब के पास कैंप लगाया और दो संदेश वाहक शेख गुरेन और अरयास पठान को राजा मेदिनी राय के पास भेजा। संदेश वाहकों ने तीन संदेश दिये- एक, मुगलों की अधीनता स्वीकार करो और मुगल सूबेदार बनो। दूसरा, चंदेरी का किला खाली कर दो इसके बदले कोई दूसरा किला ले लो और तीसरा अपनी दोनों बेटियों की शादी मुगल शहजादों से कर दो। स्वाभिमानी मेदनी राय ने शर्तों को अस्वीकार कर दिया। मेदिनी राय को लगता था कि बाबर की फौज पहाड़ी न चढ़ पायेगी। लेकिन बाबर के पास तोपखाना और बारूद का पर्याप्त भंडार था। उसने एक रात में पहाड़ी को काटकर रास्ता बना लिया और किले के दरवाजे तक आ गया। दूसरी तरफ राजपूतों के पास न बारूद था न तोपखाना। उनके पास तीर-कमान, तलवार, भाला या आग के गोलों के अतिरिक्त कुछ नहीं था। वह 26 जनवरी 1528 की तिथि थी जब समर्पण के लिये बाबर का अंतिम संदेश राजा मेदिनी राय को मिला। संदेश पाकर राजा ने रणभेरी बजाने का आदेश दिया। 27 जनवरी को किले का द्वार खोलकर युद्ध हुआ पर तोपखाने के सामने राजपूत सेना टिक न सकी। युद्ध एक प्रहर भी न चल पाया। चूंकि बाहर तगड़ी घेराबंदी थी। राजा घायल हो गये। उन्हें अचेत अवस्था में किले के भीतर लाकर द्वार बंद कर दिया गया। 28 जनवरी को दिनभर बाबर का तोपखाना चंदेरी किले दीवार पर गरजता रहा। दीवार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी। महारानी मणिमाला को भविष्य का अंदाजा हो गया और वे किले के भीतर विराजे महाशिव के मंदिर में चली गईं। उनके साथ राज परिवार और अन्य क्षत्राणियां थी, जिनकी संख्या 1500 से अधिक लिखी है। सभी सती स्त्रियों ने पहले शिव पूजन किया, फिर स्वयं को अग्नि को समर्पित कर दिया। जिस समय ये देवियाँ जौहर कर रहीं थी तभी किसी विश्वासघाती ने किले का दरवाजा खोल दिया। मुगलों की फौज भीतर आ गयी। किले के भीतर यूँ भी मातम जैसा माहौल था। जिसके हाथ में जो आया उससे मुकाबला करने लगा। पर यह युद्ध नाममात्र का रहा। रातभर मारकाट हुई। यह मारकाट एकतरफा थी। हमलावरों ने किले के भीतर किसी भी पुरुष को जीवित न छोड़ा। स्त्रियों को बंदी बना लिया गया। सबेरे सारी लाशें एकत्र की गयीं। उनके शीश काटे गये, काटे गये सिरों का ढेर लगाया गया और उस पर मुगलों का ध्वज फहराया गया। बाबर चंदेरी में पंद्रह दिनों तक रहा। किले में खजाने की तलाश की गयी। आसपास जहाँ तक बन पड़ा लूटपाट की गयी।

कितनी जल्दी एयर इंडिया का कायाकल्प करेगा टाटा समूह

-आर.के. सिन्हा-

एयर इंडिया पर आज 27 जनवरी से टाटा ग्रुप का नियंत्रण हो जाएगा। पहले कहा जा रहा था कि एयर इंडिया 23 जनवरी को ही टाटा ग्रुप को सौंप दी जाएगी। अब टाटा ग्रुप के ऊपर यह बड़ी चुनौती है कि इसे कैसे विश्वस्तरीय एयरलाइंस में तब्दील करे। एयर इंडिया की सर्विस गुजरे दशकों से लगातार बद से बदतर होती रही थी। इसके खर्चे बढ़ते जा रहे थे और कमाई घट रही थी। इसलिए टाटा ग्रुप को इसे पटरी पर लाने के लिए अब सख्त और त्वरित ठोस प्रयास करने होंगे। एयर इंडिया को बाबूगिरी ने तबाह कर दिया था। टाटा ग्रुप के खरीदने के बाद भी इसकी सर्विस में सुधार नहीं हुआ। यहां के स्टाफ के कामकाज का स्तर और उर्जा को देखकर साफ समझ आ जाता है कि इनमें जंग लग चुकी है। जहां पर नौकरी सुरक्षित और पगार का मिलना तय होता है, वहां स्वाभाविक रूप से गड़बड़ शुरू हो जाती है। एयर इंडिया के साथ भी यही हुआ। मुझे बीते कुछ समय के दौरान एयर इंडिया की फ्लाइट से मुंबई, बनारस, पटना, लखनऊ वगैरह आने-जाने का मौका मिला। सब जगहों में हालात बेहद लचर नजर आए। फ्लाइट के दौरान पहले की भांति घटिया नाश्ता और भोजन, मुसाफिरों को दिया गया। कहना न होगा कि इन सब कारणों के चलते ही एयर इंडिया को हर साल सैकड़ों करोड़ का घाटा होता रहा। क्योंकि मुसाफिरों ने अन्य एयरलाइंस में जाना शुरू कर दिया। आप जानते हैं कि टाटा ग्रुप कई वर्षों से एयर इंडिया के अधिग्रहण की कोशिश कर रहा था। दरअसल पहले सरकार एयर इंडिया में कुछ हिस्सेदारी बेचना चाह रही थी। लेकिन जब सरकार ने पूरी तरह टाटा समूह में अपनी हिस्सेदारी बेचने का निर्णय लिया तब टाटा ने 18 हजार करोड़ रुपये में एयर इंडिया को खरीद लिया। टाटा समूह के पास विस्तारा और एयर एशिया एयरलाइंस पहले से मौजूद है। जाहिर है, टाटा ग्रुप के पास एयर इंडिया में जान फूंकने की अवश्य ही कोई ठोस कार्य योजना होगी। अगर यह बात न होती तो वह इसे खरीदता ही क्यों। टाटा ग्रुप के पूर्व चेयरमैन और मेनेटर रतन टाटा और चेयरमैन एन.चंद्रशेखर अपने समूह के आला अफसरों के साथ बॉम्बे हाउस में बैठकर अवश्य ही एयर इंडिया को नए सिरे से खड़ा करने के बारे में योजनाएं बना रहे होंगे। बॉम्बे हाउस में टाटा समूह का हेड आफिस है। इसमें ही टाटा समूह के नमक से लेकर स्टील क्षेत्र की कंपनियों के सभी प्रमुख बैठते हैं। टाटा समूह के आला अफसरों को समझ लेना होगा कि भले ही टाटा समूह का ब्राण्ड भारत और भारत के बाहर बहुत सम्मान की नजरों से देखा जाता है, पर उसे एयर इंडिया को बेहतरीन एयरलाइंस बनाने के लिए स्टाफ को मोटिवेट करने से लेकर नई टेक्नालॉजी का सहारा लेना होगा। अब एयर इंडिया का सारा इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी (आईटी) संबंधी काम टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस) कर सकती है। टीसीएस दुनिया की सबसे खास आईटी सेक्टर की कंपनियों में शुमार होती है। उसकी तरफ से संसार की कई मशहूर एयरलाइंस को सेवाएं पहले से ही दी जा रही हैं। टीसीएस का त्रैमासिक मुनाफा 18 हजार करोड़ रुपए से ऊपर आ रहा है। तो आईटी के मोर्चे पर तो एयर इंडिया को टीसीएस की सेवाएं आसानी से मिल जाएंगी। यह तो उसके घर का मामला ही माना जा सकता है। कोई भी उद्योग, खासतौर पर सर्विस सेक्टर, तब ही गति पकड़ सकता है जब वहां का स्टाफ भी कमर कस ले। इसके बिना तो बात नहीं बनेगी। एयर इंडिया के ग्राउंड और फ्लाइट के दौरान रहने वाले स्टाफ तो देखकर समझ में आता है कि उन्हें अपने कस्टमर्स के हितों को लेकर कोई गंभीरता या संवेदनशीलता का भाव नहीं है। वे बस अपनी ड्यूटी निभा रहे हैं। मुझे खुद देखकर अफसोस हुआ कि टाटा समूह के अधिग्रहण के बाद भी इसके पुरुष मुलाजिम तीन-चार दिनों की बढ़ी हुई दाढ़ी के साथ काम कर रहे हैं। फ्लाइट के दौरान मुसाफिरों को कायदे से सूचनाएं भी नहीं दी जा रही थीं। इनके विपरीत निजी एयर लाइनों के स्टाफ में कमाल की उर्जा और उत्साह देखने में आता है। समझ आता है कि वे किसी खास लक्ष्य को हासिल करने के लिए मेहनत कर रहे हैं। एयर इंडिया के पुराने स्टाफ को अब अपने पुराने तौर-तरीकों को छोड़ना ही होगा। अब वे इस तरह की उम्मीदें पालना छोड़ दें कि उनके ऊपर उनसे छोटी उम्र का कोई अफसर नहीं आएगा। अब मेरिट का दौर है तो वही चलेगा। अब जो अपने को साबित करेगा वह ही पदोन्नति भी हासिल करेगा।

मतदाताओं को रिश्वत के रसगुल्ले

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

भारत के लोगों को गर्व होना चाहिए, क्योंकि यहां की सरकारें तख्ता-पलट से नहीं, चुनावों से उलटती और पलटती रहती हैं। इसीलिए भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र कहलाता है। यह बात अलग है कि चुनाव उम्मीदवारों के गुण-दोष पर नहीं होते बल्कि उनकी जात, मजहब और भाषा के आधार पर होते हैं। बहुत कम चुनाव राष्ट्रीय मुद्दों को लेकर हुए हैं लेकिन अब हमारे लोकतंत्र को अपंग बनानेवाला एक नया प्रपंच भी शुरू हो गया है। वह है- मतदाताओं को बाकायदा रिश्वत देने का प्रपंच। कोई पार्टी ऐसी नहीं है, जो मतदाताओं के सामने तरह-तरह की चूसनियां नहीं लटकातीं। एक पार्टी यदि डाल-डाल चलती है तो उसकी प्रतिद्वंदी पार्टी पात-पात चलने लगती है। ये पार्टियां जन-सामान्य के लिए लाभकारी कानून बनाने का वायदा करने की बजाय जनता के कुछ वर्गों, जातियों, समूहों आदि को लालच में फंसाने के लिए ऐसे वायदों की घोषणा कर देती हैं, जो कभी पूरे हो ही नहीं सकते। यदि वे उन्हें पूरा करने चलें तो उन्हें पूरा करने में पूरा बजट ही पूरा हो जाए।

पार्टियों की यह प्रवृत्ति पिछले कुछ चुनावों में बहुत ज्यादा बढ़ती गई है। इस वक्त पांच राज्यों में चुनाव हो रहे हैं, उनमें तो ऐसे फर्जी वायदों का अंबार लगा हुआ है। यदि आम आदमी पार्टी कहती है कि 18 वर्ष से अधिक आयु की हर महिला को वह एक हजार रु. महीना दिया करेगी तो अकालियों ने नहले पर दहला मार दिया। उन्होंने हर महिला को दो हजार रु. देने की घोषणा कर दी। कांग्रेस तो और भी आगे निकल गई। उसने महिला मतदाताओं को रिझाने के लिए 2 हजार रु. में साल के आठ गैस सिलेंडर भी जोड़ दिए। इसी तरह पंजाब की छात्राओं को अपनी परीक्षाएं पास करने पर पांच, दस, पंद्रह और 20 हजार रु. के तोहफे उसने घोषित कर दिए। उत्तर प्रदेश में भी रिश्वतों की बहार बहने लगी है। 12 वीं कक्षा की हर छात्रा को स्मार्ट फोन और हर स्नातिका को एक स्कूटी देने की घोषणा कर दी गई है। कांग्रेस ने इनके अलावा हर परिवार को दस लाख रु. तक के मुफ्त इलाज और मुफ्त बस-यात्रा का भी वायदा कर दिया है। समाजवादी पार्टी उससे भी आगे निकल गई है। उसने भी अपने मतदाताओं को पटाने के लिए इतनी चूसनियां लटका दी हैं कि उनका वर्णन करना कठिन है। सभी दलों की इसी पैंतरेबाजी का मुकाबले करने के लिए भाजपा भी कोई न कोई दांव जरूर चलेगी।

यह भ्रष्टाचार का छद्म तरीका है लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने एक याचिका के तहत इस मुद्दे को जमकर उठाया है। उन्होंने चुनाव आयोग को सफाई देने के लिए कहा है और उससे पूछा है कि आदर्श आचार संहिता का क्या वह उल्लंघन नहीं है? 2013 में सुब्रहमण्यम बालाजी मामले में भी अदालत ने कड़ा रुख अपनाया था लेकिन चुनाव आयोग अब सख्ती क्यों नहीं बरत रहा है? वास्तव में नेताओं को अपने भाषणों में और पार्टियों को अपने घोषणा-पत्रों में सर्व सामान्य के कल्याण की घोषणाएं करनी चाहिए, न कि मतदाताओं के सामने रिश्वत के रसगुल्ले लटकाने चाहिए।

हम भारत के लोग

-शिव प्रकाश-

संविधान स्वीकृति के बाद हम गणतांत्रिक देश बन गये। देश की भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निमार्ताओं ने भविष्य में देश के सम्मुख आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में सक्षम संविधान देश को दिया। संविधान की प्रस्तावना का प्रारम्भ करते हुए उन्होंने 'हम भारत के लोग' कहा। हम भारत के लोग अर्थात अब हम स्वतंत्र सम्प्रभुता सम्पन्न गणतंत्र हैं। अब हम किसी विदेशी सत्ता के अधीन नहीं हैं। हमारा संविधान भी किसी विदेशी सत्ता द्वारा निर्देशित एवं निर्मित नहीं है। यह संविधान हमारे प्रतिनिधियों द्वारा अर्थात हमने ही बनाया है। इसका अर्थ हमारे द्वारा, हमारे लिए जिसको हम स्वीकार अथवा आत्मार्पित कर रहे हैं। 'हम भारत के लोग' देश के स्वतंत्र होते समय लगभग 40 करोड़, जो अब बढ़कर लगभग 138 करोड़ हो गये हैं। अब हम ही अपने भाग्य के निमार्ता हैं। प्राचीन समय से अपने देश में एक कहावत प्रचलित है कि 'यथा राजा तथा प्रजा'। स्वतंत्रता से पूर्व हमारे देश में राजतंत्र था। राजपरिवार से राजा चुना जाता था। राजा की नीतियों का अनुसरण प्रजा के करने के कारण 'यथा राजा तथा प्रजा' की यह कहावत प्रचलित हुई होगी। स्वतंत्रता के पश्चात हमने लोकतंत्र स्वीकृत किया जिसके परिणाम स्वरूप जनता के वोट से जन प्रतिनिधि चुने जाने लगे। चुने हुए जनप्रतिनिधियों के संख्या बल से बहुमत प्राप्त दल, सरकार का गठन करता है। अतः अब हम अपना प्रतिनिधि स्वयं चुनते हैं। इस कारण जैसा चयन हम करेंगे वैसा हमारा प्रतिनिधि होगा। इसलिए कहावत को ऐसा भी कहा जा सकता है कि 'यथा प्रजा तथा राजा'। इस कारण देशहित का विचार करके मतदान करने वाला समाज गढ़ना प्रमुख कार्य देश के अग्रणी लोगों का है। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने इस कार्य को 'लोकमन संस्कार' कहा है। जब हम 'हम भारत के लोग' सम्बोधन करते हैं तब देश की 138 करोड़ जनसंख्या से इसका सन्दर्भ जुड़ता है। लेकिन 138 करोड़ भारतीयों का मन एवं संस्कार और संस्कार के आधार पर व्यवहार कैसा है, इसका भी विचार करना आवश्यक है। हिमालय से सागर, गुजरात से मणिपुर अर्थात उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम विशाल 38.87 लाख वर्ग किलोमीटर विस्तृत भू-भाग वाला भारत देश है। भौगोलिक, जलवायु, मौसम आदि के आधार पर अनेक प्रकार की विविधता के दर्शन यहाँ पर होते हैं। भाषा के सन्दर्भ में कहा जाता है कि 'कोस-2 पर बदले पानी, चार कोस पर बानी'।

कैप्टन और सिद्धू की तकरार के मायने

-कुलदीप चंद अग्निहोत्री-

जैसे-जैसे पंजाब में मतदान की तारीख नजदीक आती जा रही है, वैसे-वैसे विभिन्न राजनीतिक दलों में तल्खी बढ़ती जा रही है। भाषा से नियंत्रण हटता जा रहा है और मामला गली-बाजार की लड़ाई के स्तर तक पहुंच रहा है। किसान समाज मोर्चा ने अभी अपने सभी प्रत्याशी खड़े नहीं किए हैं और वे सीटों को लेकर अभी आपस में कमरे के भीतर ही लड़-झगड़ रहे हैं। जब उनके सभी प्रत्याशी भी मैदान में आ जाएंगे तो यकीनन यह आतिशबाजी और तेज और मारक हो जाएगी। फिलहाल तो शाब्दिक युद्ध कैप्टन अमरेंद्र सिंह, सुखबीर सिंह बादल, भगवंत मान और नवजोत सिंह सिद्धू के बीच चल रहा है। कैप्टन को इस बात की दाद देनी पड़ेगी कि वे उत्तेजना के बावजूद वाणी पर नियंत्रण रखने में सफल रहते हैं। लेकिन उनका वाणी पर नियंत्रण ही शायद कांग्रेस पर भारी पड़ रहा है। यदि वे भी सिद्धू की तरह गाली गलौज पर उतर आते तब शायद

सोनिया कांग्रेस को इतनी चिंता न होती। वे गाली गलौज पर न उतर कर, बड़े ही संयम से कुछ पुराने तथ्यों को सार्वजनिक कर रहे हैं जो सोनिया पर केवल पंजाब में ही नहीं, बल्कि पूरे भारत में भारी पड़ रहे हैं। पिछले दिनों कैप्टन अमरेंद्र सिंह ने बहुत ही सधे हुए शब्दों में खुलासा किया कि नवजोत सिंह सिद्धू को मंत्रिमंडल में लेने के लिए उन्हें पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान के नजदीकी मध्यस्थ का मैसेज आया था। मैसेज में यहां तक कहा गया था कि फिलहाल आप सिद्धू को मंत्री बना दें, यदि बाद में वह आपके हिसाब से ठीक न रहे तो आप उसे हटा सकते हैं। कैप्टन का कहना है कि उन्होंने वे मैसेज सोनिया गांधी को अग्रेषित कर दिए थे। सोनिया गांधी ने रहस्यमय चुप्पी धारण किए रखी, लेकिन उनकी बेटी ने जरूर उत्तर दिया कि सिद्धू पागल है, उसे ऐसे मैसेज नहीं करवाने चाहिए। इसके बाद मामला ठप्प हो गया।

लेकिन शायद इन मैसजों के आदान-प्रदान के बाद ही नवजोत सिंह सिद्धू पाकिस्तान गया था, जहां उसने एक सार्वजनिक सभा में इमरान खान की जम कर तारीफ ही नहीं की थी बल्कि पाकिस्तान के सेना प्रमुख बाजवा का आलिंगन भी किया था। कुछ पत्रकारों ने सिद्धू की इस पूरे घटनाक्रम पर टिप्पणी लेनी चाही तो उसका उत्तर था कि मरे को क्या मारना, यानी मैं कैप्टन की किसी बात का उत्तर नहीं दूंगा क्योंकि अब उसकी कोई औकात नहीं है।

सिद्धू की नजर में कैप्टन की अब कोई औकात नहीं हो सकती, लेकिन यह घटना उस समय की है जब कैप्टन की औकात थी और सिद्धू की कोई औकात नहीं थी।

एशिया टीम बैडमिंटन चैंपियनशिप में भारतीय टीम का नेतृत्व करेंगे लक्ष्य सेन और मालविका

नई दिल्ली। इंडिया ओपन चैंपियन लक्ष्य सेन और सैयद मोदी इंटरनेशनल फाइनलिस्ट मालविका बंसोड़ 15 से 20 फरवरी तक मलेशिया के शाह आलम में खेली जाने वाली बैडमिंटन एशिया टीम चैंपियनशिप में भारतीय पुरुष और महिला टीमों का नेतृत्व करेंगे। . भारतीय बैडमिंटन संघ ने पिछले महीने चेन्नई और हैदराबाद में खेले गए दो अखिल भारतीय रैंकिंग टूनार्मेंटों में प्रदर्शन को महत्व देते हुए महाद्वीपीय टीम चैंपियनशिप के लिए एक नई टीम की घोषणा की, जिसमें दो स्पधार्ओं में प्राप्त कुल रैंकिंग अंकों के आधार पर खिलाड़ियों का चयन किया गया है। भारतीय बैडमिंटन संघ (बाई) के

सचिव अजय सिंघानिया ने एक बयान में कहा, "हम कुछ समय के लिए चयन के लिए घरेलू टूनार्मेंट पर विचार कर रहे हैं और शीर्ष - 25 विश्व रैंकिंग के सीधे खिलाड़ियों का चयन कर रहे हैं। लेकिन अधिकांश वरिष्ठ खिलाड़ी कोविड और चोट के कारण उपलब्ध नहीं है। यह टूनार्मेंट में हमारे लिए बेंच स्ट्रेंथ को उनकी छाप छोड़ने का एक अच्छा अवसर है।"

पुरुषों की टीम ने फिलीपींस के मनीला में टूनार्मेंट के पिछले संस्करण में कांस्य पदक जीता था, जबकि महिला टीम को कोविड महामारी के कारण वापस बुला लिया गया था क्योंकि अधिकांश खिलाड़ी तब यात्रा करने के लिए तैयार नहीं थे। पुरुष युगल वर्ग की अगुवाई केरल के पीएस रवि कृष्ण और उदयकुमार शंकरप्रसाद करेंगे, जिन्होंने इंडिया ओपन में ओंग यू सिन और टीओ ई यी के अनुभवी मलेशियाई संयोजन के खिलाफ अपने प्रदर्शन से प्रभावित किया। जबकि महिला युगल में अनुभवी आरती सारा सुनील और रिजा महरीन के साथ सिमरन सिंघी और खुशी गुप्ता देश का नेतृत्व करेंगी।

भारतीय टीम इस प्रकार है:

पुरुष एकल वर्ग: लक्ष्य सेन, मिथुन मंजूनाथ, किरण जॉर्ज, रघु एम।

युगल वर्ग: पीएस रवि कृष्ण/उदय कुमार शंकर प्रसाद, अम्सकरुनन हरिहरन/रुबन कुमार, डिंगकू सिंह कोंटौजम/मनजीत सिंह ख्वैराकपम।

महिला एकल वर्ग: मालविका बंसोड़, आकर्षी कश्यप, अश्मिता चालिहा, तारा शाह

युगल वर्ग: सिमरन सिंघी/खुशी गुप्ता, वी नीला/अरुबाला, आरती सारा सुनील/रिजा महरीन।

नॉक आउट चरण के लिए तैयार एफसी विमेंस एशियन कप

नई दिल्ली। एएफसी विमेंस एशियन कप इंडिया 2022 का फाइनल 6 फरवरी को खेला जाना है। इसके लिए अब मैदान तैयार हो गया है। ग्रुप स्टेज के मैचों के बाद अब क्वार्टर फाइनल मुकाबलों की बारी है। साथ ही अब साफ दिखने लगा है कि कौन सी टीमें फीफा महिला विश्व कप ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड 2023 क्वालिफिकेशन का रास्ता तय करके आगे जाएंगी। आठ बार के चैंपियन चीन, मौजूदा चैम्पियन जापान, लगातार तीन जीत के साथ क्वार्टर फाइनल में पहुंची ऑस्ट्रेलिया, एएफसी विमेंस एशियन कप 2010 का विजेता कोरिया, चीनी ताइपे, फिलीपींस, वियतनाम और थाईलैंड क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए हैं। इन सभी टीमों के मैच 30 जनवरी को तीन अलग-अलग मैदानों पर खेले जाएंगे।

इराक को हराकर ईरान ने विश्व कप में जगह बनाई

तेहरान। मेहदी तारेमी के गोल की मदद से ईरान ने इराक को एशिया क्षेत्र ग्रुप ए के मैच में 1.0 से हराकर लगातार तीसरी बार विश्व कप फुटबाल में जगह बना ली। एफसी पोर्तो के स्ट्राइकर तारेमी ने मैच का एकमात्र गोल 48वें मिनट में दागा। उन्होंने मिडफील्डर अली रजा जहांबख्श के पास पर गोल किया। ईरान ने छठी बार विश्व कप में जगह पक्की की है। कोरोना संक्रमण के बढते मामलों के बावजूद सरकार ने एक लाख की क्षमता वाले स्टेडियम में 10000 दर्शकों को प्रवेश की अनुमति दी थी जिनमें दो हजार से अधिक महिलायें थी। फीफा लंबे समय से ईरान से यह आश्वासन मांगता आया है कि महिलाओं को 2022 विश्व कप फुटबॉल के क्वालीफायर देखने की अनुमति मिलेगी।

मुल्तान ने कराची को हराकर पीएसएल की धमाकेदार शुरूआत की

कराची। गत चैम्पियन मुल्तान सुल्तांस ने पाकिस्तान सुपर लीग टी20 क्रिकेट टूनार्मेंट के पहले मैच में कराची किंग्स को सात विकेट से हरा दिया। लीग की शुरूआत पर हालांकि कोरोना का साया पड़ गया है चूंकि कई खिलाड़ी और सहयोगी स्टाफ के सदस्य पॉजिटिव पाये जाने के बाद पृथकवास में हैं। मोहम्मद रिजवान के 47 गेंद में नाबाद 52 रन की मदद से मुल्तान ने दस गेंद बाकी रहते तीन विकेट पर 126 रन बनाकर जीत दर्ज की। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका के लेग स्पिनर इमरान ताहिर ने 16 रन देकर तीन विकेट चटकाये जिसकी वजह से कराची पांच विकेट पर 124 रन ही बना सकी। कोरोना संक्रमण की वजह से पेशावर जाल्मी के वहाब रियाज और कामरान अकमल जबकि कराची के इमाद वसीम पृथकवास में हैं। स्टार हरफनमौला शाहिद अफरीदी गुरूवार को पॉजिटिव पाये गए और क्वेटा ग्लैडिएटर्स के लिये पहले चार मैच नहीं खेल सकेंगे। कराची के प्रमुख तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर भी बाजू में खिंचाव के कारण पहले मैच से बाहर थे। पहली बार कराची की कप्तानी कर रहे बाबर आजम और शरजील खान लय नहीं बना सके। मुल्तान के लिये डेविड विली और शाहनवाज दहानी ने शुरूआत में काफी किफायती गेंदबाजी की। इसके बाद ताहिर ने मध्यक्रम की बखिया उधेड़ डाली। शरजील ने 43 और बाबर ने 29 गेंद में 23 रन बनाये। कराची के चारों विदेशी बल्लेबाज नाकाम रहे।

विश्व कप क्वालीफायर : इक्वाडोर ने ब्राजील से ड्रॉ खेल, अर्जेंटीना ने चिली को हराया

साओ पाउलो। इक्वाडोर ने पांच बार के चैम्पियन ब्राजील को 1.1 से ड्रॉ पर रोककर कतर में होने वाले फुटबॉल विश्व कप में जगह बनाने की ओर अगला कदम रख दिया।

इक्वाडोर अगर अगले सप्ताह पेरू को हरा देता है तो विश्व कप के लिये क्वालीफाई कर लेगा।

वहीं एक अन्य मैच में चिली को अर्जेंटीना ने 2.1 से हराया। अब चिली को बोलिविया और ब्राजील के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करना होगा चूंकि आखिरी मैच सैंटियागो में चिर प्रतिद्वंद्वी उरूग्वे से है।

उरूग्वे ने पराग्वे को 1.0 से हराया और यह विजयी गोल लुई सुआरेज ने दागा। नये कोच डिएगो अलोंसो के साथ टीम की यह पहली जीत है। ब्राजील (36 अंक) और अर्जेंटीना (32 अंक) पहले ही विश्व कप के लिये क्वालीफाई कर चुके हैं। इक्वाडोर के 24 अंक है जो उरूग्वे से पांच अंक आगे है। कोलंबिया और पेरू के 17 अंक हैं जबकि चिली के 16 अंक है। बोलिविया के 15 अंक है जो वेनेजुएला से खेलेगी।

दक्षिण अमेरिका से विश्व कप में चार टीमों को सीधे प्रवेश मिलेगा और पांचवें स्थान की टीम अंतरराष्ट्रीय प्लेआफ खेलेगी।

म्लादेनोविच, डोडिच ने आस्ट्रेलियाई ओपन मिश्रित युगल खिताब जीता

मेलबर्न। फ्रांस की क्रिस्टीना म्लादेनोविच और क्रोएशिया के इवान डोडिच ने आस्ट्रेलिया के जैमी फोरलिस और जासन कुबलेर को 6.3, 6.4 से हराकर आस्ट्रेलियाई ओपन मिश्रित युगल खिताब जीत लिया।

म्लादेनोविच ने 2014 में डेनियल नेस्टर के साथ यह खिताब जीता था। इसके अलावा 2018 और 2020 में यहां महिला युगल खिताब भी अपने नाम किया। डोडिच ने इससे पहले दो पुरूष युगल और तीन मिश्रित युगल खिताब जीते हैं।

आईसीएलटी टी10 क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन

लखीमपुर (असम)। लखीमपुर जिला में इस्लामपुर क्रिकेट लीग (आईसीएल) क्रिकेट टूनार्मेंट का आयोजन हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी किया जा रहा है। लखीमपुर के दौलतपुर में आईसीएल 1, 2 और 3 फरवरी को आयोजित होने जा रहा है। आईसीएल के आयोजन को लेकर शनिवार को आयोजक समिति के अध्यक्ष हानिसुर अली ने कहा कि सीजन-5 का आयोजन 1, 2 और 3 फरवरी को होगा। जिसमें कुल 8 टीम हिस्सा लेंगी। 8 टीम के मालिकों ने अपनी-अपनी टीम के लिए खिलाड़ी खरीद चुके हैं। वहीं खेल के लिए मैदान में तैयारी पूरी कर ली गई है। टी10 क्रिकेट टूनार्मेंट को लेकर इलाके के क्रिकेट प्रेमियों के बीच काफी उत्साह देखा जा रहा है।

आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप क्वालीफायर ए के कार्यक्रम की घोषणा, पहले मैच में 18 फरवरी को मेजबान ओमान का सामना नेपाल से

दुबई। आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप क्वालीफायर ए, 18 फरवरी से ओमान में शुरू हो रहा है, जिसमें मेजबान टीम पहले मैच में नेपाल का सामना करेगी। टूनार्मेंट में 8 टीमों के बीच 20 मैच खेले जाएंगे। टूनार्मेंट का फाइनल 24 फरवरी को खेला जाएगा।

यह आयोजन दो वैश्विक क्वालीफायर में से एक है जो आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप 2022 के लिए योग्यता प्रक्रिया का अंतिम चरण है। टी-20 विश्व कप क्वालीफायर ए में मेजबान ओमान, बहरीन, कनाडा, जर्मनी, आयरलैंड, नेपाल, फिलीपींस और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) शामिल हैं। आयरलैंड और ओमान ने टी-20 विश्व कप 2021 के पहले दौर में बाहर होने के बाद इस टूनार्मेंट के लिए क्वालीफाई किया था, जबकि नेपाल और यूएई ने आईसीसी मेन्स टी-20 टीम रैंकिंग में अपनी रैंकिंग के माध्यम से क्वालीफाई किया। अन्य भाग लेने वाली टीमों ने पिछले वर्ष के दौरान आयोजित क्षेत्रीय क्वालीफाइंग टूनार्मेंट के माध्यम से अर्हता प्राप्त की है।

राष्ट्रीय घुड़सवारी चैम्पियनशिप शनिवार से मुंबई में

नई दिल्ली। राष्ट्रीय घुड़सवारी चैम्पियनशिप (शो जम्पिंग) मुंबई में महालक्ष्मी रेस कोर्स में एमेच्योर राइडर्स क्लब में शनिवार से शुरू होगी। भारतीय घुड़सवारी महासंघ (ईएफआई) ने शुक्रवार को इसकी घोषणा की।

ईएफआई ने एक विज्ञप्ति में कहा कि 14 वर्ष और इससे अधिक उम्र वाले एथलीट सात दिवसीय प्रतियोगिता में हिस्सा लेने योग्य होंगे।

बेंगलुरू, चेन्नई, दिल्ली, कोलकाता और मेजबान मुंबई के एथलीट इस सालाना होने वाली प्रतियोगिता में पांच वर्गों में हिस्सा लेंगे।

कोविड-19 के मामले बढ़ने के बावजूद आईसीसी महिला विश्व कप के कार्यक्रम या स्थल में कोई बदलाव नहीं

दुबई। आईसीसी महिला वनडे विश्व कप की मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) आंद्रिया नेल्सन ने शुक्रवार को कहा कि मेजबान देश न्यूजीलैंड में हाल में कोविड-19 के वैरिएंट ओमिक्रोन के फैलने के बावजूद टूनार्मेंट के कार्यक्रम या स्थलों की संख्या में कोई बदलाव नहीं होगा। महिला विश्व कप का आयोजन चार मार्च से न्यूजीलैंड में कराया जाना है जिसमें टूनार्मेंट के शुरूआती मैच में मेजबान का सामना वेस्टइंडीज से होगा। न्यूजीलैंड में हालांकि हाल में कोविड-19 के मामलों में बढ़ोतरी आयी है जिससे कई पाबंदियां भी लगायी गयी हैं। नेल्सन ने कहा, हम यहां पिछले कुछ समय से 2022 में विश्व कप की मेजबानी की तैयारी कर रहे हैं जिसे पहले 2021 में कराया जाना था। हम निर्धारित समय के अनुसार ही चल रहे हैं और तौरंगा में शुरूआती मैच से 35 दिन और क्राइस्टचर्च में हेगले ओवल में फाइनल से 66 दिन दूर हैं। उन्होंने शुक्रवार की सुबह चुनिंदा पत्रकारों के ग्रुप से कहा, पहली बात तो टूनार्मेंट का कार्यक्रम वही है और जिसमें न्यूजीलैंड में कई स्थल पर मैच खेले जाने हैं। उन्होंने कहा, हम जैव सुरक्षित माहौल के बारे में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के साथ काम कर रहे हैं। लेकिन टूनार्मेंट योजनानुसार पूरे देश में ही आयोजित किया जायेगा। न्यूजीलैंड क्रिकेट ने गुरूवार को कोविड-19 संक्रमण के जोखिम को कम करने के लिये कुछ पुरूष और महिला टूनार्मेंट में कुछ बदलाव की घोषणा की थी ताकि टीमों को ज्यादा यात्रा नहीं करनी पड़ें। पर महिला विश्व कप के लिये कोई बदलाव नहीं किया जायेगा जिसके मैच छह स्थल तौरंगा, डुनेडिन, हैमिल्टन, वेलिंगटन, ऑकलैंड और क्राइस्टचर्च में ही खेले जायेंगे।

दो चरणों में होगा रणजी ट्रॉफी का आयोजन, जून में खेला जाएगा नॉकआउट चरण

मुंबई। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने रणजी ट्रॉफी को दो चरणों में कराने का फैसला किया है। 33 टीमों वाले इस टूनार्मेंट का पहला चरण फरवरी के दूसरे हफ्ते से शुरू होगा। जबकि नॉकआउट चरण जून में खेले जाएंगे। टूनार्मेंट का पहला फेज जो कि आईपीएल के आगाज से पहले खेला जा रहा है, वो करीब एक महीने लंबा होगा। यानी ये फरवरी से मार्च तक खेली जाएगी। बीसीसीआई सचिव जय शाह ने एक आधिकारिक बयान में कहा, 'बोर्ड ने इस सीजन में रणजी ट्रॉफी दो चरणों में कराने का फैसला किया है। पहले चरण में, हम लीग चरण के सभी मैचों को पूरा करने की योजना बना रहे हैं, जबकि नॉकआउट जून में आयोजित होंगे।।' शाह ने कहा, "मेरी टीम महामारी के कारण होने वाले किसी भी प्रकार के स्वास्थ्य जोखिम को कम करने के लिए मिलकर काम कर रही है, साथ ही साथ एक अत्यधिक प्रतिस्पर्धी रेड-बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता भी सुनिश्चित कर रही है। रणजी ट्रॉफी हमारी सबसे प्रतिष्ठित घरेलू प्रतियोगिता है, जो भारतीय क्रिकेट को हर साल एक उत्साही प्रतिभा पूल प्रदान करती रही है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम इस प्रमुख आयोजन के हितों की रक्षा के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएं।" गौरतलब है कि कोरोना के चलते रणजी ट्रॉफी का आयोजन पिछले साल भी नहीं हो सका था। इस साल इसे 13 जनवरी से खेला जाना था। लेकिन आयोजन में जब 10 दिन शेष रह गए थे, तब कोरोना को लेकर बिगड़े हालात को देखते हुए बीसीसीआई ने इसे टाल दिया था।

विदित गुजराती ने दुनिया के नंबर एक शतरंज खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन को ड्रॉ पर रोका

नई दिल्ली। भारत के शतरंज खिलाड़ी विदित गुजराती ने टाटा स्टील मास्टर्स के 11वें दौर में दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन को ड्रॉ पर रोक दिया। हालांकि, विदित गुजराती के खिलाफ स्पष्ट जीत से चूकने के बावजूद कार्लसन ने अपनी शीर्ष स्थिति बरकरार रखी। वहीं, अनीश गिरी को अपने हमवतन जोर्डन वान फॉरेस्ट के हाथों हार का सामना करना पड़ा और वह तीसरे स्थान पर खिसक गए। मैग्नस कार्लसन ने विदित गुजराती के खिलाफ ठ्3 के साथ इतालवी खेल की कोशिश की, लेकिन भारतीय ग्रैंडमास्टर ने कार्लसन को मौका नहीं दिया। अंत में, गुजराती 11वें दौर में ड्रॉ कराने में सफल रहे। वहीं, डेनियल डुबोव पर जीत हासिल करने के बाद रिचर्ड रैपोर्ट मौजूदा स्टैंडिंग में दूसरे स्थान पर चले गए। रूसी ग्रैंड मास्टर डुबोव हालांकि इसके बाद कोरोना से संक्रमित होने के बाद टूनार्मेंट से बाहर हो गए।"

एशियाई खेल 2022 के लिए भारतीय शतरंज टीम के मेंटर बने विश्वनाथन आनंद

नई दिल्ली। अखिल भारतीय शतरंज महासंघ (एआईसीएफ) ने ग्रैंडमास्टर विश्वनाथन आनंद को 10 सितंबर से चीन के हांगझोउ में शुरू होने वाले एशियाई खेल 2022 के लिए भारतीय शतरंज टीम का मेंटर नियुक्त किया है। एक आधिकारिक विज्ञप्ति में एआईसीएफ ने कहा, "महान ग्रैंडमास्टर विश्वनाथन आनंद ने शतरंज के खेल में देश के लिए एक अलग भूमिका निभाई है। वह एशियाई खेलों 2022 के लिए टीम का मार्गदर्शन करेंगे और उनके साथ पहला सत्र अगले गुरुवार से शुरू होगा।" एशियाई खेलों 2022 के लिए एआईसीएफ ने पुरुषों और महिलाओं की टीम के लिए दस-दस संभावितों का चयन करके तैयारी पहले से ही शुरू कर दी

थी।

टीम का चयन उनकी अंतरराष्ट्रीय रेटिंग के आधार पर किया गया है और विदित गुजराती, पी हरिकृष्ण, निहाल सरीन, एसएल नारायणन, के शशिकिरन, बी अधिबान, कार्तिकेयन मुरली, अर्जुन एरिगैसी, अभिजीत गुप्ता और सूर्य शेखर गांगुली ने पुरुष टीम में जगह बनाई है। जबकि महिला टीम में के. हम्पी, डी हरिका, वैशाली आर, तानिया सचदेव, भक्ति कुलकर्णी, वंतिका अग्रवाल, मैरी एन गोम्स, सौम्या स्वामीनाथन और ईशा करावड़े को शामिल किया गया है।

अभिजीत कुंटे, दिबेयांदु बरुआ और दिनेश शर्मा की चयन समिति अप्रैल में पांच खिलाड़ियों की अंतिम सूची तय करेगी।एशियाई खेलों की शतरंज प्रतियोगिता 11 सितंबर से शुरू होगी और दो प्रारूपों में खेली जाएगी।

टाटा ओपन महाराष्ट्र : प्रजनेश और अर्जुन काधे को वाइल्डकार्ड

पुणे। भारत के प्रजनेश गुणेश्वरन और अर्जुन काधे को 31 जनवरी से 6 फरवरी तक पुणे के बालेवाड़ी स्टेडियम में होने वाले 2022 टाटा ओपन महाराष्ट्र में वाइल्डकार्ड के जरिये प्रवेश दिया गया है। प्रजनेश और अर्जुन, युकी भांबरी और रामकुमार रामनाथन के साथ टूनार्मेंट के एकल मुख्य ड्रॉ में शामिल हुए। स्थानीय खिलाड़ी अर्जुन, जिन्होंने 2020 में अपना पहला राष्ट्रीय खिताब जीता था, और 2018 एशियाई खेलों के पदक विजेता प्रजनेश ने दक्षिण पूर्व एशिया के एकमात्र एटीपी 250 टूनार्मेंट के सभी तीन संस्करणों में भाग लिया है। भारत के सबसे पुराने खेल टूनार्मेंटों में से एक बहुप्रतीक्षित टाटा ओपन महाराष्ट्र का आयोजन महाराष्ट्र स्टेट लॉन टेनिस एसोसिएशन (एमएसएलटीए) द्वारा किया जा रहा है और टाटा समूह द्वारा प्रायोजित है। टाटा ओपन महाराष्ट्र के टूनार्मेंट निदेशक प्रशांत सुतार ने कहा, "हम अर्जुन और प्रजनेश को वाइल्डकार्ड

के रूप में घोषित करते हुए खुश हैं और चार भारतीयों को मुख्य ड्रॉ में देखकर बहुत अच्छा लगा। अर्जुन पुणे से हैं और प्रजनेश भी टूनार्मेंट में लोकप्रिय नामों में से हैं। मुझे विश्वास है कि सभी भारतीय टूनार्मेंट में मजबूत शुरूआत करेंगे। हमारा लक्ष्य इस आयोजन के माध्यम से अपने खिलाड़ियों को बहुत जरूरी अवसर देना है।" विश्व के 15वें नंबर के खिलाड़ी असलान करात्सेव, गत चैंपियन जिरी वेस्ली और पूर्व युवा ओलंपिक चैंपियन कामिल मजचराजाक सहित दुनिया के शीर्ष खिलाड़ी टूनार्मेंट के आगामी चौथे संस्करण में हिस्सा लेंगे।

पीकेएल : यूपी योद्धा लड़ते हुए पुनेरी पलटन से हारा

बेंगलुरु। पीकेएल खेलने वाली जीएमआर समूह की फ्रैंचाइजी यूपी योद्धा गुरूवार रात पुनेरी पलटन से 44-38 से हार गयी। सुरेंद्र गिल यूपी योद्धा के लिए एक बार फिरसे शीर्ष स्कोरर रहे जिन्होंने 'सुपर 10' करते साहसिक खेल का प्रदर्शन करते हुए 16 रेड पॉइंट अर्जित किये। हालाँकि, खेल के अंतिम कुछ सेकंड में उनका महत्वपूर्ण मल्टीपॉइंट रेड था जिसने योद्धा को हार के बाद भी मैच से एकांत अंक अर्जित करने में मदद की। यूपी योद्धा के लिए प्रदीप नरवाल और श्रीकांत जाधव ने भी क्रमशः 6 और 5 अंक बटोरे। यूपी योद्धा अब 40 अंकों के साथ अंक तालिका में सातवें स्थान पर है।

यूपी योद्धा ने खेल के पहले कुछ सेकंड में पलटनों द्वारा सुपर रेड खाते हुए धीमी गति की शुरूआत की। थोड़ा लापरवाही से खेलने के कारण 7वें मिनट में पुनेरी पलटन ने योद्धाओं को 3-9 से पीछे कर दिया। पलटन ने अगले ही मिनट में यूपी योद्धा पर 'ऑल-आउट' करके मैच में आगे की दौड़ लगाई, जिससे स्कोरबोर्ड एक बार फॉर से पुनेरी पलटन के पक्ष में 5-13 हो गया। पहले हाफ में 5 मिनट बचे होने के साथ, श्रीकांत जादव ने नितेश कुमार और सुमित के सक्षम समर्थन के साथ अपने खेल को आगे बढ़ाया और योद्धा ने स्कोर के अंतर को कम करने के लिए वापसी करने की कोशिश की।

सुरेंद्र गिल ने एक बार फिर से चमक बिखेरी, जब उन्होंने पहले हाफ के अंतिम क्षणों में पुनेरी पलटन को 'ऑल-आउट' किया। परिणामस्वरूप योद्धा ने अंतर को और कम कर दिया और पहला हाफ स्कोरबोर्ड के साथ पलटन के पक्ष में 18-21 के साथ समाप्त हुआ।

दूसरे हाफ में यूपी योद्धा ने 25वें मिनट में 26-20 से पिछड़ते हुए जल्दी अंक गंवा दिए। क्षण भर बाद योद्धाओं को 27वें मिनट में एक बार और 'ऑल-आउट' किया गया, और अब उन्होंने खुद को स्कोरबोर्ड में 20-31 से पीछे पाया। सुरेंद्र गिल फिर से एक सुपर प्रदर्शन के साथ यूपी योद्धा की साख बचाने आए और उन्होंने एक मिनट में 8 महत्वपूर्ण अंक अर्जित किए, जिसमें एक 'सुपर रेड' और फिर पुनेरी पलटन पर 'ऑल-आउट' शामिल था जिससे आगे चलकर बढ़त 32-36 के अंतर से कम कर दिया। हालाँकि, योद्धा आसान अंक देकर अपनी गति को बनाए नहीं रख सके, जिसने उन्हें खेल में केवल दो मिनट शेष रहते हुए 34-42 पर पीछे छोड़ दिया। हालांकि, सुरेंद्र गिल ने खेल के अंतिम सेकंड में एक महत्वपूर्ण मल्टी-पॉइंट रेड के साथ फिर से कदम बढ़ाया और यूपी योद्धा के लिए हार के अंतर को 6 अंकों के भीतर रखा, जिससे उनकी टीम के लिए एक अंक अर्जित हुआ। पुनेरी पलटन द्वारा 38-44 से हराकर मैच खत्म हुआ।

मप्र के शूटर ऐश्वर्य प्रताप भारतीय टीम में चयनित

भोपाल। माह फरवरी-मार्च, 2022 में आईएसएसएफ (इंटरनेशनल शूटिंग स्पोर्ट फेडरेशन) वर्ल्ड कप का आयोजन कायरो, इजिप्ट में किया जाना है। इस प्रतियोगिता के लिए भारतीय शूटिंग टीम की 50 मीटर रायफल थ्री पोजिशन के लिए मप्र राज्य शूटिंग अकादमी के ओलम्पियन खिलाड़ी ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर का चयन किया गया है। खेल विभाग द्वारा शुक्रवार को जानकारी दी गई है कि ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर वर्ल्ड कप की पुरूष व्यक्तिगत, टीम एवं मिक्स टीम इवेन्ट में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करेंगें।

अफगानिस्तान ने श्रीलंका को हराया, अंडर 19 विश्व कप सेमीफाइनल में सामना इंग्लैंड से

कूलिज (एंटीगा)। अफगानिस्तान ने श्रीलंका को चार रन से हराकर अंडर 19 विश्व कप के सेमीफाइनल में जगह बना ली जहां उसका सामना इंग्लैंड से होगा।

टॉस हारने के बाद पहले बल्लेबाजी के लिये भेजी गई अफगानिस्तान टीम 134 रन पर आउट हो गई। इसके बाद उसके गेंदबाजों ने हालांकि शानदार प्रदर्शन करते हुए जीत की इबारत लिखी और श्रीलंका को 46 ओवर में 130 रन पर आउट कर दिया। श्रीलंका के कप्तान दुनिथ वेल्लालागे ने 61 गेंद में 34 रन बनाये और लग रहा था कि वे टीम को जीत तक ले जायेंगे लेकिन ऐसा हुआ नहीं। अब सेमीफाइनल में एक फरवरी को अफगानिस्तान का सामना इंग्लैंड से होगा। पहले बल्लेबाजी करते हुए अफगानिस्तान के सलामी बल्लेबाजों नांगेयालिया खरोटे और बिलाल सैयदी ने अच्छी शुरूआत की लेकिन ट्रविन मैथ्यू ने सैयदी को आउट करके इस साझेदारी को तोड़ा। अगले ओवर में खरोटे भी अपना विकेट गंवा बैठे। अब्दुल हादी ने 37 रन बनाकर टीम को सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाने की कोशिश की। श्रीलंका के विंजुआ रंपुल ने सिर्फ दस रन देकर पांच विकेट लिये। श्रीलंका की शुरूआत अच्छी नहीं रही और पहले ही ओवर में सलामी बल्लेबाज सादिशा राजपक्षे आउट हो गए। उसके बाद शेवोन डेनियल को भी दो के स्कोर पर बिलाल सामी ने बोल्ड कर दिया।

यूक्रेन में पुतिन के पास अब कई विकल्प हैं: ऑस्टिन

वाशिंगटन। अमेरिका के रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन ने शुक्रवार को कहा कि यूक्रेन की सीमा के निकट बड़ी संख्या में रूसी बलों को तैनात किया जा चुका है और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के पास अब कई सैन्य विकल्प हैं।

ऑस्टिन ने पेंटागन में संवाददाता सम्मेलन में कहा, हम यह नहीं मानते कि राष्ट्रपति पुतिन ने यूक्रेन के खिलाफ इन बलों का इस्तेमाल करने का अंतिम निर्णय ले लिया है, लेकिन उनके पास स्पष्ट रूप से ऐसा करने की क्षमता है। इस बीच, मॉस्को में रूस सरकार ने बताया कि पुतिन ने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों से कहा कि पश्चिमी देशों ने रूस की सुरक्षा संबंधी चिंताओं पर गौर नहीं किया।

रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा कि रूस युद्ध शुरू नहीं करना चाहता, लेकिन वह पश्चिमी देशों को उसके सुरक्षा हितों को रौंदने नहीं देगा। ऑस्टिन ने पुतिन से तनाव कम करने की अपील की। उन्होंने कहा कि वह रूस द्वारा दुष्प्रचार किए जाने पर नजर रखे हुए हैं। संवाददाता सम्मेलन में ऑस्टिन के साथ मौजूद ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टॉफ के आर्मी जनरल. मार्क मिले ने यूक्रेन के निकट तैनात रूस की सेना की गंभीर तस्वीर पेश करते हुए कहा कि केवल जमीन, वायु और जल क्षेत्र में ही बलों को तैनात नहीं किया गया है, बल्कि रूस के पास साइबर और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध की क्षमताएं भी है और उसके पास विशेष अभियान बल भी हैं। मिले ने कहा कि उन्होंने पहले कभी इतनी बड़ी संख्या में यूक्रेन की सीमा के निकट रूसी बलों की तैनाती नहीं देखी। उन्होंने पुतिन ने संघर्ष के बजाय कूटनीतिक मार्ग अपनाने की अपील की। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने बृहस्पतिवार को यूक्रेन के राष्ट्रपति को आगाह किया था कि इस बात की स्पष्ट आशंका है कि रूस फरवरी में उनके देश (यूक्रेन) के खिलाफ सैन्य कार्रवाई कर सकता है।

रूस ने यूक्रेन की सीमा के निकट 1,00,000 से अधिक सैनिकों को तैनात किया है, जिससे इस क्षेत्र में युद्ध की आशंका तेज हो गई है।

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष की रिपोर्ट: लेबनान में पढ़ाई छोड़ने को विवश एक तिहाई युवा

न्यूयार्क। लेबनान के लिए पिछला एक साल युवाओं के लिए मुसीबत भरा रहा। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष द्वारा शुक्रवार को प्रकाशित की गयी नयी रिपोर्ट में कहा गया है कि लेबनान में हर दस में चार युवाओं को पिछले एक साल की अवधि के दौरान भोजन, दवा और अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये, शिक्षा पर अपने खर्च में कटौती करनी पड़ी। इस दौरान एक तिहाई युवा अपनी पढ़ाई पूरी तरह से छोड़ने के लिये मजबूर हुए । संयुक्त राष्ट्र बाल कोष की इस नई रिपोर्ट में व्यथित कर देने वाले आंकड़े सामने आए हैं।

वर्ष 2020 में 4 अगस्त को लेबनान की राजधानी बेरूत में बंदरगाह पर हुए धमाके में भारी तबाही हुई थी। इस घटना में 200 से ज्यादा लोगों की मौत हो गयी थी, हजारों लोग घायल हुए और बड़ी संख्या में घर क्षतिग्रस्त हुए थे। रिपोर्ट के मुताबिक इस घटना के बाद देश को आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। देश में बच्चे स्कूल छोड़ने को विवश हैं। उन्हें जीवित रहने व परिवार के गुजर-बसर के लिए बेहद कम वेतन में अनियमित रोजगार अपनाना पड़ रहा है। रिपोर्ट का दावा है कि लेबनान के 31 प्रतिशत युवा शिक्षा, रोजगार या किसी प्रकार के प्रशिक्षण का हिस्सा नहीं हैं। स्कूल छोड़ने की गवाही शैक्षणिक संस्थानों के आंकड़े दे रहे हैं। जहां वर्ष 2020-21 में पंजीकरण 60 प्रतिशत था, जो अब घटकर 43 प्रतिशत रह गया है। इस कारण पहले से ही कम रोजगार के अवसरों में प्रतिस्पर्द्धा बढ़ रही है।

संरा परिषद को म्यांमा को गृह युद्ध से बचाने की कोशिश करनी चाहिए : चीन

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र में चीन के राजदूत झांग जुन ने शुक्रवार को कहा कि संघर्षग्रस्त म्यांमा में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का प्राथमिक उद्देश्य उसे और हिंसा तथा गृह युद्ध की स्थिति से बचाना होना चाहिए। म्यांमा में सुरक्षा परिषद के दक्षिणपूर्व एशियाई देशों के 10 सदस्यीय संघ और संयुक्त राष्ट्र के नए राजदूतों से बंद कमरे में हुई बैठक के बाद झांग जुन ने उम्मीद जतायी कि उनके तथा अन्य लोगों के प्रयासों से स्थिति को शांत किया जा सकता है। गौरतलब है कि करीब एक साल पहले एक फरवरी 2021 को म्यांमा की सेना ने आंग सान सू ची की निर्वाचित सरकार से सत्ता छीन ली थी। असिस्टेंस एसोसिएशन फॉर पॉलिटिकल प्रिजनर्स द्वारा एकत्र किए गए आंकड़ों के अनुसार, इसके बाद देशभर में हुए प्रदर्शनों में सुरक्षाबलों के साथ झड़प में 1,400 से अधिक नागरिक मारे गए। दक्षिणपूर्व एशियाई देशों के क्षेत्रीय समूह आसियान ने म्यांमा को संकट से उबारने के लिए मध्यस्थ की भूमिका निभाने का प्रस्ताव रखा है। चीन के राजदूत ने कहा कि उनके देश का मानना है कि आसियान को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। अक्टूबर में कंबोडिया ने आसियान की अध्यक्षता संभाली और दिसंबर में प्रधानमंत्री हुन सेन ने देश के विदेश मंत्री प्राक सोकखोन को म्यांमा के लिए क्षेत्रीय समूह का दूत नियुक्त किया। हुन सेन सेना के सत्ता छीनने के बाद खुद म्यांमा गए और ऐसा करने वाले वह पहले विदेशी नेता बने। झांग ने शुक्रवार को कहा कि बीजिंग हुन सेन द्वारा किए गए प्रयासों का स्वागत करता है और उन्होंने कंबोडियाई प्रधानमंत्री की यात्रा को बहुत अच्छा, बहुत सार्थक बताया और कहा कि हमने उन्हें और प्रयास जारी रखने के लिए कहा है। चीनी राजदूत ने कहा कि सोकखोन ने शुक्रवार को परिषद को बताया कि सदस्य देशों को म्यांमा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विशिष्ट राजनीतिक संरचना और उस संरचना में सेना द्वारा निभायी जाने वाली भूमिका को समझना होगा और केवल उसी के आधार पर हम कोई समाधान निकाल सकते हैं। उन्होंने कहा कि चीन नूलीन हेजर को म्यांमा के लिए संयुक्त राष्ट्र का नया विशेष दूत नियुक्त किए जाने का भी स्वागत करता है।

..तो केवल चीनी कंपनियों को मिलेगा पाकिस्तान के 5जी नेटवर्क का फायदा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान और चीन के संबंधों में एकाधिकार और वर्चस्व का भाव तेज हो रहा है। पाकिस्तान अब चीन के साथ ऐसे समझौते की तैयारी में है, जिसके तहत पाकिस्तान के 5जी नेटवर्क का फायदा सिर्फ चीनी कंपनियों को ही मिलेगा। पाकिस्तानी मीडिया में सरकार की इस तैयारी को लेकर सवाल खड़े किये जा रहे हैं।पाकिस्तान अगले वर्ष तक देश में 5जी मोबाइल सेवाएं लांच करने की तैयारी कर रहा है। पाकिस्तान टेलीकम्युनिकेशन अथॉरिटी की रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान ने देश में इंटरनेट के 5जी नेटवर्क को लांच करने की पूरी तैयारी कर ली है। इस बाबत बनी कार्ययोजना के अनुसार अगले वर्ष यानी 2023 में पाकिस्तान में 5जी नेटवर्क की सेवाएं चालू करने का लक्ष्य है। बीते दो वर्षों में कोविड आपदा के कारण पाकिस्तान में इंटरनेट आधारित सेवाओं में खासी वृद्ध हुई है। अब इसे 5जी नेटवर्क से विस्तार देने की तैयारी है। अगले वर्ष तक स्पेक्ट्रम आवंटन के लिए बोली लगाने का प्रस्ताव किया गया है। इस काम में पाकिस्तान की सर्वाधिक मदद चीन कर रहा है। इस मदद के बदले अब चीन ने पाकिस्तान की 5जी सेवाओं में एकाधिकार कायम करने की तैयारी की है। पाकिस्तानी मीडिया के अनुसार पाकिस्तान जल्द ही चीन के साथ 5जी सेवाओं पर विशेष समझौता करने जा रहा है।

अमेरिका-कनाडा सीमा के पास मृत मिले भारतीय परिवार की पहचान हुई

न्यूयॉर्क/टोरंटो। अमेरिका-कनाडा सीमा के पास मृत मिले चार भारतीय नागरिकों के परिवार की पहचान हो गई है। कनाडा के अधिकारियों ने बताया कि परिवार कुछ समय से देश में था और उन्हें कोई सीमा पर ले गया था। मामला मानव तस्करी का प्रतीत होता है।

मैनिटोबा की रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस ने कहा कि मृतकों की पहचान जगदीश बलदेवभाई पटेल (39), वैशालीबेन जगदीशकुमार पटेल (37), विहंगी जगदीशकुमार पटेल (11) और धार्मिक जगदीशकुमार पटेल (3) के तौर पर हुई है। ये सभी एक ही परिवार के सदस्य थे, जो 19 जनवरी को कनाडा-अमेरिका सीमा से लगभग 12 मीटर दूर मैनिटोबा के इमर्सन के पास मृत मिले थे। अधिकारियों ने पहले बताया था कि परिवार में एक वयस्क पुरुष, एक वयस्क महिला, एक किशोर और एक शिशु शामिल हैं, लेकिन अब मृतकों में एक किशोर की जगह किशोरी के होने की बात सामने आई है। कनाडा के अधिकारियों ने मृतकों की पहचान की पुष्टि की और 26 जनवरी को शवों का पोस्टमार्टम पूरा किया गया। रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस (आरसीएमपी) ने बृहस्पतिवार को एक बयान में बताया कि मैनिटोबा के मुख्य चिकित्सा परीक्षक के कार्यालय ने पुष्टि की है कि मौत ठंड की चपेट में आने से हुई।

कनाडा के ओटावा में स्थित भारत के उच्चायोग ने एक प्रेस विज्ञप्ति में मृतकों की पहचान की पुष्टि की और बताया कि उनके परिवार को घटना की जानकारी दे दी गई है।

टोरंटो में भारत का महावाणिज्य दूतावास मृतक के परिवार के सम्पर्क में है और सभी वाणिज्यि स्तर की सहायता प्रदान की जा रही है। उसने एक बयान में कहा, उच्चायोग पीड़ितों के परिवार और दोस्तों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता है। आरसीएमपी ने पटेल परिवार के 12 जनवरी 2022 को टोरंटो पहुंचने और वहां से 18 जनवरी के आसपास इमर्सन जाने की पुष्टि भी की है। आरसीएमपी ने बयान में कहा, मौके से कोई वाहन बरामद नहीं हुआ है, जिससे प्रतीत होता है कि कोई परिवार को सीमा तक लाया था और फिर वहीं छोड़कर चला गया। उसने कहा, कनाडा में उनकी गतिविधियों और अमेरिका में जो गिरफ्तारी हुई है, उससे यह मामला मानव तस्करी का लगता है। टोरंटो में भारतीय उच्चायोग और भारतीय वाणिज्य दूतावास इस घटना की जांच के सभी पहलुओं पर कनाडा के अधिकारियों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

चीन की मदद से पाकिस्तान में बनेगा अंतरिक्ष केंद्र

बीजिंग। आर्थिक बदहाली से जूझ रहा पड़ोसी पाकिस्तान लगभग हर चीज के लिए चीन पर निर्भर नजर आ रहा है। चीन के सहयोग से पाकिस्तान का अंतरिक्ष कार्यक्रम को आगे बढ़ाया जा रहा है। इसके तहत चीन और अधिक उपग्रह प्रक्षेपित करने सहित इस्लामाबाद के साथ अंतरिक्ष सहयोग बढ़ाने की योजनाओं की शुक्रवार को घोषणा की है।

"चीन के अंतरिक्ष कार्यक्रमः 2021 परिप्रेक्ष्य" शीर्षक वाले श्वेत पत्र में पाकिस्तान का कई बार जिक्र किया गया। इसे स्टेट काउंसिल या सेंट्रल कैबिनेट ने जारी किया है।

इसमें चीन के बढ़ते अंतरिक्ष उद्योग के लिए भविष्य में उसके विस्तार की योजनाओं को रेखांकित किया गया है। चीन ने चंद्रमा और मंगल के लिए अपना अभियान सफलतापूर्वक पूरा किया है।

शुक्रवार को जारी श्वेत पत्र में कहा गया है कि चीन पाकिस्तान के लिए संचार उपग्रह विकसित करने और पाकिस्तान अंतरिक्ष केंद्र के निर्माण में सहयोग करने को प्राथमिकता देगा। चीन अभी खुद का अंतरिक्ष स्टेशन बना रहा है, जिसके इस साल पूरा हो जाने की उम्मीद है।

श्वेत पत्र में कहा गया है कि चीन अगले पांच वर्षों में और अधिक अंतरिक्ष विज्ञान खोज करेगा। इसके साथ ही पाकिस्तान अब हर समस्या और मुश्किल के हालात में चीन की तरफ टकटकी लगाकर देखने लगा है।

बंदूक के साथ शांति चाहता है रूस, यूक्रेन पर फरवरी में हमला संभव: अमेरिका

मास्को। अमेरिका ने रूस पर बंदूक के साथ शांति करने का आरोप लगाया है। अमेरिका के मुताबिक रूस कहता है कि वो युद्ध नहीं चाहता है, लेकिन यूक्रेन की सीमाओं पर एक लाख से अधिक सैनिकों का जमावड़ा एक नए जंग की तरफ इशारा कर रहे हैं। मास्को में अमेरिकी राजदूत जॉन सुलिवन ने शुक्रवार को कहा कि अमेरिका के साथ वार्ता में रूस ने "टेबल पर एक बंदूक" रखी हुई है।

सुलिवन ने हजारों रूसी सैनिकों की तैनाती को "असाधारण" बताया और कहा कि इसे एक सामान्य सैन्य अभ्यास नहीं माना जा सकता है। सुलिवन ने संवाददाताओं से कहा कि यह तब बराबरी की बात होती है जब हम और आप चर्चा या बातचीत कर रहे होते हैं। लेकिन अगर मैं मेज पर बंदूक रखता हूं और कहता हूं कि मैं शांति चाहता हूं, तो यह धमकी होती है, और हम अब यही देख रहे हैं।

उन्होंने कहा कि हमें उम्मीद है कि रूसी सरकार अपने वचन पर खरी उतरे, और यूक्रेन पर आक्रमण करने की योजना न बनाए। लेकिन तथ्य बताते हैं कि उसके पास ऐसा करने की वर्तमान क्षमता है।

रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने शुक्रवार को पहले रूसी रेडियो स्टेशनों को बताया कि मास्को युद्ध की मांग नहीं कर रहा था। रूसी अधिकारियों का कहना है कि संकट टालने के लिए बातचीत अब भी हो सकती है। हालांकि यूक्रेन की सीमा पर रूस ने सैनिकों का जमावड़ा लगा रखा है।

सुलिवन ने कहा कि वाशिंगटन अब अमेरिका और नाटो द्वारा लिखित दस्तावेजों पर रूस की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा कर रहा है। उनके मुताबिक इन दस्तावेजों में यूक्रेन संकट से निपटने के लिए एक राजनयिक मार्ग रखा गया है। इस बीच अमेरिकी राष्ट्रपति ने फरवरी में यूक्रेन पर हमले की आशंका जताई है।

व्हाइट हाउस की राष्ट्रीय सुरक्षा प्रवक्ता एमिली होर्नेन ने बताया कि राष्ट्रपति बाइडेन ने कहा है कि इस बात की स्पष्ट आशंका है कि रूस फरवरी में यूक्रेन पर चढ़ाई करेगा। उन्होंने यह सार्वजनिक रूप से कहा कि हम इसकी चेतावनी कई महीनों से दे रहे हैं।

जर्मनी ने जासूसी से जुड़े रूस के एक राजनयिक को किया निष्कासित : खबर

बर्लिन। जर्मनी की सरकार ने रूस के एक राजनयिक को निष्कासित कर दिया है। इस राजनयिक के देश में जासूसी के एक मामले से जुड़े होने का पता चला है, जिसके बाद यह कार्रवाई की गयी।

जर्मनी की साप्ताहिक समाचार पत्रिका ह्यडेर स्पीगलह्ल ने शुक्रवार को अपनी खबर में यह जानकारी दी।

विदेश मंत्रालय ने पुष्टि की कि म्यूनिख में रूसी दूतावास के एक कर्मचारी को पिछली गर्मियों में अवांछित व्यक्ति घोषित किया गया और उसे देश से जाने के लिए कहा गया। उसने पहले इस निष्कासन की घोषणा नहीं की थी और मामले के बारे में जानकारियां उपलब्ध नहीं करायी।

खबर में जांच से जुड़े अज्ञात सूत्रों के हवाले से बताया है कि इस व्यक्ति को राजनयिक के तौर पर मान्यता दी गयी थी लेकिन वह रूस की एसवीआर विदेशी खुफिया एजेंसी का एजेंट था।

जर्मनी ने हाल में अपने देश में काम कर रहे कई संदिग्ध रूसी जासूसों की पहचान की है। पिछले साल फरवरी में जर्मनी के एक शख्स पर जर्मनी की संसद द्वारा इस्तेमाल की जा रही संपत्तियों पर सूचना रूस की सैन्य खुफिया एजेंसी को कथित तौर पर देने के लिए जासूसी के आरोप लगाए गए थे।

जर्मनी ने अगस्त में बर्लिन में ब्रिटेन के दूतावास में काम करते हुए रूस के लिए जासूसी करने के संदेह पर एक ब्रिटिश नागरिक को गिरफ्तार किया था।

जापान की अंतरिक्ष एजेंसी के साथ मिलकर चंद्रमा की सतह की खोज के लिए वाहन बना रही है टोयोटा

तोक्यो। टोयोटा कंपनी जापान की अंतरिक्ष एजेंसी के साथ मिलकर चंद्रमा की सतह की खोज के लिए एक वाहन पर काम कर रही है। कंपनी के अधिकारियों ने शुक्रवार को बताया कि इसका उद्देश्य, 2040 तक लोगों को चंद्रमा पर रहने में मदद करना है और फिर उसके बाद मंगल पर जाने की योजना है। इस वाहन का नाम टोयोटा की एसयूवी लैंड क्रूजर के नाम पर लूनर क्रूजर रखा गया है और इसका निर्माण जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी के साथ मिलकर किया जा रहा है। इस वाहन को दशक के अंत तक प्रक्षेपित करने की योजना है। टोयोटा मोटर कॉर्पोरेशन की लूनर क्रूजर परियोजना के प्रमुख ताकाओ सातो ने कहा कि जिस प्रकार लोग कार में बैठकर सुरक्षित तरीके से खाना-पीना, काम करना, सोना और बातें कर सकते हैं उसी प्रकार बा अंतरिक्ष में भी किया जा सके, इस परिकल्पना के साथ उक्त वाहन का निर्माण किया जा रहा है।

विश्व में कोरोना संक्रमितों की संख्या 36.99 करोड़ के पार

वाशिंगटन। विश्व में कोरोना वायरस महामारी से अब तक 36.99 करोड़ से अधिक लोग प्रभावित हुए है जबकि इसके संक्रमण से 56.49 लाख से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी हैं। वहीं दुनिया भर में अब तक 9.93 अरब से ज्यादा वैक्सीन की डोज दी जा चुकी है।

अमेरिका की जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के कोरोना वायरस रिसोर्स सेंटर की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक दुनिया भर में कोरोना संक्रमितों की कुल संख्या बढ़कर 3,69,910,181 हो गयी है और मृतकों के आंकड़े बढ़कर 56.49,714 हो गए हैं। इसके अलावा पिछले 28 दिनों में विश्व में कोरोना संक्रमितों के 7.97 लाख से अधिक नए मामले सामने आए है और इस महामारी से दो लाख से ज्यादा लोगों की मौत हो गयी है। दुनिया भर में कोरोना संक्रमण के सबसे अधिक मामलों के साथ अमेरिका शीर्ष पर है, जहां इस महामारी से अभी तक 7.40 करोड़ से ज्यादा लोग प्रभावित हुए हैं और 8,82,294 लोग काल के गाल में समा चुके हैं। भारत इस महामारी के संक्रमण के मामले में दूसरे स्थान पर है, जहां पिछले 24 घंटों में शनिवार सुबह तक कोविड संक्रमण के दो लाख 35 हजार 532 नये मरीज सामने आये हैं। देश के कोरोना सक्रिय मामलों की कुल संख्या 20 लाख चार हजार 333 रह गयी है। यह संक्रमित मामलों का 4.91 प्रतिशत है। दैनिक संक्रमण दर 13.39 प्रतिशत हो गयी है। अभी तक कुल तीन करोड़ 83 लाख 60 हजार 710 लोग कोविड से उबर चुके हैं।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
211019 से प्रकाशित
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम् योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506

पेगासस और एक मिसाइल प्रणाली भारत-इजराइल के बीच 2017 में हुए सौदे के केंद्र बिंदु थे: अमेरिकी मीडिया

न्यूयॉर्क। इजराइली स्पाइवेयर पेगासस और एक मिसाइल प्रणाली भारत-इजराइल के बीच 2017 में हुए लगभग दो अरब डॉलर के हथियार एवं खुफिया उपकरण सौदे के "केंद्रबिंदु" थे। अमेरिका के दैनिक समाचार पत्र ह्यद न्यूयॉर्क टाइम्सह्ल ने अपनी एक खबर में यह दावा किया।

पिछले साल उस समय विवाद खड़ा हो गया था, जब भारत सहित कई देशों में पत्रकारों, मानवाधिकार रक्षकों, नेताओं और अन्य लोगों की जासूसी करने के लिए कुछ सरकारों द्वारा कथित तौर पर एनएसओ समूह के पेगासस सॉफ्टवेयर के उपयोग की बात सामने आई थी। इसके चलते गोपनीयता संबंधी मुद्दों के लेकर चिंताएं पैदा हो गई थीं।

'द न्यूयॉर्क टाइम्स' ने 'द बैटल फॉर द वल्ड्र्स मोस्ट पावरफुल साइबरवेपन' शीर्षक वाली एक खबर में कहा कि इजराइली कंपनी एनएसओ ग्रुप लगभग एक दशक से इस दावे के साथ "अपने निगरानी सॉफ्टवेयर को दुनिया भर में कानून-प्रवर्तन और खुफिया एजेंसियों को बेचह्लह्ल रहा था कि वह जैसा काम कर सकता है, वैसा कोई और नहीं कर सकता।

खबर में जुलाई 2017 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इजराइल यात्रा का भी उल्लेख किया गया। यह किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली इजराइल यात्रा थी।

पद्म भूषण पुरस्कार मिलना सम्मान की बात है : नडेला

न्यूयॉर्क (अमेरिका)। माइक्रोसॉफ्ट के मुख्य कार्यपालन अधिकारी (सीईओ) सत्या नडेला ने बृहस्पतिवार को कहा कि उनके लिए भारत का तीसरा सबसे बड़ा नागरिक पुरस्कार पद्म भूषण प्राप्त करना सम्मान की बात है और वह भारत के लोगों के साथ काम करते रहना चाहते हैं, ताकि उन्हें प्रगति करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में मदद मिल सके। भारत सरकार ने देश के 73वें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर नडेला, गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई और टाटा समूह के अध्यक्ष नटराजन चंद्रशेखरन को पद्म भूषण देने की घोषणा की थी। नडेला ने ट्वीट किया, पद्म भूषण पुरस्कार प्राप्त करना और इतने सारे असाधारण लोगों के साथ पहचाना जाना सम्मान की बात है। मैं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और भारत के लोगों का शुक्रगुजार हूं... भारत के लोगों के साथ काम करते रहने के लिए तत्पर हूं, ताकि अधिक प्रगति के वास्ते प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में उनकी मदद कर पाऊं। हैदराबाद में जन्मे नडेला (54) को फरवरी 2014 में माइक्रोसॉफ्ट का सीईओ बनाया गया था।